इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
समाज कार्य विद्यापीठ

BSW-124
मानव विकास, व्यवहार और परामर्श

खंड

3

सामाजिक कार्यकर्त्ता के लिए मनोविज्ञान के मूलतत्त्व

इकाई 1

समाज कार्य अभ्यास में मनोवैज्ञानिक प्रासंगिता 199

इकाई 2

मानव व्यवहार की मूल मनोवैज्ञानिक अवधरणाएँ 218

इकाई 3

प्रतिरक्षा तन्त्र 236

इकाई 4

सामान्यता और असामान्यता 250

इकाई 5

सामाजिक मनोविज्ञान की मूलभूत अवधरणाएँ 266

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

खंड 3 का परिचय

इस यह बी एस डब्ल्यू–124 का तीसरा खण्ड है। इस खण्ड में आपका मनोविज्ञान की अवधारणा और समाज कार्य व्यवहार में उनका प्रयोग के संबंध में परिचय कराया जाएगा। समाज कार्य में मनोविज्ञान के संबंध में ज्ञान प्राप्त करना बहुत महत्वपूर्ण है। यह वैयक्तिक मानवता और उसके व्यवहार को समझने में सहायता करता है। समाज कार्य का मुख्य उद्देश्य मानव संबंधों में सुधार करना है। बहरहाल , जब समाज कार्यकर्ता अपने सेवार्थी के साथ कार्य करता है, उस समय मनोविज्ञान संबंधी ज्ञान के प्रयोग की मनाई नहीं है। इस ज्ञान का प्रयोग वह अपने व्यावसायिक साथियों, स्टाफ सदस्यों और अन्य लोगों के साथ लाभप्रद संबंध स्थापित करने में कर सकते हैं। परन्तु इसका सबसे अधिक सदुपयोग एक समाज कार्यकर्त्ता अपने आपको समझने में कर सकता है। जब एक समाज कार्यकर्ता स्वयं अपने आपको समझने तथा सेवार्थी के साथ संबंध स्थापित करने में उनकी समस्याओं के समाधान की प्रक्रिया में इसे एक 'साधन' के रूप में प्रयोग करता है, उसी समय वह स्वयं समाज कार्यकर्ता विभिन्न स्थितियों में अपने उद्देश्यों, मनोभावों और प्रतिक्रियाओं को भी समझ जाता है। मनोविज्ञान हमें अपने आपको समझने के लिए एक कुंजी का कार्य करती है, वहीं पर यह हमारे व्यक्तित्व के गुप्त द्वारों को भी खोलने का कार्य करती है। इन अनेक गोपनीय बातों को यद्यपि हम जानते नहीं हैं, फिर भी ये हमारे व्यवहार पर अत्यधिक प्रभाव डालती हैं। यह खण्ड अपने आपको जानने या खोजने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

इसकी पहली इकाई 'समाज कार्य व्यवहार में मनोविज्ञान की प्रासंगिकता' है, जिसमें समाज कार्य व्यवहार में मनोविज्ञान का महत्व और मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं का वर्णन किया है। दूसरी इकाई 'मानव व्यवहार की मूल मनोवैज्ञानिक अवधारणाएँ', हमको महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक अवणारणाओं पर सूचना उपलब्ध कराती है। तीसरी इकाई 'प्रतिरक्षा तन्त्र' नाम से है जो मानव व्यवहार में इसके प्रयोग को स्पष्ट करती है और प्रतिरक्षा तन्त्र के परिणामों से अवगत कराती है। चौथी इकाई 'सामान्यता और असामान्यता' से संबंधित है जो मानव जीवन में असामान्य व्यवहार इसके लक्षण और निदान को समझने में आपकी सहायता करेगी। इसकी पाँचवी और अंतिम इकाई 'सामाजिक मनोविज्ञान की मूलभूत अवधणारणाएँ' है, जिसमें सामाजिक समूहों में व्यक्तिगत व्यवहार के संबंध में चर्चा की है। एक बार जब आप इस खण्ड की विभिन्न इकाइयों का अध्ययन कर लेंगे, आप स्वयं ही मनोविज्ञान के विषय में रुचि लेने लगेंगे और मानव संबंधों और अन्तरा–क्रियाओं में इसकी प्रासंगिकता को समझ जाएंगे।

इकाई 1 समाज कार्य अभ्यास में मनोविज्ञान की प्रासंगिकता

रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 मनोविज्ञान का परिचय

1.3 मनोविज्ञान की परिभाषा

1.4 समाज कार्य व्यवहार में मनोविज्ञान की उपयोगिता

1.5 समाज कार्य और मानव व्यवहार

1.6 सामान्य मनोविज्ञान

1.7 बाल मनोविज्ञान

1.8 विकासात्मक मनोविज्ञान

1.9 नैदानिक मनोविज्ञान

1.10 सारांश

1.11 शब्दावली

1.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.13 संदर्भ

1.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको समाज कार्य व्यवहार में मनोविज्ञान की मूलभूत और परिचयात्मक ज्ञान की प्रासंगिकता जिसमें मनोविज्ञान की परिभाषा, समाज कार्य व्यवहार में मनोविज्ञान की उपयोगिता सम्मिलित है, प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त आप समाज कार्य एवं मानव व्यवहार के विषय में मानकारी प्राप्त करेंगे।

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपः

- मनोविज्ञान के विषय की प्रकृति को समझ सकेंगे;
- मनोविज्ञान के प्रमुख क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे; और
- समाज कार्य कर्ताओं के लिए मनोविज्ञान की आवश्यकता को समझ सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

मनोविज्ञान एवं समाज कार्य दोनों अलग–अलग विषय हैं। जहाँ मनोविज्ञान अपने दृष्टि कोण में प्रबलता से अकादमी है वहीं समाज कार्य प्रबलता से प्रयुक्तोन्मुखी है। यद्यपि दोनों में ऐसी विभिन्नता मौजूद है परन्तु वे एक दूसरे से इतने घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित

हैं कि प्रायः उनके भिन्न अस्तित्व एवं व्यवहार के विषय में विचार करना असंभव प्रतीत होता है। मनोविज्ञान की उत्पत्ति समाज कार्य के काफी समय पूर्व ही हो चुकी थी और इसने समाज कार्य के उपकरणों एवं तकनीकों के विकास हेतु कई मौलिक सिद्धान्तों एवं आवधारणाओं को प्रदान किया। ये दोनों विषय मानव व्यवहार के तत्वों, मानव स्वभाव और आवश्यकताओं, मानव योग्यताओं, व्यवहारों तथा संरचनाओं पर कार्य करते हैं। दोनों ही मानव समस्याएँ हैं, चाहे वे शारीरिक या मानसिक हो, को अपने तरीके से समाधान करने का प्रयास करते है। परन्तु कई स्वरूपों में कमोवेश वे एक से हैं। दोनों विषयों में व्यक्तियों को सहायता करने की विधियों में एक सीमा तक समान उपकरण एवं तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। फिर भी न दोनों व्यवसायोंन्मुखी विषयों के अन्तर्वैषियक संबंधों के विषय में जानना आवश्यक है।

1.2 मनोविज्ञान का परिचय

समाज कार्य की कई धारणाएँ, नियम, सिद्धान्त, विधियाँ, तकनीक एवं उपकरण मनोविज्ञान पर आधारित एवं उससे ली गयी हैं क्योंकि मानव कल्याण एवं विकास समाज कार्य का अंतिम लक्ष्य है। मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो मानव व्यवहारों का अध्ययन करता है और मानव व्यक्तित्व तथा व्यवहार के तरीकों पर प्रभाव डालने वाले विभिन्न तत्वों और कारकों के व्यवसायिक प्रयोगों एवं सिद्धान्तों का नतीजा है। मनोविज्ञान में प्रयोग किए जान वाले सामान्य अवधारणाओं, उपकरणों एवं तकनीकों, जाकि समाज कार्य व्यवहार, समाज कार्य एवं मानव व्यवहार के लिए उपयोगी हैं पर चर्चा करेंगे।

मनोविज्ञान (साइकोलॉजी) शब्द ग्रीक साहित्य से लिया गया है जो कि दो शब्दों अर्थात् 'साइके' एवं ''लोगस'' का युग्म है जिसका अर्थ है 'आत्मा' एवं ''इसका अध्ययन''। इससे यह प्रदर्शित होता है कि प्रारम्भ में मनोविज्ञान को एक ऐसे विषय के रूप में देखा गया जो कि आत्मा का अध्ययन करता है। आत्मा शब्द को अस्पष्ट रूप से प्रयोग किया गया। इसके पश्चात् आत्मा शब्द की जगह मन शब्द का प्रयोग किया गया। समय बीतने के साथ मनोविज्ञान की प्रकृति में काफी परिवर्तन आया, कोरी कल्पना से वैज्ञानिक के रूप में जाना जाता है। व्यवहार का व्यापक अर्थ है, जिसमें सभी जीवित प्राणियों के सभी प्रकार के व्यवहारों को सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार मनोविज्ञान प्रारम्भिक दौर में शुद्ध कल्पना से वैज्ञानिक श्रम एवं विशिष्ट शोध प्रविधियों तक के विषय के रूप में स्थापित होने के विभिन्न अवस्थाओं से गुजरा है। मनोविज्ञान अब व्यवहार के विज्ञान के रूप में समझा जाता है।

मनोविज्ञान के स्कूल

स्कूल	योगदान देने वाले	विषय वस्तु	मौलिक क्षेत्र
1. व्यवहार	जोहन बी.वाटसन	केवल पर्यवेक्षणीय घटनाएँ	पर्यावरण का प्रभाव
(1913– वर्तमान)	इवान पावलोव बी.एफ.स्निकर	बाह्य व्यवहार मानव एवं पशु	उद्दीवन–अनुक्रिया संबंध वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किए जा सकते हैं।

2. मनोविश्लेषणात्मक (1900–वर्तमान)	सिगबण्ड फ्रायड कार्ल युंग अल्फेड एडलर	व्यवहार का अचेतन निर्धारण	प्रभावित अवस्था के अचेतन प्रेरक और अनुभव जो व्यक्तित्व और मानसिक समस्याओं का प्रभावित करते है।
3. मानवतावादी (1950–वर्तमान)	कार्ल रोजर्स अब्राहम मैस्लो	मानव अनुभवों के अद्वितीय पहलू	मानव मुक्त और विवेकशील प्राणी होता है जो व्यक्तिगत विकास में समर्थ होता है और वे पशुओं से भिन्न होते हैं।
4. संज्ञानात्मक (1950–वर्तमान)	ज्याँ प्याजे नार्म चोमस्की हाबर्ट साईमन	विचार मानसिक प्रक्रियाएँ	मानव व्यवहारों को तभी पूर्ण रूप से जब कि उनके सूचना ग्रहण करने, भंडार करने और उसे कार्य करने और उस पर कार्य करने का परीक्षण किया जाए।
5. जीवशास्त्री (1950–वर्तमान)	जेम्स ओल्ड्स रोजर स्पेरी	मानव एवं पशुओं के शरीर पर आधरित	एक प्राणी के प्रकार्यो को शरीर संरचनाओं एवं जैव रसायनिक प्रक्रियाओं को व्यवहार के कारक के रूप में विश्लेषण।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समाज कार्य व्यवहार के लिए मनोविज्ञान कैसे प्रासंगिक है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) 'मनोविज्ञान' के अर्थ को स्पष्ट कीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.3 मनोविज्ञान का परिभाषा

मनोविज्ञान की परिभाषाएँ एवं विकास के साथ परिवर्तित होती रही हैं। मनोविज्ञान का केन्द्र बिन्दु बदलता रहा है और उसके साथ परिभाषाओं में भी परिवर्तन आते रहे हैं। कुछ प्रसिद्ध परिभाषाएँ नीचे दी जा रही हैं:

1) मनोविज्ञान व्यक्तियों का उनके पर्यावरण के संदर्भ में की गई गतिविधियों का विज्ञान है।

2) मनोविज्ञान को एक विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो मानव एवं अन्य पशुओं के व्यवहारों का अध्ययन करता है।

3) जे.बी. वाटसन ने मनोविज्ञान को व्यवहार का निश्चयात्मक विज्ञान के रूप में परिभाषित किया है।

4) मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।

5) मनोविज्ञान जीवन में प्रस्तुत होने वाले कोई भी किसी भी प्रकार की दशाओं के प्रति अनुक्रियाओं पर कार्य करता है। यहाँ अनुक्रिया व्यवहार से तात्पर्य प्राणी द्वारा की गयी प्रक्रियाओं, सामंजस्य गतिविधियों एवं अभिव्यक्तियों से है।

6) जेम्स ड्रेवर ने मनोविज्ञान को निश्चयात्मक विज्ञान के रूप में परिभाषित किया है जो मानव और पशु के व्यवहार का अध्ययन करता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि मनोविज्ञान एक विज्ञान है, यह मानव एवं अन्य पशुओं की गतिविधियों का एक निश्चयात्मक विज्ञान है। यह वातावरण के संबंध में व्यवहार का विज्ञान है। यह मानव प्रकृति का विज्ञान है, यह जीवन में प्रस्तुत होने वाले ङ्केकिसी भी प्रकार की दशाओं के प्रति अप्रक्रियाओं एवं प्राणी की अभिव्यक्ति पर कार्य करता है। मनोविज्ञान चेतन, अवचेतन एवं अचेतन अनुक्रियाओं का अध्ययन एवं व्याख्या करता है।

1.4 समाज कार्य व्यवहार में मनोविज्ञान की उपयोगिता

मनोविज्ञान मानव व्यवहार, संवेगों और प्रक्षेपणों का अध्ययन करता है। यह व्यवहार प्रतिमानों के बनने के स्वाभाविक कारकों का भी अध्ययन करता है। हम किसी के विकास के विषय में मनोविज्ञान द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं। संज्ञानय अधिगम धारण एवं विस्मरण मनोविज्ञान की प्रमुख विषय वस्तुएँ हैं। समाजीकरण की प्रक्रिया का ज्ञान मनोविज्ञान पर निर्भर है। व्यक्ति की प्रतिक्रिया एवं व्यवहार बहुत सीमा तक प्रक्षेपण पर निर्भर होता है जो कि मनोविज्ञानिक घटना है। मनोविज्ञान वंशानुक्रम एवं वातावरण की अन्तःक्रियाओं का

अध्ययन कर हमें शारीरिक एवं मानसिक गुणों एवं योग्यताओं में व्यक्तिगत भिन्नताओं के प्रति जागरूक करता है।

समाज कार्य व्यवहार के दौरान हम मानव व्यवहार के अध्ययन एवं विश्लेषण के लिए मनोविज्ञान की सहायता लेते हैं। जब तक सामाजिक कार्यकर्ता प्रकार्य द्वारा अथवा व्यवहार परिमार्जन द्वारा व्यक्तित्व में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है तो उसे मनोविज्ञान की सहायता लेनी पड़ती है। सामंजस्य से संबंधित समस्याओं के समाधान में मनोविज्ञान सामाजिक कार्यकर्ता की सहायता करता है। समाज कार्य व्यवसाय की वैयक्तिक सेवाकार्य पद्धति बहुत कुछ मनोविज्ञान की विषय वस्तुओं पर निर्भर है। समाज कार्य व्यवसाय की वैयक्तिक सेवाकार्य पद्धति बहुत कुछ मनोविज्ञान की विषय वस्तुओं पर निर्भर है। समाज कार्य व्यवसाय की सामूहिक सेवा कार्य विधि समुह को मजबूती प्रदान करने के लिए और उसको और अच्छा अनाने के लिए बहुत से समाज मनोविज्ञान तत्वों को लेता है। समाज मनोविज्ञान समूह नैतिकता, नेतृत्व गुणों एवं लक्षणों, भीड़ एवं स्रोता समूहों के व्यवहार का अध्ययन करता है जो सामाजिक सामूहिक तथा कुछ सीमा तक सामुदायिक संगठन में उपयोगी होता है।

मनोविज्ञान समाज कार्य व्यवहार के क्षेत्र में काफी सहायता प्रदान करता है जैसे वैयक्तिक और परिवार वैयक्तिक सेवा कार्य (उदाहरण के लिए व्यक्तित्व में परिमार्जन), बच्चों के स्कूल से संबंधित समस्याओं के लिए निदान और उपचार योजनाय व्यक्ति का प्राथमिक और द्वि तीयक समूहों के साथ सामंजस्य मेंय शारीरिक और मानसिक रोगियों का चिकित्सकीय आवश्यकताओं के अनुसार व्यवस्थापन और अन्य के साथ सामंजस्य में, निदान एवं सामूहिक व्यवहारों के परिमार्जन और नेतृत्व गुणों के विकास के ज्ञान के लिए, व्यक्ति के अहम के विश्लेषण और सुरक्षात्मक प्रतिक्रियाओं को समझने में, और व्यक्तियों और समाज के सकारात्मक सामंजस्य को बढ़ाने औ आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परामर्श और निर्देश प्रदान करने में सहायता करता है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) मनोविज्ञान की दो परिभाषाएँ दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) समाज कार्य व्यवहार के लिए मनोविज्ञान की उपयोगिता पर संक्षेप में लिखे।

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 समाज कार्य और मानव व्यवहार

समाज कार्य व्यवहार में लोगों की मनोदैहिक अथवा सामाजिक आर्थिक समस्याओं पर कार्य करने के लिए मानव व्यवहार का ज्ञान आवश्यक है। व्यक्तिगत, समूह अथवा सामुदायिक स्तर पर सेवार्थी की सहायता के लिए सामाजिक कार्यकर्ता के लिए आवश्यक है कि वह व्यवहार प्रतिमानों को मानें। सेवार्थी के सकारात्मक व्यवहार जैसे सहयोग, पहल, मुक्तावार्ता, इच्छा सामाजिक कार्यकर्ता को निदान और उपचार योजना बनाने में सहायता करते हैं। नाकारात्मक व्यवहार जैसे अनिच्छा, असहयोग, बचाव, अलगाव, तथ्य को छिपाना एवं पक्षपात इत्यादि कठिनाइयाँ उत्पन्न करते हैं तथा समाज कार्य व्यवसाय के उचि त्यवहार में अवरोध पैदा करते हैं। वैयक्तिक सेवा कार्य व्यवहार में सामाजिक कार्यकर्ता को अपने सेवार्थी के साथ–साथ उसके माता–पिता भाई–बहन, अन्य पारिवारिक सदस्यों, पड़सियों, मित्रों, सहपाठियों, सहकर्मियों एवं अन्य जो लो भी सेवार्थी पर प्रभाव डालते हैं कि साथ कार्य करना करना पड़ता है। इन सभी के व्यवहार की अन्तःक्रिया के प्रतिमानों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। यद्यपि वैयक्तिक सेवाकर्य में केन्द्र में व्यक्ति होता है परन्तु अन्यों की क्रियाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। व्यक्ति पर्यावरण के दृष्टिकोण से व्यक्ति और उसके वातावरण के रूप में एक पारिस्थितिकी तन्त्र के गणन के रूप में देखता है जोकि व्यक्तियों, सभी प्रणालियों जिसमे व्यक्ति पारस्परिक संबन्ध रखता है, व्यापक पर्यावरण जिसमें व्यक्ति कार्य करता है, एवं अन्य आपसी अर्न्तसम्बन्ध जोकि व्यक्ति एवं उसके उप–प्रणालियों में होते है। (हारे, 2004) पारिस्थितिकी तन्त्र के भीतर, व्यक्ति पर्यावरण से प्रभावित होने तथा पर्यावरण को अपने कार्यों द्वारा प्रभावित भी करते हैं। (जॉनसन एवं यॉनया, 2001; कोनडरॉट, 2002)। सेवार्थी को प्यार और स्नेह की आवश्यकताएँ केवल तभी पूरी हो सकती हैं जब उसके माता–पिता उसके प्रति स्नेही हों। एक अध्यापक कक्षा में तभी अच्छे तरीके से पढ़ा सकता है जब विद्यार्थी सीखने के लिए इच्छुक हों और उनमें धैर्य हो। एक समूह कार्यकर्ता एक समूह के निर्माण और सुगम संचालन के लिए तभी सहायता प्रदान कर सकता है जब इसके सदस्य सहयोगिता, समन्वय और प्रजातांत्रिक ढंग से व्यवहार करें। सामुदायिक संगठन में समुदाय के लोग, समुदाय के नेता, वहाँ के संगठनों के लोग और अन्य लोग जो कि किसी न किसी रूप में समुदाय में निर्देशित दिशा में संगठनात्मक कार्यों को सहायता देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है उन लोगों का व्यवहार, उनके व्यवहार की प्रकृति सामुदायिक कार्यकर्ता के क्रियाओं की गुणवत्ता और मात्रा को निर्धारित करती है। ऐसे व्यवहार जो कि सांस्कृतिक सामाजिक, पक्षपात अथवा धार्मिक भिन्नता को प्रदर्शित करते हैं, व्यावसायिक या आर्थिक पक्षपात, राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता एवं संसाधन वितरण की कमियाँ सामुदायिक कार्य में अवरोध उत्पन्न कर सकती हैं। सामाजिक मनोविज्ञान की समझ समूहों एवं बड़े हद तक समुदायों में हस्तक्षेप के समय मदद करती है।

यद्यपि लोगों के व्यवहार का गहराई से ज्ञान प्राप्त करना कठिन है फिर भी सेवार्थी से संबंधित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को अधिक से अधिक सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि सामाजिक कार्यकर्ता इसको मानने का प्रयास करें।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समाज कार्य मानव व्यवहार से किस प्रकार संबंधित है?

.....

.....

.....

.....

1.6 सामान्य मनोविज्ञान

मनोविज्ञान की वह शाखा जो मानव के मनोवैज्ञानिक पहलुओं का अध्ययन करती है। उसे सामान्य मनोविज्ञान कहा जाता है। सामानय मनोविज्ञान में सामान्यतया वंशानुक्रम और वातावरण, अभिवृद्धि एवं परिपक्वता, व्यवहार के शारीरिक आधार, संवेदन बोध, और ध्यान, अनुभव एवं संवेग धारण और विस्मरण, अधिगम, विचार करना एवं तर्क करना, बुद्धि, मनोवैज्ञानिक एवं व्यक्तित्व, व्यक्तिगत भिन्नता, बौद्धिक शक्ति एवं प्रतिक्रिया समय से संबंधित अवधारणाओं, सिद्धांतों एवं विधियों पर कार्य किया जाता है।

उपर्युक्त अवधारणाओं में से कुछ की व्याख्या नीचे दी गयी है:

विकास एवं वृद्धि प्रमुख अवधारणाओं की चर्चा में हैं। वृद्धि का अर्थ आकार एवं ऊतकों में वृद्धि, कोशिकाओं एवं इंट्रासेलुलर संरचना में वृद्धि। यह संरचनात्मक एवं शारीरिक है तथा इसलिए प्रकृति में मात्रात्मक मानी जाती है। विकास आयामों में प्रगतिशील वृद्धि है जैसे – बच्चे एवं बच्चे के कुछ हिस्से के आकार एवं व्यास में वृद्धि – उदाहरण स्वरूप–वजन, ऊंचाई, सिर परिधि, मध्य ऊपरी बाहें परिधि (एम.यू.ए.सी.) इत्यादि। विकास की प्रकृति गुणात्मक है।

विकास विभिन्न कुशलताओं का प्रगतिशील अधिग्रहण है जैसे सिर समर्थन, रेंगने में, बोलना, सीखना, भावनाओं की अभिव्यक्ति एवं अन्य लोगों के साथ सम्बन्ध इत्यादि विकास के साथ जुड़ा हुआ है यह परिपक्वता एवं सीखना के कार्यों से जाना जाता है। (लीबर्ट ई.अल, 1979)।

विकास इष्टतम कामकाज में परिणाम स्वरूप कार्यों के साथ संरचना के एकीकरण के माध्यम से होता है। इसलिए विकास की प्रकृति गुणात्मक मानी जाती है।

जैविक उत्तराधिकार क्रोमोसाम (गुणसूत्र) में अवस्थित जीन से प्राप्त होता है। कुल 46 गुणसूत्र होते हैं। एक बच्चा अपने माता–पिता प्रत्येक से 23–23 जीन्स प्राप्त करता है।

लेकिन जीन की व्यवस्था एवं योगों की लम्बी श्रृंखला होने के कारण एक ही परिवार के सदस्यों के वंशानुक्रम संरचना में अंतर का कारण वंशानुक्रम होता है। शरीर गठन, बुद्धि एवं योग्यता सामाजिक व्यवहार और व्यक्तित्व के गुणों की अपेक्षा उत्तराधिकार से ज्यादा प्रभावित होती है। यद्यपि उपर्युक्त लक्षणों पर वंशानुक्रम और वातावरण की सापेक्षिक भूमिकाओं पर मनोवैज्ञानिको में अभी भी बहस चल रही है।

परिपक्वता सीखने के साथ आती है जोकि वातावरण के साथ संवाद के एक परिणाम के रूप में होती हैं।

हम ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से अनुछापों को प्राप्त करते हैं जोकि उद्दीपकों द्वारा प्रभावित होते हैं, जो वातावरण में ऊर्जा परिवर्तन करते हैं। हम उद्दीपकों द्वारा प्रभावित होते हैं, जो वातावरण में ऊर्जा परिवर्तन करते हैं। हम उद्दीपकों को ज्ञानेन्द्रियों अथवा ग्राहकों द्वारा प्राप्त करते हैं, जिनका संप्रेषण प्रभावकों (मांसपेशियों एवं ग्रन्थियों) से तंत्रिका तंत्र द्वारा भेजे जाते हैं। केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र का एक महत्वपूर्ण भाग दिमाग है। गति, वाकशक्ति, दृष्टि, स्वाद, गंध एवं शिक्षण जैसे प्रकार्य दिमाग के विशेष हिस्सों में अवस्थित होते हैं। अवगम, धारणा एवं शिक्षण जैसे जटिल प्रकार्य किसी हिस्सा विशेष के द्वारा नहीं बल्कि सम्पूर्ण दिमाग द्वारा किए जाते हैं।

अनुभव संवेदना की जटिलताएँ हैं। अनुभव, उम्र, लिंग एवं प्रशिक्षण जैसे कारकों के अनुसार भिन्न व्यक्तियों में भिन्न होते हैं। संवेग वे अनुभव है जिसमें शक्ति एवं तनाव सम्मिलित होते हैं। संवेग में आपात मूल्य होते हैं जो शरीर को क्रिया के लिए तैयार करते हैं। संवेग में आपात मूल्य होते हैं जो शरीर को क्रिया के लिए तैयार करते हैं। संवेग को नियंत्रित किया जा सकता है जो उसे प्रारम्भ करते हैं।

अभिप्रेरक अन्तर्नाद होते हैं। प्रेरक जन्मजात शारीरिक तनाव से अर्जित जटिल आवश्यकताओं तक हो सकते हैं। भूख, प्यास, सेक्स, आराम एवं निद्रा महत्वपूर्ण शारीरिक आवश्यकताएँ हैं। प्रेरक द्वन्द्व विकसित करते हैं। यदि किसी में ये द्वन्द्व ज्यादा मात्रा में और बार–बार होते रहते है तो ऐसी समस्याओं को दूर करने हेतु परामर्शक की सहायता लेनी चाहिए। शिक्षण निर्देशित शारीरिक और मानसिक गतिविधियों का परिणाम होता है जो कि नए और परिवर्तित अनुक्रिया की ओर ले जाता है। यह प्रयास और गलती की अवधियों से गुजरते हुए अन्ततः उपयुक्त अनुक्रिया चयन की ओर ले जाती है। आवश्यकताओं की संतुष्टि अथवा उनमें कटौती प्रभावशाली अनुक्रिया करती है जिसे पुनर्बलन कहते हैं। मानव शिक्षण में लक्ष्य महत्वपूर्ण होते हैं। प्रभावशाली शिक्षण में सतर्क नियोजन, निर्देशन एवं अंतष्टि विकास द्वारा बढ़ोत्तरी की जा सकती है। आदत व्यवहार की श्रृंखलाएँ होती हैं जो अपने आप बनती है। बहुत सी आदतें गड़बड़ होती हैं, जिनकों बहुत से तकनीकों द्वारा दूर किया जा सकता है। शिक्षण हेतु कुछ अभिप्रेरणाएँ अथवा अन्तर्नाद आवश्यक हैं। जिज्ञासा एवं रुचि शिक्षण को सुगम बनाती है। इनको व्यक्तिगत जीवन के संदर्भ में मापा जा सकता है और दैनिक जीवन में प्रयुक्त किया जाता है। एक अच्छा विद्यार्थी रूपरेखा, नोट, नियम एवं सारणी इत्यादि बनाता है एवं जब थकान अथवा बोरियत करता है तो उस समय नहीं पढ़ता।

धारणा एवं विस्मतरण पूर्व में सीखी गयी एवं भूत से सम्बन्धित होते हैं। स्मृति के पक्षों को चार वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता हैः (1) ध्यान या स्व शिक्षण (2) धारणा अथवा अनुछापों का एकत्रीकरण, (3) पुनःध्यान में लाना, (4) पहचान। समृति के सिद्धान्त इन कारकों को विस्मरण हेतु उत्तरदायी कारक मानते हैंः (1) निष्क्रीय हास (2) पुरानी समृति में नये का हस्तक्षेप।

चिंतन करना सामान्यतः छिपा हुआ अथवा अन्तर्व्यक्त व्यवहार होता है कि जिसमें अधिकांशतः अनुछापों, विचारों एवं अवधारणाओं को प्रयोग किया जाता है। चिंतन केवल सिर से ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण शरीर से सम्बन्धित होता है। सोचने और तर्क करने में दिमाग प्राथमिक होता है, लेकिन चिंतन के दौरान की गयी मांसपेशीय गतिविधियाँ यह संकेत करती हैं कि उस दौरान दिमाग के बहुत से हिस्से सक्रिय होते हैं।

परीक्षणात्मक मनोवैज्ञानी व्यवहार के तथ्यों का मापन करते हैं और परिणाम सांख्यिकीय रूप में दर्शातें हैं। ये सांख्यिकीय अंकों के समूहों का निष्कर्ष निकालती है। मानसिक मापन का महत्वपूर्ण पक्ष विभिन्न गुणों के अन्तर्संबन्धों से सम्बन्धित होता है।

बौद्धिक व्यवहार अमूर्त, यांत्रिक अथवा सामाजिक हो सकता है। अमूर्त व्यवहार प्रतीक के साथ कार्य करने से, यांत्रिक व्यवहार भौतिक, वस्तुओं, तथा मशीनों इत्यादि के साथ कार्य करने से तथा सामाजिक व्यवहार व्यक्तिगत और सामाजिक मामलों में निपुणताओं से सम्बन्धित होते हैं।

व्यक्ति शारीरिक, मानसिक एवं व्यक्तिगत चरित्रों के आधार पर एक दूसरे से भिन्न होते हैं। एक व्यक्ति के गुणों में पर्याप्त भिन्नता होती है। लिंग भिन्नता परिपक्वता की स्थिति में यह दर्शाती है कि पुरुष स्त्रियों की तुलना में मजबूत और भारी होते हैं, लेकिन मानसिक योग्यता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होता। दोनों लिंगों के बीच बौद्धिक योग्यता की तुलना में संवेगों में ज्यादा अंतर पाया जाता है। बौद्धिक योग्यता परीक्षणों के आधार पर मनोविज्ञानी और सामाजिक कार्यकर्ता अपने सेवार्थी को वैध सूचनाएँ प्रदान करते हैं जिससे वे अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करें।

व्यक्तित्व के अन्तर्गत शरीर, आकार–प्रकार, बुद्धि, तर्कशक्ति और सामाजिक व्यवहार की विशेषताएँ प्रमुख कारक माने जाते हैं। व्यक्तित्व के गुण योग्यताओं के समान नहीं होते। व्यक्तित्व व्यक्ति के उनकी परिस्थिति विशेष के प्रति विशिष्ट प्रतिक्रिया के तरीकों को दर्शाती है। व्यक्ति के गुणों की जब नैतिकता अथवा मूल्यों के आधार पर व्याख्या की जाती है तो वह चरित्र बन जाता है। जन्म से परिपक्वता तक व्यक्तित्व का निर्धारण जैविक कारकों की सीमा के अंदर समाज द्वारा कर दिया जाता है। सामान्यता वह व्यवहार है जो कि समाज द्वारा सहन किया जाता है।

प्रतिक्रिया समय वह समय है जो उद्दीपक के प्राणी के द्वारा अनुक्रिया करते समय लगता है, मनोविज्ञान में प्रतिक्रिया समय के मापन हेतु विशेष उपकरण उपलब्ध हैं। वे व्यक्ति के विशेष पेशे के लिए उच्च सीमा की सतर्कता एवं ध्यान की पहचान हेतु उपयोगी होते

1.7 बाल मनोविज्ञान

बाल मनोविज्ञान की वह शाखा है जो एक मानव की बाल्यावस्था का अध्ययन करती है। मनोवैज्ञानिक 12 वर्ष की उम्र के मानव को बालक मानते हैं और 12 वर्ष से 18 वर्ष की उम्र के मानव को किशोर। गर्भधारण से लेकर 18 वर्ष की उम्र तक का विकास बाल किशोरावस्था। प्रथम अवस्था निषेचन से जन्म तक। द्वितीय अवस्था जन्म से 15 दिनों तक, तृतीय अवस्था 15 दिनों से 2 वर्ष तक, चतुर्थ अवस्था 2 वर्षा से 11 वर्षों तक एवं पंचम अन्तिम अवस्था 11 वर्षों तक। बचपन एवं किशोरावस्था के बीच एक परिवर्तन का दौर होता है। जिसे तरूणा अवस्था कहते हैं। फ्रायड़ ने बचपन की प्रत्येक अवस्था को इस प्रकार वर्गीकृत किया है – (1) गर्भपूर्वावस्था (निषेचन से जन्म तक), (2) मौखिक (जन्म से 1 वर्ष), (3) गुदावस्था (1 वर्ष से 3 वर्ष), (4) इडिपस (3 से 6 वर्ष), (5) कामप्रसुप्तावस्था (6 से 11 वर्ष) (6) किशोरावस्था (11 वर्ष से 18 वर्ष)। बाल मनोविज्ञान के अंतगर्त बालक की अवस्थाओं एवं अभिवृद्धि, विकास एवं परिपक्वता, अभिवृद्धि एवं विकास पर पर्यावरणीय प्रभाव, प्राथमिकय द्वितीयक समूहों एवं समाज के लोगों से मनोसामाजिक अन्तःक्रिया का अध्ययन किया जाता है। एक व्यक्ति निर्षचन एवं मृत्यु तक लगातार परिवर्तित होता रहता है। बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक बच्चे के शारीरिक एवं मानसिक संरचनाओं में विकास होता रहता है। विकास एक निरंतर प्रक्रिया है एवं होने वाले परिवर्तन उसके द्वारा सदैव जाने नहीं जाते। बाल्यावस्था में विकास की गति तीव्र होती है। सभी विकासात्मक परिवर्तनों

की प्रकृति एक जैसी नहीं होती। वे विभिन्न प्रकारों से अभिवृद्धि की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। विकास के दौरान परिवर्तनों को चार प्रमुख समूहों में विभाजित किया गया है

1) **आकार में परिवर्तन** – इस प्रकार के परिवर्तन शारीरिक अभिवृद्धि में दिखायी पड़ते हैं लेकिन मानसिक अभिवृद्धि में इनका अवलोकन किया जा सकता है। सामान्य विकास के दौरान– ऊचाई, वजन एवं बच्चे की परिधि में वृद्धि होती है। शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आंतरिक अंगों जैसे हृदय, आंते एवं पेट के आकार में, वृद्धि होती है। बच्चे का शब्द भण्डार, तर्कशक्ति, धारणा, अवगम, एवं सृजनात्मक कल्पना में वृद्धि होती है।

2) **अनुपात में परिवर्तन** – बच्चे के शरीर विकास में केवल आकार में परिवर्तन नहीं होता बल्कि सभी अंगों के अनुपात में परिवर्तन होता है। बच्चे के मानसिक अनुपात को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बच्चे की रुचि अपने आपसे बदलकर अन्य बच्चों में बढ़ती है और किशोरावस्था में विपरीत लिंग की ओर।

3) **पुरानी आकृतियों का लोप** – एक व्यक्ति में तीसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन है शरीर की कुछ पुरानी आकृतियों का लोप होना। जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता है उसके हृदय के पास अवस्थित थाइमस गिल्टी, दिमाग के पास स्थित पीनयिल ग्रंथी; बाल्यावस्था के बाल एवं दूध के दाँत लोप हो जाते हैं। बहुत से मानसिक लक्षण व जैसे गूँ गूँ करना कई प्रकार से बोलना, उत्तेजक क्रियाएँ, पेट एवं घुटने के बल रेंगना, सूंधने एवं स्वाद की तेजी इत्यादि का लोप हो जाता है।

4) **नयी आकृतियों की प्राप्ति** – बहुत सी नई शारीरिक एवं मानसिक आकृतियाँ शिक्षण के द्वारा प्राप्त की जाती है लेकिन उनमें से कुछ परिपक्वता अथवा जन्म के समय पूर्ण रूप से विकसित न हुए स्थानीय लक्षणों के उभरने का परिणाम होता है। शारीरिक आकृतियों में और भी जैसे नये दाँतों का आना, बालों में वृद्धि, प्रजनन से जुड़े लक्षणों का आना आदि भी सम्मिलित है। मानसिक लक्षणों में काम सम्बन्धी जिज्ञासा, कामेच्छा नैतिक मानक, धार्मिक विश्वास, भाषा का ज्ञान एवं तंत्रिका प्रवृत्तियाँ सम्मिलित हैं।

विकास समरूप प्रक्रिया नहीं है। गर्भपूर्वावस्था में सर्वाधिक तीव्र होती है। निषेचन से जन्म तक वजन में वृद्धि 11,000,000 बार जबकि जन्म से परिपक्वता तक यह वृद्धि 22 बार होती है। तीन वर्ष से छः वर्ष तक वृद्धि दर तीव्र रहती है, लेकिन इसमें भी पहले तीन वर्षों में अधिक तीव्र रहती है। विकास एक प्रतिमान के अनुसार हाता है और एक क्रम में चलता है प्रत्येक अवस्था पिछली अवस्था का परिणाम होता है एवं आने वाली अवस्था के लिए आवश्यक होता है चार से सोलह हफ्तों में शरीर अपने बारह गति सम्बन्धी मासंपेशियों पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है। सोलह से अट्ठारह सप्ताह में बच्चा अपने सिर को सहारा देने वाली माँसपेशियों पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है एवं अपने हाथों को घुमा लेता है। तब बालक चीजों के पास पहुँचने लगता है। अट्ठारह सप्ताह से चालीस सप्ताह में बच्चा अपने धड़ एवं हाथों पर नियंत्राण प्राप्त कर लेता है। यह उसका बैठने, वस्तओं को पकडने स्थानान्तरण करने एवं इधर–उधर करने में मदद करता है। चालीस से बावन सप्ताह में वह अपने पैरों, चारों उंगलियों एवं अंगूठे पर नियंत्रण करने लगता है। वह सीधे खड़ा हो सकता है एवं प्रहार कर सकता है एवं तोड़ सकता है। दो वर्षों में वह टहल एवं दौड़ सकता है, वह शब्दों एवं वाक्यों को बोलने लगता है, आंतों एवं मूत्राशय को नियंत्रित करने लगता है, और व्यक्तिगत पहचान एवं व्यक्तिगत अधिकार की प्रारम्भिक समझ विकसित कर लेता है। तीसरे वर्ष में वह वाक्यों को बोलने लगता है एवं विचार के उपकरण के रूप में

क्रियाओं का प्रयोग करता है। वह अपने वातावरण को समझने के प्रति रुझान को दर्शाता है एवं सांस्कृतिक मांगों को पूरा करता है। चौथे वर्ष में वह बहुत प्रश्नों को पूछता है, समानता को समझाता है एवं सामान्यीकरण तथा सिद्धान्तीकरण की प्रवृत्ति को दर्शाता है। वह अपने धर के दैनन्दिन कार्यों में लगभग आत्मनिर्भर हो जाता है। पाँच वर्ष की अवस्था में एक बालक गति नियंत्रण में परिपक्व हो जाता है। वह मिलजुल कर खेलना चाहता है एवं ऐसा कर लेने पर वह समाजीकृत महसूस करता है।

विकास के एक विशेष प्रतिमान के साथ विकास होता है। विकास सामान्य से विशिष्ट की तरफ बढ़ता है। विकास की दर में व्यक्तिगत भिन्नता स्थिर रहती है। शरीर के विभिन्न हिस्सों के विकास की दर भिन्न होती है। विकास में अधिकांश लक्षण सहसम्बन्धी होते हैं। प्रत्येक विकासात्मक अवस्थाओं के लक्षण एवं विशेषताएँ होती हैं। विकास की पूर्वजानकारी प्राप्त की जा सकती है। जिस अवस्था में जो व्यवहार सामान्य माना जाता है, दूसरी अवस्था में वह असामान्य माना जाता है। प्रत्येक व्यक्ति विकास की मुख्य अवस्थाओं से गुजरता है।

ऊपर हमने अपने को शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था (जन्म से छ वर्ष) के विभिन्न लक्षणों एवं विशेषताओं से परिचित किया। अब हम मध्य बाल्यावस्था जो कि छः वर्ष से बारहा वर्ष तक रहती है के लक्षणों को जानेंगे। वे निम्न प्रकार हैं –

i) साधारण क्रीड़ा के लिए शाररिक निपुणता का शिक्षण।

ii) एक चलते–फिरते प्राणी के रूप में अपने विषय में एक अभिवृत्ति का निर्माण।

iii) हम उम्र साथियों के साथ साथी की भावना का शिक्षण।

iv) उपर्युक्त लैगिक भूमिका का शिक्षण।

v) पठन, लिखाई एवं गणना की मूलभूत निपुणता का विकास।

vi) दैनिक जीवन के लिए आवश्यक अवधारणाओं का विकास ।

vii) संवेदना, नैतिकता एवं मुल्यों का विकास।

viii) व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता की प्राप्ति ।

ix) सामाजिक समूहों एवं संस्थाओं के प्रति अभिवृत्तियों का विकास।

किशोरावस्था (11–18) के दौरान बालक अस्थिर व्यवहार करता है। कभी वह एक बालक जैसे तो कभी वह एक बड़े व्यक्ति की तरह बातें करता है। सामाजिक मूल्यों एवं काम स्वतंत्रता के आंतरिक द्वन्द्व से पीडित होता है। अध्ययन बताते हैं कि जीवन की इस अवधि में अन्य विभिन्न अवस्थाओं की विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं। किशोर अपना कार्य स्वतंत्र रूप से करना चाहते हैं और किसी का हस्तक्षेप सहन नहीं करते। किशोर विपरीत लिंग के प्रति आकर्षित होते हैं लेकिन वे इस भावना को छिपाते हैं कि वे विपरीत लिंग के प्रति रुचि रखते हैं। शरीर में महत्वपूर्ण परिवर्तन हैं माँसपेशियों का तीव्र विकास, वजन एवं लम्बाई में वृद्धि, ग्रन्थियों का तीव्र विकास, जननांगों के बालों एवं छाती का आना, लडकियों में माहवारी एवं बालकों में वीर्य इत्यादि। इस अवस्था के अन्त तक बुद्धिकौशल, औसत स्तर पर पहुँच जाता है सहम की स्वीकार प्रक्षेपण योजना विकसित हो जाती है लेकिन निर्णय लेने की क्षमता में कमी रहती है। कुछ किशोरों में विरोध पनपने लगता है वे थके हुए लगते हैं। सांवेगिक तनाव भी इस अवस्था की महत्वपूर्ण समस्या होती है। इस अवस्था की मूलभूत आवश्यकता होती है पूर्ण आहार, 10 घंटे की निद्रा, पहचान एवं प्रोत्साहन।

1.8 विकासात्मक मनोविज्ञान

विकासात्मक मनोविचार में उम्र में परिवर्तन के साथ जो शारीरिक मानसिक, सांवेगिक एवं व्यवहार में परिवर्तन होते हैं उनका अध्ययन एवं व्याख्या की जाती है। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में शारीरिक एवं व्यवहारगत परिवर्तन बहुत तीव्र होते हैं एवं मानसिक एवं सामाजिक लक्षणों एवं योग्यताओं में विकास बाद की अवसी की अपेक्षा जल्द होता है। बहुत से मनोवैज्ञानिक बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत मानव व्यक्तित्व विकास के लिए उत्तरदायी तत्वों का अध्ययन किया जाता है जबकि यदि इसी शिक्षण का प्रयोग जब आत्यावसी के उपरान्त कया जाता है तो उसे विकासात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत रखा जाता है। इस दृष्टिकोण के विपरीत अन्य मनोविज्ञानकों का विचार है कि बान्यावस्था के उपरान्त मानव विकास रूकता नहीं है बल्कि जीवन की प्रत्येक अवस्थाओं में विभिन्न लक्षणों एवं योग्यताओं में हास एवं वद्धि होती रहती है।

आपने पूर्व के बाल मनोविज्ञान की उपइकाई में बाल मनोविज्ञान के मुख्य तत्वों को जाना। यहाँ हम बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था के बीच के विकास के प्रमुख तत्वों को रखेंगे। आपने बाल्यावस्था के अवस्थाओं के विषय में जानकारी प्राप्त की जैसे (1) गर्भपूर्वावस्था (2) मुखकामावस्था (3) गुदाकामावस्था (4) इडिपस (5) कामप्रसुप्तावस्था और (6) किशोरावस्था एवं किशोरावस्था के उपरान्त की अवस्थाएँ। किशोरावस्था एवं वृद्धावस्था के बीच के विस्तार को तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित किया गया है दृ (1) परिपक्वतापूर्व (18 से 25 वर्ष के बीच), (2) परिपक्वता (25 से 40 वर्ष के बीच) एवं (3) वृद्धावस्था (45 वर्ष से ऊपर)।

परिपक्वता – पूर्वअवस्था में व्यक्ति पूर्ण शारीरिक शक्ति एवं सांवेगिक नियंत्रण–विकसित करता है। इस अवस्था की मूल आवश्यकताएँ हैं पूर्ण अहार, नियमित शारीरिक कसरत, पहचान एवं वयस्कों से प्रोत्साहन इत्यादि। परिपक्वता की अवस्था में वह शारीरिक एवं मानसिक योग्यता के सम्बन्ध में स्थिर रहता है लेकिन अपने कार्य, व्यवसाय अथवा सामाजिक प्रतिमानों के लिए आवश्यक कुशलताओं एवं योग्यताओं में निकास एवं अनुकूल का अधिगम करता है एवं इच्छित प्रस्थिति, वस्तु एवं अवसरों की प्राप्ति करता है। इस अवस्था की मूल आवश्यकताएँ हैं शारीरिक शक्ति की सतत्ता के लिए नियमित कसरत, पति अथवा पत्नी एवं पारिवारिक सदस्यों का प्यार स्नेह एवं देखभाल। वृद्धावस्था में शारीरिक एवं मानसिक निर्माण में ह्रास होता है। शारीरिक शक्ति एवं अंगों में शिथिलता एवं धीरे–धीरे विभिन्न निर्योग्यताएँ विकसित होती हैं।

वाक्शक्ति, दृष्टि एवं पाचनतंत्र धीरे–धीरे कमजोर होने लगते हैं। विस्मृति एवं शारीरिक एवं मानसिक गतिविधियों में असम्बद्धता परिलक्षित होने लगती है। भावी जीवन के सम्बन्ध में चिंता एवं दृश्चिंता में वृद्धि होती है। वृद्धावस्था में आय एवं स्वास्थ्य के प्रति असुरक्षा की भावना आम है। इस अवधि के प्रारम्भ में महिलाओं में रजोनिवृत्ति हो जाती है। वृद्ध ावस्था में व्यक्ति को उपयुक्त अध्ययन सामग्री, दृष्टि के उपकरण, क्लबों एवं वचार–विमर्श के अवसर आर्थिक एवं सामाजिक सुरक्षा, ऊर्जादायक एवं पोषण वाले भोजन, चिकित्सकीय सुविधाएँ आदि आवश्यक हैं। इस अन्तिम अवस्था की प्रमुख कठिनाइयों में से हैं, अपने बच्चे की मृत्यु, पति अथवा पत्नी की मुत्यु, निकट पारिवारिक सम्बन्धी में किसी को लम्बी एवं कठिन बीमारी एवं अत्यन्त निर्धनता।

1.9 नैदानिक मनोविज्ञान

आधुनिक समाज की जटिलताओं ने समाज के सदस्यों को प्रभावित कर रखा है। हममें से अधिकांशतः के लिए सामाजिक व्यवस्था से सामंजस्य की समस्याएँ हो गयी हैं। हमें हमारे सामाजिक तत्वों से सामंजस्य बैठाने के लिए मदद की आवश्यकता पड़ती है। नैदानिक

मनोविज्ञान की शाखा हमारे बेहतर सामंजस्य में सहायक होती है। मनोविज्ञान उन पहलुओं का भी अध्ययन करता है जिसका सम्बन्ध विचलन से होता है। व यह स्वस्थ सामुदायिक जीवन में बढ़ोत्तरी एवं बेहतरी एवं मानसिक समस्याओं से सम्बन्धित है। नैदानिक मनोविज्ञान उन समस्याओं जैसे नियोक्ता एवं सेवक के बीच असामंजस्य, पीढ़ियों के बीच दूरी एवं समूह के साथ खराब व्यक्तिगत सम्बन्ध जैसी समस्याओं के साथ भी जुड़ा है। कई बार नैदानिक मनोविज्ञान का क्षेत्र परामर्श मनोविज्ञान, मनोचिकित्सा एवं समाज कार्य के क्षेत्र में अतिक्रमण कर लेता है।

नैदानिक मनोविज्ञान की प्रकति को स्पष्ट करने के लिए हमें नैदानिक मनोवैज्ञानिक की क्रियाओं को समझना पड़ेगा। परामर्शक, मनोचिकत्सक एवं समाज कार्यकर्ता लोगों के सामंजस्य के लिए मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं का प्रयोग करते हैं। यह उनकों समस्या के केन्द्र के विशिष्टतों आधार पर नैदानिक मनोविज्ञान से विभेदित करता है। व्यावसायिक परामर्श का सम्बन्ध व्यक्ति का उसके कार्य के साथ सामंजस्य, इसी प्रकार शैक्षिक परामर्श का सम्बन्ध व्यक्ति का उसके शैक्षणिक व्यवस्था के साथ सामंजस्य का है। मनोचिकित्सा एवं नैदानिक मनोविज्ञान में ज्यादा सम्बन्ध है। दोनों ही मानसिक बीमारियों एवं व्यक्तित्व की समस्याओं के बृहद विशेषताओं पर कार्य करते हैं व व्यवहारकर्ता के प्रशिक्षण एवं समस्या का समाधान करने के उपागम के संदर्भ में भिन्न होते हैं। एक नैदानिक मनोवैज्ञानिक पूर्व अनुभवों एवं अधिगम के परीक्षण द्वारा मानसिक समस्या को दूर करने के उपागम में प्रशिक्षित होता है जबकि मनोचिकित्सक ऐसी समस्याओं को बीमारी के रूप में समझने एवं उसका उपचार करने के उपागम में प्रशिक्षित होता है। फिर भी कई मामलों में मनोचिकित्सक एवं नैदानिक मनोवैज्ञानिक एवं नैदानिक मनोवैज्ञानिक समस्या के समाधान हेतु समान उपागमों का प्रयोग करते हैं। नैदानिक मनोवैज्ञानिक सामान्यतः व्यक्तिगत केसों के साथ कार्य करता है। वे परिवार, द्वैतीयक समूहों एवं समुदायों तक कार्य का विस्तार करते हैं जिसको समाज कार्य अभ्यास में व्यक्ति का उनके पर्यावरण के साथ सामंजस्य पर प्रभाव होता है। वह व्यक्ति के जीवन मनोविज्ञान की प्रासंगिकता की दिशाओं एवं व्यवहारों का अवलोकन करता है उसके द्वारा व्यक्ति की सहायता करता है। नैदानिक मनोविज्ञान एवं चिकित्सा के व्यवहार में आपस में महत्वपूर्ण सम्बन्ध है कि नैदानिक चिकित्सक चिकित्सकीय तंत्र में उन्हें मरीज कहते हैं जबकि अचिकित्सकीय तंत्र में सेवार्थी कहते हैं। काफी संख्या में नैदानिक मनोवैज्ञानिक अन्य चिकित्सकों, मनोचिकित्सकों के सहयोग से चिकित्सकीय व्यवस्था में कार्य करते हैं। वैदानिक मनोवैज्ञानिक की भूमिका केवल मानसिक बीमार मरीजों से सम्बन्धित ही नहीं है। वे उन लोगों के साथ भी कार्य करते हैं जो गंभीर असामंजस्य के शिकार नहीं हैं। वे मानसिक स्वास्थ्य के साथ व्यवहार के विचलन में भी रुचि लेते हैं। जब नैदानिक मनोचिकित्सक मानसिक रोगियों के साथ कार्य करता है तो वह अपसामान्य मनोविज्ञान का प्रयोग करता है। लेकिन वे स्कूलों, उद्योगों एवं समुदायों के साथ कार्य करते हैं एवं विशेष रूप से सामान्य प्रकति के मानवीय समस्याओं के साथ भी कार्य करते हैं।

सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम मानसिक तत्वों का निरोध एवं साथ ही साथ उपचार के लिए मा हैं। नैदानिक मनोवैज्ञानिक मानसिक रोगों की ओर ले जाने वाले कारकों की पहचान करते हैं उनके निरोध के लिए उपाय करते हैं। नैदानिक मनोचिकित्सक के लिए मनोविकृतियों का ज्ञान आवश्यक है हालाकि नैदानिक मनोविज्ञान एवं परामर्श मनोविज्ञान में अधिआरोपण हैं लेकिन उनके दृष्टिकोण में अन्तर है। परामर्श मूलतः व्यक्ति के चयन एवं निर्णय से सम्बन्धित है जबकि नैदानिक मनोविज्ञान–व्यक्ति के विशेष और कठिन समस्याओं से सम्बन्धित है।

नैदानिक मनोविज्ञान एवं समाज कार्य में घनिष्ठ सम्बन्ध हैं क्योंकि दोनों ही व्यक्ति को उसकी सामंजस्य, विचलन एवं मनोशारीरिक समस्याओं के समाधान में सहायता करते हैं।

समाज कार्य में हम व्यक्ति के अहम के सशक्तिकरण, अन्तर्दृष्टि विकास, अवगम एवं निर्णय इत्यादि में मदद करते हैं। नैदानिक मनोविज्ञान में भी हम इसी पहलुओं पर कार्य करते हैं परन्तु उपागम थोड़ा गहरा, वृहत एवं मनोविश्लेषणात्मक होता है। व्यक्ति से व्यक्ति में, व्यक्ति से समूह एवं व्यक्ति से समुदाय की सामंजस्य की समस्याओं पर दोनों व्यवस्थाओं में कार्य किया जाता है। नैदानिक मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यक्तित्व के गुणों एवं सामाजिक कारकों के प्रति उसके अनुक्रियाओं पर ध्यान दिया जाता है। जबकि समाज कार्य में सामाजिक कारकों एवं त्तवों पर अधिक ध्यान दिया जाता है। मानसिक विकारों के गम्भीर मामलों में मनोचिकित्सक की सहायता ली जाती है जिसे नैदानिक मनोवैज्ञानिक सहायता करता है। समाज कार्य ऐसे मामलों में केस इतिहास प्रतिवेदन के द्वारा मनोचिकित्सक एवं नैदानिक मनोवैज्ञानिक को केस संदर्भित कर देता है।

बोध प्रश्न IV

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समाज कार्य मनोविज्ञान के कुछ महत्वपूर्ण पक्षों की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) किशोरावस्था के पश्चात के जीवन की विकासात्मक अवस्थाओं के कम से कम एक पक्ष का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) बाल्यावस्था के दौरान एक मानव की प्रमुख विशेषताओं की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4) नैदानिक मनोविज्ञान प्रकृति पर कुछ पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

1.10 सारांश

इस इकाई में हमने आपको समाज कार्य व्यवहार के लिए मनोविज्ञान की उपयोगिता पर परिचयात्मक ज्ञान उपलब्ध कराया है। इसमें आपको सामान्य मनोविज्ञान एवं मानव व्यवहार के साथ–साथ विकासात्मक मनोविज्ञान, बाल मनोविज्ञान एवं नैदानिक मनोविज्ञान का मूलभूत ज्ञान का परिचय दिया है।

सामान्य मनोविज्ञान एक सामान्य मानव के मनोवैज्ञानिक पक्षों का अध्ययन करता है। यह वंशानुक्रम एवं पर्यावरण से सम्बन्धित, शारीरिक एवं मानसिक अभिवृद्धि एवं विकास एवं सामान्य मानव के व्यक्तित्व के लक्षणों से सम्बन्धित अवधारणाओं एवं विधियों का अध्ययन करता है।

बाल मनोविज्ञान एक मानव के निषेचन से 18 वर्ष की उम्र के मनोशारीरिक विकास का अध्ययन करता है। बाल्यावस्था को छः अवस्थाओं अथवा जीवन की अवधियों में विभाजित किया गया है (गर्भ पूर्वाज्ञथान (निषेचन एवं जन्म तक) (2) मौखिक (शून्य से एक वर्ष) (3) एक से तीन वर्ष) (4) इडिपस (तीन से छः वर्ष) (5) कामप्रसुप्तावस्था (छः से बारह वर्ष) एवं (6) किशोरावस्था।

विकासात्मक मनोविज्ञान किशोरावस्था के पश्चात् जीवन के अन्त तक की अवधियों के मानव विशेषताओं का अध्ययन करता है। जिसे तीन मुख्य अवधियों में विभाजित किया गया है (1) परिपक्वता पूर्व अवस्था (18 से 25 वर्ष) (2) परिपक्वता (25 से 45 वर्ष) एवं (3) वृद्धावस्था (45 से जीवन के अन्त तक)।

नैदानिक मनोविज्ञान मानव के सामंजस्य की समस्याओं एवं उन पक्षों जो कि विचलन स्वस्थ सामुदायिक जीवन एवं मानसिक रोगों के निरोध से सम्बन्धित है का अध्ययन करता है।

आप अवलोकन कर सकते हैं कि समाज कार्य की मूल कल्पनाएँ, अवधारणाएँ, सिद्धान्त, विधियाँ, तकनीक एवं उपकरण मनोविज्ञान है। मनोविज्ञान को मानव व्यवहार का ध्यानात्मक विज्ञान माना गया है। मानव व्यवहार के प्रतिमान सेवार्थी एवं कार्यकर्ता की अन्तःक्रिया को प्रभावित करते हैं और मनोविज्ञान के प्रक्रियाबद्ध चरण विधियाँअन्तक्रिया प्रक्रिया में सहायक होते हैं। मनोविज्ञान के मौलिक ज्ञान जो कि इस इकाई में दिए गए हैं आपको समाज कार्य व्यवहारकर्ता के रूप में आपकी सहायता करेंगे। यह ज्ञान समाज कार्य व्यवसाय के लिए अनिवार्य है क्योंकि यह आपको व्यक्ति के व्यवहारों को समझने की योग्यता में वृद्धि करेंगे और एक व्यक्ति को उसकी जीवन की समस्याओं के समाधान करने के लिए आवश्यक अवधारणाओं एवं उपकरणों को प्रदान करेंगे।

1.11 शब्दावली

मस्तिष्क : केन्द्रीय तंत्रिकातंत्र का वह हिस्सा जो खोपड़ी में अवस्थित है।

केस अध्ययन : एक व्यक्ति का विस्तृत विवारण, जो कि उसके इतिहास की जानकारी देता है एवं व्यक्ति के व्यवहार को समझने में मदद करता है।

सेवार्थी केन्द्रित : 'कार्ल रोजर्स' द्वारा विकसित चिकित्सा का वह दृष्टिकोण चिकित्सा है जिसमें वह व्यक्ति जिसे उपचार की आवश्यकता है, उपचार की प्रक्रिया को निर्देशित करता है न कि चिकित्सक, जो बाद में व्यक्ति केन्द्रित चिकित्सा कहलायी।

चेतन : फ्रायड के सिद्धान्त में मन का वह पक्ष जिसमें वह सोच एवं भावनाएँ होती हैं जो तात्कालिक दी गयी परिस्थितियों से सम्बन्धित होती हैं।

सहसम्बन्ध : दो चरों के बीच अवलोकन किया गया सम्बन्धों का प्रतिमान।

अनुप्रस्थ परिच्छेद : एक शोध प्ररचना जो कि ऐसे समूह प्रतिनिधित्व पर आधारित होती है जो विशेष लक्षणों में भिन्न होते हैं, जब लक्षण उम्र होता है। यह प्ररचना विकास तुलना बनाने में मदद करती है।

विकासात्मक : वह अध्ययन की प्रक्रिया जो अभिवृद्धि एवं व्यवहार के मनोविज्ञान विस्तार पर बल देता है।

उद्विकास : उन लेखों का सिद्धान्त जो कि प्राणी के विकास की विभिन्नता होता है। डार्विन का प्राकृतिक चयन का सिद्धान्त है कि वे भिन्नताएँ जो अनुकूलन में वृद्धि करती है एवं उत्तरजीविता एवं प्रजनन में वृद्धि करती है जो कि प्रक्षेपित की जाती है।

क्षेत्रीय प्रयोग : प्राकृतिक वातावरण में किया गया प्रयोग, सामान्यता सहभागियों की स्पष्ट जानकारी के बिना किया जो कि प्रयोगशाला में किए गए प्रयोग से भिन्न होता है।

समूह मनोचिकित्सा : उपचार का वह तरीका जिसमें मरीज एक दूसरे से मिलते हैं, सीखने के अनुभव की रूपरेखा में दो समस्याओं का अनुवाद करता हैं जिससे उनका अन्तवैर्यक्तिक विकास व्यथ्कत करने, व्यक्तिगत एवं सामाजिक परिवर्तन का विकास होता है।

वंशानुक्रम : एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होने वाले जैविकीय गुण।

अंतःसाक्षात्कार : तथ्य एकत्र करने की वह विधि जिसमें व्यक्ति अपने चेतन मन का विश्लेषण करता है।

मनोविज्ञान : विज्ञान अथवा व्यवहार एवं अनुभवा का वैज्ञानिक अध्ययन।

अचेतन : मन का वह भाग जो कि प्रयास द्वारा चेतन मन द्वारा सीधे ज्ञात नहीं किया जा सकता।

1.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

शर्मा आर.एन. एवं शर्मा आर., *बाल मनोविज्ञान*, 2000, अटलांटिक प्रकाशक एवं वितरक नई दिल्ली।

पालिवाल एस. *समाज मनोविज्ञान*, 2002, आर. बी.एस.ए. प्रकाशक, जयपुर

गैरेट एच. ई., *अपसामान्य मनोविज्ञान एवं आधुनिक जीवन*, 1992, स्काटफोरमैन एण्ड कम्पनी, यू.एस.ए.।

हरलाक ई.बी., *बाल विकास*, 1956, बुक कम्पनी इंक।

1.13 संदर्भ

वुडवर्थ आर.एस.एवं स्कोलबर्ग इत्यादि, *एक्सपेरीमैटल साइकोलाजी*, रेनाहास्ट एण्ड विन्सटन, न्यूयार्क, 1954

हिलगार्ड इ.आर. एवं एटर्किसन आर आई., *इन्ट्रोडक्सन टू साइकोलाजी*, एच.बी. एण्ड वर्ल्ड इंक, न्यूयार्क, 1975

बोरिंग इ.जी.एवं अन्य, *फाउन्डेशन ऑफ साइकोलाजी*, एशिया पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, 1960

स्निकर बी.एफ., *साइंस आफ ह्यूमन बिहेवियर*, मैकमिलन, न्यूयार्क, 1953

मैकडुगल डब्ल्यू., *आउटलाइन आफ साइकोलाजी*, 1949।

1.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

समाज कार्य अभ्यास में मनोविज्ञान की प्रासंगिकता

बोध प्रश्न I

1) समाज कार्य की बहुत सी मूल कल्पनाएँ, अवधारणाएँ, सिद्धान्त, विधियाँ तकनीक एवं उपकरण मनोविज्ञान पर आधारित तथा उससे ली गयी हैं। मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो मानव व्यवहारों एवं व्यक्तित्व और पर्यावरण के कारकों का अध्यनन करता है। जो मानव के अन्तःक्रिया प्रतिमान और व्यवहार को प्रभावित करता है इस प्रकार समाज कार्य व्यवसाय को मदद करता है कि अपनी सहायता प्रक्रिया को इस प्रकार निर्मित करे जिससे समस्या समाधान के लिए अच्छी एवं उपयुक्त हो सके।

2) मनोविज्ञान शब्द ग्रीक सहित्य से लिया गया है जो कि दो शब्दों का युग्म साइके एवं लोगोस जिसका मतलब है आत्म एवं अध्ययन। प्रारम्भ में मनोविज्ञान आत्मा या प्रेत के अध्ययन से सम्बन्धित था।

बोध प्रश्न II

1) i) मनोविज्ञान को मानव एव अन्य पशुओं के व्यवहारों के अध्ययन का विज्ञान के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। —हिगार्ड ई.आर.

   ii) मनोविज्ञान व्यवहार का सकारात्मक विज्ञान है। —वाट्सन जे.बी.

2) समाज कार्य व्यवहार के दौरान सेवार्थी के व्यक्तित्व के गुणों एवं मानव व्यवहार के तरीकों का विश्लेषण करने और समझने हेतु मनोविज्ञान की मदद लेते हैं। सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य मनोवैज्ञानिक कल्पनाओं एवं अवधारणाओं पर अत्याधिक निर्भर है। सामाजिक सामूहिक सेवा कार्य समूह की मजबूती एवं बेहतरी के लिए व्यवहार हेतु बहुत से सामाजिक मनोवैज्ञानिक तत्वों को ग्रहण करता है। सामाजिक मनोविज्ञान समूह मनोबल, नेतृत्वगुणों एवं लक्षणे, भीड़ एवं नेता के व्यवहारों का अध्ययन करता है जो कि सामाजिक सामूहिक सेवा कार्य तरीकों का विश्लेषण करने एवं समझने के लिए

मनोविज्ञान की मदद लेते है। सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य मनोवैज्ञानिक कल्पनाओं एवं अवधारणाओं पर अत्यधिक निभीर है। सामाजिक सामूहिक सेवा कार्य समूह की मजबूती एवं बेहतरी के लिए व्यवहार के लिए बहत से सामाजिक मनोवैज्ञानिक तत्वों को ग्रहण करता है। सामाजिक मनोविज्ञान समूह मनोबल, नेतृत्वगुणों और लक्षणों, भीड़ एवं स्रोता के व्यवहारों का अध्ययन करता है जो कि सामाजिक सामूहिक सेवा कार्य एवं कुछ सीमा तक सामूदायिक संगठन में उपयोगी होता है।

बोध प्रश्न III

1) समाज कार्यकर्ता को व्यक्ति, समूह अथवा समुदाय की सहायता करने एवं उनकी समस्याओं के समाधान हेतु सेवार्थी समूह के व्यवहार के प्रतिमानों का ज्ञान आवश्यक है। सेवार्थी के सकारात्मक व्यवहारों द्वारा समाज कार्यकर्ता को निदान एवं उपचार योजना बनाने में सहायता प्राप्त होती है। नकारात्मक व्यवहार समाज कार्य व्यवहार में अवरोध उत्पन्न करते हैं।

बोध प्रश्न IV

1) सामान्य मनोविज्ञान–सामान्य मानव के मनोवैज्ञानिक पक्षों का अध्ययन करता है। सामान्य मनोविज्ञान में हम पर्यावरण एवं वंशानुक्रम, अभिवृद्धि एवं परिपक्वता, व्यवहार के शारीरिक आधारों, मनोशारीरिक विकास, संज्ञान एवं गति तंत्र, संवेग, शिक्षण, ध ारण तर्कशक्ति, बौद्धिकता, मापन अभिवृत्तियाँ, मनोसामाजिक पर्यावरण एवं प्रतिक्रिया आदि से सम्बन्धित अवधारणाओं, सिद्धान्तों एवं विधियों का अध्ययन करते हैं।

2) परिपक्वतापूर्ण अवस्था में व्यक्ति अपने पूर्ण शारीरिक शक्ति एवं संवेगिक नियंत्रण को विकसित करता है। परिपक्व अवस्था में शारिरिक एवं मानसिक योग्यताओं के सम्बन्ध में कुछ स्थिर होता है लेकिन अपने व्यवसाय से सम्बन्धित कुशलता एवं ज्ञान का अधिगम, अनुकूलन एवं विकास करता है एवं इच्छित प्रस्थिति, वस्तु एवं अवसरों को प्राप्त करता है। वृद्धावस्था में शारीरिक एवं मानसिक स्थिति में ह्रास होने लगता है। शारीरिक अंग धीरे–धीरे कमजोर होने लगते है एवं सामान्य रूप से कार्य करने में अक्षम होने लगते हैं इस अवस्था के प्रारम्भ में महिलाओं की रजोनिवृत्ति हो जाती है।

3) जीवन की इस अवस्था में आकार, वजन एवं प्रकार में तीव्र परिवर्तन होते हैं शरीर की बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आंतरिक अंगों एवं संरचनाओं जैसे हृदय, यकृत, वृक्क आँते, मस्तिष्क इत्यादि में विकास होता है। शब्द भण्डार, तर्कशक्ति अवगम धारण, कल्पना एवं क्रियाएँ परिपक्व व्यक्तित्व की प्राप्ति के लिए बढ़ते हैं। बालक शिक्षण से बहुत कुछ ग्रहण करता है एवं समाज स्वीकृत प्रतिमानों एवं व्यवहारों की तरफ बढ़ता है। मानसिक लक्षणों के अन्तर्गत काम सम्बन्धी जिज्ञासा, नैतिक, मानक, धार्मिक विश्वास, भाषा एवं तंत्रिकातापी प्रवृत्तियाँ आती हैं। चार सप्ताह से चालीस सप्ताह के अन्दर बालक अपनी गति की मांसपेशियों पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है एवं सिर एवं बाहों को घुमाने वाली पेशियों को नियंत्रित कर लेता है। वह अपने धड़ एवं हाथों पर भी नियंत्रण प्राप्त कर लेता है, जिससे वह बैठने, पकड़ने, चीजों को घुमाने–फिराने उठाने के योग्य हो जाता है, वह अपने पैरों पर नियंत्रण कर खड़ा हो सकता है। अपनी आँतों एवं मूत्र संस्थान पर नियंत्रण में परिपक्व हो जाता है। व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवश्यकताओं की तरफ शिक्षण में वृद्धि होती है। इस अवधि में किशोर विपरीत लिंग की ओर आकर्षित होते हैं। लड़कियों में माहवारी एवं लड़कों में वीर्य बनना इस विकासात्मक अवधि की प्राकृतिक घटनाएँ हैं।

4) नैदानिक मनोविज्ञान वातावरण के साथ बेहतर सामंजस्य में सहायक होता है। नैदानिक मनोविज्ञान के अन्तगर्त विचलन के पक्षों, स्वस्थ सामुदायिक जीवन एवं मानसिक समस्याओं के निरोध पर भी कार्य होता है। जहाँ मनोचिकित्सा में दिमाग के अंगों, तंत्रिकातंत्र एवं चिकित्सकीय चीजों पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है, नैदानिक मनोविज्ञान वंशानुक्रम के लक्षणों, पर्यावरणीय कारकों, व्यवहारों के तरीकों एवं परामर्श से सम्बन्धित होता है। समाज कार्यकर्ताओं का सम्बन्ध क्षमतावृद्धि एवं परामर्श से सम्बन्धित होता है। समाज कार्यकर्ताओं का सम्बन्ध क्षमतावृद्धि करने वाली तकनीकों जैसे परामर्श अहम सम्बल एवं अन्तर्दृष्टि विकास, पर्यावरण परिमार्जन, जागरूकता निर्माण एवं सेदर्भ सेवाओं से होता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 2 मानव व्यवहार की मूल मनोवैज्ञानिक अवधारणाएँ

रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 अभिवृत्ति और मूल्य

2.3 पूर्वागृह

2.4 शिक्षण

2.5 स्मृति

2.6 अवबोधन

2.7 रूढिबद्ध

2.8 अभिप्रेरणा

2.9 सारांश

2.10 शब्दावली

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में आपका मानव व्यवहार की मूल मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं से सामान्यतः परिचय कराया जायेगा। इसमें निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं को बताया गया है। इस इकाई आ अध्ययन करने के बाद आपः

- अभिवृत्तियाँ;
- मूल्य;
- पूर्वाग्रह;
- अभिवृत्ति परिवर्तन की प्रकृति और प्रभाव
- सीखने की अवधारणा;
- सीखने के प्रकार;
- सीखने की प्रक्रिया में प्रेरक एवं बाधक कारक;
- स्मृति के प्रकार;
- स्मृति का मापन;
- अनुभूति की अवधराणा;
- सामाजिक अनुभूति;

- सामाजिक रूढ़िवाद;
- अभिप्रेरणा को समझ सकेंगे; और
- प्रतिरोध की पहचान कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

प्रायः यह सभी जानते हैं कि समाज व्यक्तियों से बनता है। मनोवैज्ञानिकों ने मनोवैज्ञानिक घटक और मानव व्यवहार पर उनके प्रभावों को अध्ययन किया है। यहाँ हम उनके कुछ विशिष्ट मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं का उल्लेख कर रहे हैं। जो मानव व्यवहार के अध्ययन से सम्बन्धित हैं।

किसी वस्तु और स्थिति के अनुसार उसका जवाब देना व्यक्ति की मनोवृत्ति होती है। व्यक्ति के लिए मनोवांछित कोई वस्तु मूल्वान होती है। पूर्वाग्रह भी एक तरह की मनोवृत्ति होती है। पूर्वाग्रह एक व्यक्ति को पहले से ही समूह अथवा उसके सदस्यों के प्रति उपयुक्त अथवा अनुपयुक्त तरीके से सोचने, समझने अनुभव व कार्य करने की स्थिति प्रदान कर देता है।

सीखना एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम अपने प्रतिउत्तर नए व्यवहार के प्रति संगठित करते हैं। सीखना चेतना और उत्तेजना के बीच साहचर्य बनाने का कार्य करती है। सीखने को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है ''सीखना एक स्थाई परिवर्तन है जो व्यवहार और अनुभव से आता है'' याददाश्त दो प्रकार की होती है। जब हम किसी नाम या तारीख को याद करते हैं। जो उसे ''शाब्दिक या मौखिक याद्दाश्त'' कहते हैं और जब हम किसी प्रकार चालक की कई वर्षों के अन्तराल के बाद चलाने की तकनीक को याद करते हैं तो उसे पेशीय या प्रेरक याद्दायत कहते हैं। प्रेरक या चालक याद्दाश्त की अपेक्षा शाब्दिक या मौखिक यादाश्त बुद्धि पर अधिक जोर देकर उसका उपयोग करती है। इस याद्दाश्त के चार स्वरूप होते हैं : (1) स्थिरीकरण या अभिग्रहण (2) स्तरण (3) पुनःस्मरण (4) मान्यता। प्रत्यक्षज्ञान वह व्यवस्थिति प्रक्रिया है जिससे हम वस्तुओं की सही पहचान कर लेते हैं जैसे वृक्ष, आदमी, मकान आदि। दूसरों के संदर्भ में सामाजिक ज्ञान हमें मूल रूप में उनसे प्राप्त सूचनाओं के द्वारा प्राप्त होता है। रूढ़िगत व्यवहार अक्सर मनोवृत्ति का परिणाम होता है जिसे परिभाषित किया जा सकता है कि – "यह समूह के उदस्यों का एक लिखित गरिमापूर्ण सरलीकृत विश्वास या विचार है।

प्रेरणा वह अन्तरिक मनोवैज्ञानिक स्थिति हैं जो क्रियाशीलता को बनाए रखने की प्रवृत्ति की तरफ पहल करती है।

अब हम इस अध्याय में इनमें से कुछ मुख्य मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं की संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

2.2 अभिवृत्ति और मूल्य

प्रकृति या स्वरूप

अभिवृत्ति वह कल्पनिक संरचना है जो किसी व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती ह। वह किसी पक्ष एवं स्थिति को नियंत्रित करती है जो उस मनोवृत्ति से सम्बन्धित होती है। मनोवृत्ति के तीन भाग होते हैं।

1) भावात्मक आयाम (मनोवृत्ति मूलक पक्ष को व्यक्ति कितना अधिक पसन्द अथवा नापसन्द करता है)।

2) ज्ञानात्मक आयाम (सोचना, यादाश्त, निर्णय आदि)। किसी अभिवृत्तिजन्य पक्ष के बारे में व्यक्ति कैसा विश्वास करता है)।

3) व्यवहार सम्बन्धी आयाम (अभिवृत्ति मूलक पक्ष के साथ व्यक्ति कैसा कार्य करता है) किसी चीज के प्रति हमारी पसन्द अथवा नापसन्द बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है कि उसके प्रति हमारा व्यवहार कैसा है। जो वस्तु हमें पसन्द आती है उसकी तरफ हमारा व्यवहार कैसा है। जो वस्तु हमें पसन्द आती है उसकी तरफ हमारा झुकाव होता है, उसे पाने की चेष्टा करते हैं या उसके साथ जुड़ने का प्रयास करता हैं। मनोवृत्ति सामान्य तौर पर इस बात की अभिव्यक्ति है कि हम विभिन्न वस्तुओं को कितना अधिक पसन्द या नापसत्द करते हैं। अभिवृत्ति हमारे मूल्यांकन का प्रतिनिधित्व एवं विविध प्रकार के पक्षों की प्राथतिकता निर्धारित करती है। यह सचनाओं पर आधारित है। उदाहरण स्वरूप कछ लोग प्राण दण्ड को खास तौर से अपराध रोकने का तरीका दण्ड देने के लिए उचित मानते हैं। परन्तु कुछ लोग जो इसका विरोध करते हैं। वैसी सजा को नृशंस और अपराध के निरोध का तरीका नहीं मानते हैं। जब तक हमें किसी विशेष अभिवृत्ति परिवर्तन के जीवन में पर्याप्त अवसर होते हैं। अभिवृत्ति कई चीजों में लागू हो सकती है। अभिवृत्ति के कई पक्ष विद्यमान हो सकते हैं : यथा, व्याख्यान, दुकान, व्यक्ति प्रधानमंत्री, अध्यापक, मित्र) या भावात्मक विचार (न्याय, मानवाधिकार मैत्रीभाव) इत्यादि। कोई चीज जो कि निर्धारित भावनाओं का उत्तेजित करती है एक अभिवृत्ति पक्ष है। अभिवृत्ति किसी भी विश्वास या सम्मति से भिन्न है। किसी वस्तु की विशेषता के बारे में विश्वास एक अनुभूति है। कल्पना कीजिए आपके मित्र ने किसी प्रधानमंत्री पद के दावेदार के प्रति अनुकूल टिप्पणी की यह दृष्टिकोण प्रायः उस दावेदार के प्रति विश्वास से संबन्धित है एवं ऐसा व्यक्ति जो एक उचित सामाजित सुरक्षा नीति रखता है; कि वह गरीबों के लिए कार्य करेगा; अपने पड़ोसी देशों से मधुर संबन्ध विकसित करेगा इत्यादि। विश्वास या राय का निध ार्रण इस बात से होता है कि वह कितनी सत्य प्रमाणित होती है। वियवास के बारे में हमारी मूल्यांकित भावनाएँ हमारे दृष्टिकोण में योग देती है। अभिवृत्ति का वैज्ञानिक अध्ययन में मापन की आवश्यकता होती है। अभिवृत्ति मापने की कई तकनीकें होती हैं। अभिवृत्ति मापन की सर्वाधिक सामान्य विधि है।

अभिवृत्ति परिवर्तन का प्रभाव

दैनिकजीवन में अभिवृत्ति के रचना एवं परिवर्तन जीने की सत्त प्रक्रिया का अंग है। अभिवृत्ति रचना एवं परिवर्तन वर्तमान अन्तर्वैयक्तिक संबंध के संदर्भ में घटित होता है। समूह सदस्यता एवं विशष्ट स्थिति अलग–अलग समयावधियों को जोड़ते हैं। कभी–कभी अभिवृत्ति परिवर्तन की यह सीमा चरम पर होती है। अक्सर समह द्वारा इस बदलाव को नाटकीय रूप दे दिया जाता है, जब इसे जबरदस्ती प्रोत्साहित किया जाता है। अभिवृत्ति के चरमपरिवर्तन के लिए बल प्रयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती। अभिवृत्ति परिवर्तन प्रक्रिया में लिप्त मूल तथ्यों की पहचान संभव है। अभिवृत्ति परिवर्तन से जुड़ी मौलिक इकाई क्रमय सामाजिक प्रभाव से जुड़ी इकाई के काफी समान होती है। सामाजिक कुप्रभाव को एक अभिकर्ता के रूप में दर्शाया जा सकता है जो मुख्य स्थान पर एमकम व्यक्तियों के साथ हस्तक्षेप करता है। अभिवृत्ति परिवर्तन किसी श्रोत से न्यूनतम संलिप्त मनोविज्ञान के मूलतत्व होता है जो मुख्य जगह एकम व्यक्तियों का संदेश भेजता है।

अभिवृत्ति परिवर्तन में मौलिक क्रमः प्राप्तकर्ता की उस अवस्था को दर्शाने हेतु संदेश भेजने वाले श्रोत से जुड़ा होता है, जिसे पहले संदेश भेजा गया। एक अभिवृत्ति परिवर्तन को बढ़ाने की विशेषताओं में उच्च प्रमाणिकता और आकर्षण का होना आवश्यक है।

आकर्षणशीलता सांसारिक प्रत्यक्षीकृत या पानेवाले के सादृश्य हो सकती है। सुझाव, भय के प्रति अनुरोध और एकपक्षीय बनाम द्विपक्षीय संदेश, की विशेषताएँ अभिवृत्ति परिवर्तन को प्रभावित करते हैं।

सभी व्यक्ति किसी भी संदेश का एक ही तरह का उत्तर नहीं देते हैं। कुछ लोग दूसरों की अपेक्षा आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। किसी संदेश का किसी विशेष प्राप्तकर्ता के ऊपर क्या प्रभाव पड़ता है वह इस बात पर निर्भर करता है कि वह संदेश प्राप्तकर्ता की स्थिति से कितना भिन्न है और उसका रक्षात्मक अनुभव इस स्थिति से कितना सम्बन्ध रखता है। यह सर्वमान्य है कि अभिवृत्ति व्यवहार से उसके व्यवहार में कोई मेल नहीं है। कुछ खास स्थिति में अभिवृत्ति मापन एवं प्रेक्षित व्यवहार में अनुरूपता के बीच अभिवृत्ति की संरचना में प्रत्यक्ष अनुभव की उपस्थिति और इसकी प्रासंगिकता उस व्यक्ति के प्रक्षेपित व्यवहार के लिए श्रेष्ठ माना जाता है।

मूल्य हमारे जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाने एवं निर्देशन देने का कार्य करते हैं। ये मूल्य व्यक्तियों की इच्छाओं के अनुसार कुछ भी हो सकते हैं। जब मूल्य सामाजिक रूप से प्रतिबन्धित होता है और दूसरों की प्रतिक्रिया के फल स्वरूप पैदा होता है तो इसे आवश्यकता के नाम से जाना जाता है। एक ऐसा विचार जिसमें आवश्यकता दूसरों के लिए पूर्वकल्पित हो सकती है और उसके गर्ग को निर्देशित रखती है। उदाहरण के लिए हमें किसी न किसी वस्तु की आवश्यकता होती है। क्योंकि उनका सामाजिक मूल्य होता है या वे प्रतिष्ठापरक होती हैं। व्यक्ति के कुछ मूल्य उसके जीवन की पूर्व धारणा की ओर निर्देशित करता है। ये पूर्वधारणाएँ और इसके किसी भी व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करते हैं। इस प्रकार वे व्यक्ति के जीवन को प्रासंगिक, सम्बद्ध एवं उद्देश्य पूर्ण बना देते हैं। इसे क्रमबद्ध रूप से इस तरह देखा जा सकता है। किसी व्यक्ति के सोपान्नात्मक महत्व और उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के बीच के सम्बन्ध का पता लगाना अभी शेष है। जब हम किसी व्यक्ति के सोपानात्मक महतव के बारे में जानने का प्रयास करते हैं तब हमें यह ज्ञात होता है कि वह व्यक्ति कितना महत्वपूर्ण है। व्यक्ति जब आदतों एवं असंगत व्यवहार के बीच जीवन यापन करता है तो उसका सोपानात्मक महत्व अत्यधिक संकल्पित तथा व्यक्तित्व अत्यन्त संगठित हो जाता है। एक बच्चे का कार्य उसके परिवार के प्रभावी मूल्यों के द्वारा निर्मित होता है। यह मूल्य नैतिक, धार्मिक, सामाजिक आदि होते हैं।

परिवारिक मूल्यों का प्रचलन बढ़ते हुए बच्चों को उनके वर्तमान और भविष्य के आचरण के स्पष्ट मार्गदर्शक होते हैं। जब कोई बच्चा अपने परिवार से भिन्न कियी अन्य परिवार के आदर्श और मनोवृत्ति के सम्पर्क में आता है तब उसे आभास होता है कि उसके मूल्यों को चुनौती मिल रही है। मूल्यों का मजबूत प्रेरणात्मक चरित्र होता है जो आकांक्षा और सो आवश्यकता के अनुरूप होता है। यद्यपि ये अविवादपूर्ण ढंग से सामाजिक आदर्शों और आकांक्षाओं से प्रभावित हैं और प्रत्येक व्यक्ति में इसका रूप बदलता रहता है। यह विभिन्नताउसके सामाजिक उद्दीपन की प्रतिक्रिया में परिवर्तित दिखाई देती है। समूह में आदर्श की अभिव्यक्ति को एक प्रभावी स्तर मौजूद होता है और प्रत्येक व्यक्ति में इसका रूप बदलता रहता है। यह विभिन्नता उसके सामाजिक उद्दीपन की प्रतिक्रिया में परावर्तित दिखाई देती है। समूह में आदर्श की अभिव्यक्त का एक प्रभावीस्तर मौजूद होता है। मूल्य, समूह में सार्वभौम और व्यक्तिगत रूप से अद्वितीय होता है। यह सार्वभौम इसलिए है कि समूह के सभी सदस्यों को आदेश के अनुरूप व्यवहार करना पड़ता है। ये मूल्य अद्वितीय इस आशय से हैं कि प्रत्येक व्यक्ति इसे अपने ज्ञान के आधार पर अपनाता है। व्यक्ति अपने आप और अन्य अपने इसी मूल्यक्रम के आलोक में देखता है। अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि व्यक्ति सैद्धान्तिक मूल्यक्रम से अभिप्रेरत होकर स्वयं को दार्शनिक, तार्किक या वैज्ञानिक तत्व की खोज में लगा देता है। वह ज्ञान प्राप्ति की आवश्यकता से अभिप्रेरित होता है।

राजनीतिज्ञ दूसरों पर शासन करने के प्रयोजन से संचालित होते हैं। अर्थशास्त्री इन्द्रिय सम्बन्धी अनुभव से ही संतुष्टि प्राप्त करता है जैसे सौन्दर्य, अंगसंयोग में सामंजस्य आदि। मूल्यों की पास्परिक क्रिया के माध्यम से अभिवृत्ति को जाना जा सकता है। अभिवृत्ति और मूल्य बहुत हद तक मानव व्यवहार का अविर्भद पक्ष है। ये व्यक्ति को उसके/उसकी सामाजिक वास्तविकता के समायोजन के लिए निर्देशित करते हैं। अभिवृत्ति एवं मूल्यों द्वारा व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार और उसके व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है।

2.3 पूर्वाग्रह

पूर्वाग्रह एक प्रवृत्ति है जो व्यक्ति को अपने समूह के सदस्यों के अनुकूल या प्रतिकूल सोचने, देखने, महसूस करने या अनुकरण करने के तरीके की तरफ उद्यत करती है। पूर्वाग्रही व्यक्ति वारतव में अपनी प्रवृति के अनुसार व्यवहार करते हैं कि नहीं यह परिस्थितियों और अन्य कारकों पर निर्भर करता है। पूर्वाग्रह शब्द व्यक्ति की आन्तरिक सोच, क्षमता और अनुभव तथा प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक, प्रज्ञाशक्ति और संवेगात्मक प्रकारण पर दबाव बनाता है। इससे कदापि यह अर्थ नहीं निकलता कि ऐसे अनुभवों से व्यवहार उपयोगी होता है।

पूर्वाग्रह शब्द लैटिन भाषा के प्रेजूडीसियम से लिया गया है। प्री का अर्थ पूर्व और जूडिसियम का अर्थ निर्णय होता है। पूर्वाग्रह किसी सदस्य की विशिष्टिताओं को निर्दिष्ट नहीं करता वरन यह मूख्य रूप से समूह के सदस्यों के सकारात्मक या नकारात्मक मूल्यांकन या निर्णय से संदर्भित है। यह प्रायः कुछ सामाजिक नास्तिक या धार्मिक समूह के सदस्यों की नकारात्मक प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है।

पूर्वाग्रह की विशेषताएँ

1) पूर्वाग्रह अभिवृत्ति का एक प्रकार है। यह अर्जित गुण है। एक नवजात शिशु अन्य जाति के लोगों के प्रति नकारात्मक या सकारात्मक पूर्वाग्रह नहीं रखता, परन्तु ज्यों ही पर उसे लोगों की जाति, वर्ग या धर्म के बारे में ज्ञान हो जाता है, पूर्वाग्रह विकसित होने लगता है।

2) पूर्वाग्रह एक सांवेगिक भावना है। यदि यह स्वीकारात्मक है तो किसी भी जाति या वर्ग के प्रति या सद्भावना प्रदर्शित करता सकता है। यदि पूर्वाग्रह किसी अन्य नास्तिष्क या धार्मिक समूह के लोगों के प्रति नकारात्मक है तो यह किसी अन्य नास्तिक या धार्मिक समूह के लोगों के प्रति नकारात्मक है तो यह शुत्रता, घृणा और क्रोध के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

3) पूर्वाग्रह समूह को लक्ष्य की तरफ निर्देशित करता है। पूर्वाग्रह का लक्ष्य एक व्यक्ति नहीं वरन् सम्पूर्ण समूह होता ह। अच्छे गुणों के बावजूद कोई व्यक्ति या किसी समूह का सदस्य एक दूसरे समूह के सदस्यों के साथ विशेष प्रकार का पूर्वाग्रह प्रदर्शित कर सकता है।

4) पूर्वाग्रह दृढ़ सामान्यीकरण पर आधारित है। इसमें दृढ़ता पायी जाती है और यह मनोविज्ञान के मूलतत्व अनमनीय सामान्यीकरण पर आधारित है। यद्यपि प्रमाणिक सूचनाओं की प्राप्ति के बाद भी व्यक्ति अपने पूर्वाग्रह नहीं बदल पाता/पाती हैं।

5) पूर्वाग्रह वास्तविकता से सम्बधित नहीं है, चसहे यह अनुकूल हो या प्रतिमूल। यह हमारी परम्पराओं एवं प्रथाओं पर आधारित है।

पूर्वाग्रह के पाँच प्रमुख सिद्धान्त हैं : i) सामाजिक शिक्षण के सिद्धान्त जो विशेष रूप से व्यक्तिगत पूर्वाग्रह के साथ और पूर्वाग्रही व्यक्ति में अभिभावकों मित्रों और

शिक्षकों आदि के द्वारा शिक्षण अनुभवों के कारणों का पता लगाता है, ii) संज्ञानात्मक सिद्धान्त जो संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर बल देता हैं जैसे–वर्गीकरण, प्रवाह और योजना, जो पूर्वाग्रही में योगदान करती है, iii) अभिप्रेरणात्मक सिद्धान्त जो पूर्वाग्रही व्यक्ति के व्यक्तित्व में पूर्वाग्रही की उत्पत्ति को देखने का प्रयास करता है, पअद्ध सामाजिक तादात्मय का सिद्धान्त जो यह विश्लेषित करता है कि लोग सामाजिक जगत का किस तरह स्वयमूहों और परसमूहों में विभाजित करके सम्बद्ध परसमूहों की उत्पत्ति और विकास की प्रक्रिया को एक विशेष समाज, संस्कृति और समूह के साथ जोड़ता है।

पूर्वाग्रह को बनाये रखने में सहायक तीन स्तरों पर संचालित होते हैं। ये स्तर हैं, i) सामाजिक संरचना, ii) वैयक्तिक गतिशील व्यक्तित्व, और iii) संस्कृति। सामाजिक संरचना के कारक हैं। (क) पूर्वाग्रह के प्रतिमान की अनुकूलता (ख) अन्तः क्रिया प्रतिरूप ग) नेतृत्व समर्थन (घ) पूर्वावरण आधार । वैयक्तिक गतिशील व्यक्तित्व के अंतर्गत (क) कुण्ठा, आक्रमण और (ख) आर्थिक व्यवस्था और प्रस्थिति प्राप्ति (ग) व्यक्तित्व की आवश्यकताएँ और (घ) निरंकुश व्यक्तित्व सांस्कृतिक कारकों के अंतर्गत (क) मूल्य और प्रतिमान (ख) बालक का समाजीकरण और (ग) स्वसमूह बनाम परसमूह सदस्यता।

सामाजिक व्यवहार में पूर्वाग्रह का प्रभावः सामाजिक व्यवहार में पूर्वाग्रह का प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरफ से पड़ता है पूर्वाग्रह के सकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित होते हैंः 1) यह व्यक्ति को उसकी दमित इच्छाओं की पूर्ति में सहायक होता है, 2) दूसरे समूहों पर आक्रामक होकर यह व्यक्ति को उसकी कुंठाओं से मुक्ति दिलाने में सहायता करता है, 3) पूर्वाग्रह की सहायता से समूह में श्रेष्ठता की भावना पैदा होती है जो उसकी प्रतिष्ठा की आवश्यकता को पूरी करती है।

पूर्वाग्रह के नकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं : 1) पूर्वाग्रह के कारण सामाजिक द्वन्द्व पैदा होता है, 2) इसके कारणसामाजिक विघटन होता है, 3) पूर्वाग्रह राष्ट्र की एकता में बाध ाक होता है।

2.4 शिक्षण

शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप शारीरिक और मानसिक गतिविधियाँ नए और परिवर्तित प्रतिक्रिया में निर्देशित होती हैं। शिक्षण के लिए सामान्य पूर्ववर्ती स्थिति एकल परीक्षण है या कई घंटे बेकार प्रयास करने पर आ सकता है। प्रयत्न और युक्ति की दीर्धता कार्य की कठिनाइयों के ऊपर निर्भर करता है। सीखने वाले व्यक्ति की परिपक्वता एवं दक्षता तथा समझदारी और अनुभव कार्य के लिए आवश्यक है। जब सही और उचित प्रति उत्तर प्राप्त हो जाता है तो परीक्षण काल समाप्त हो जाता है। उचित प्रति उत्तर वह है जो व्यवहार के सन्निकटता ला दे, खोज का अंत कर दे या समस्याओं का समाधान कर दे। जब प्रतिउत्तर की संतुष्टि होती है तो प्रबलीकरण होता है। एक बार जब प्रबलीकरण के कारण कार्य का सिलसिला सही ढंग स्थापित हो जाता है तो पुनरावृत्ति या व्यवहार, चाटुकारिता और दक्षता प्राप्त हो जाती है। पुनरावृत्तिय; जो कुछ सीखा गया है उसके स्पष्टीकरण का एक अवसर प्रदान करती है। और संचालन में सहायता करती है। यह चुने हुए प्रत्युत्तरों को भी प्रबल बनाती है जब तक वे अच्छी आदतों के रूप में स्थापित नहीं हो जाते।

प्रकार

बहुगुणप्रत्युत्तर शिक्षण मानवजाति से सम्बन्धित है और इसकी प्रकृति अत्यन्त जटिल है। मुख्य रूप से तीन प्रकार के बहुगुणप्रत्यत्तर से व्यक्ति सीखता है। (1) संवेदी चालक

शिक्षण (2) मौखिक शिक्षण (3) अवधारणा सम्बन्धी शिक्षण । अब हम संक्षेप में प्रत्येक के प्रमुख लक्षणों का वर्णन करेंगे।

मानव शिक्षण के क्षेत्र में, संवेदी चालक शिक्षण प्रतिबिम्बित चित्रांकन एवं अनुशरण शिक्षण को सहायता प्रदान करता है। इस विशिष्ट शिक्षण में व्यावसायिक क्रियाएँ महत्वपूर्ण होती हैं। ये व्यावसायिक क्रियाएँ संदेही अंगों द्वारा नियंत्रित होती है। विभिन्न क्षेत्रों में मानव द्व ारा अर्जित कौशल इस प्रकार के शिक्षण के अंतर्गत आते हैं, यथा बाइसिकिल चलाना, पियानो बजाना, मशीन चलाना, हवाई जहाज उड़ाना आदि।

मानव व्यवहार का मुख्य भाग मौखिक शिक्षण के अंतर्गत आता है। व्यावसायिक दक्षता की अपेक्षा मौखिक शिक्षण की मात्रा काफी अधिक होती है। मौखिक शिक्षण के प्रायोगिक अध्ययन के लिए अर्थपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया है। मौखिक सामग्री हेतु चार मुख्य तकनीकों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है यथा मुक्त पुनः स्मरण क्रमबद्ध शिक्षण एवं पुनःस्मरण, युगल सहभागी और मौखिक विवेचन प्रक्रिया।

प्रत्येक शिक्षण मानव शिक्षण का अत्यधिक जटिल पहलू है। यह ऐसी भौतिक क्रियाओं से सम्बन्धित है जिसमें एक श्रेणी की चीजों को व्यापक नामों से जाना जाता है। प्रत्यक्ष निर्माण के बाद कोई उत्तेजक या उद्धीपक समह किसी एक नाम से जाना जाता है। उदाहरण स्वरूप प्रत्यय शिक्षण के बाद हम किसी विशेषजाति के फल को ष्आमश और दूसरे को ष्केलाष कहते है। यद्यपि प्रत्येक आम और केला एक देसरे से भिन्न हो सकते हैं परन्तु बहुत सी सामान्य विशेषताओं के कारण वे एक विशेष नाम से जाने जाते हैं। प्रत्यय सामान्य विशेषताओं और वस्तुों, व्यक्तियों एवं घटनाओं के बीच विभेदीकरण की एक प्रक्रिया है। प्रारम्भ से ही बालक में चिन्तन प्रक्रिया के कारण उसके/उसकी मस्तिष्क में प्रत्यय शिक्षण अपना स्थान सुनिश्चित कर लेता है। प्रत्यय शिक्षण अनुभूतिकी प्रक्रिया, विश्लेषण, तुलना, काल्पनिक चिंतन एवं सामान्यीकरण से प्रभावित होता है।

शिक्षण प्रवर्तक कारक

1) शिक्षण के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारक एवं तत्व आवश्यक हैं। ये तत्व मुख्यतया विभिन्न प्रकार की अभिप्रेरणा, पुरस्कार एवं दण्ड, परिणाम का ज्ञान, प्रतिस्पर्धा आदि हैं। ये तत्व शिक्षण के दौरान प्रबलीकरण की शक्ति पैदा करते हैं शिक्षण और अभिप्रेरणा एक दूसरे के सन्निकट हैं। सभी जीवित प्राणियों की शारीरिक आवश्यकताओं जैसे भूख, प्यास, निद्रा, यौन क्रिया आदि होती है। पशुओं से अलग मानव में कुछ प्रबल सामाजिक प्रेरकताएँ होती हैं। यही कारण है कि ये शारीरिक अभिप्रेरणा की अपेक्षा पुरस्कार जैसे सम्मान, प्रतिष्ठा एवं प्रशंसा से अत्यधिक प्रभावित होती हैं। प्रयोगों के द्वारा यह देखा गया है कि पुरस्कार शिक्षण को प्रभावित करता है। जब किसी भूखी बिल्ली को पुरस्कार के रूप में भोजन दिया जाता है तो वह सही राह पर चलना सीख जाती है। शिक्षण के क्षेत्र में दण्ड के रूप में भी प्रयोग किए गए हैं। इस प्रयोग में बिजली के झटके लगाए गए और पाया गया कि दण्ड के बाद भूटिया ठीक हो गई शिक्षण प्रक्रिया को परिणाम का ज्ञान भी प्रभावित करता है। जब कोई सीखने वाला/वाली यह समझ जाता/जाती है कि वह कुछ पा जायेगा तो उसकी क्रिया तेजी से प्रगति करती है। प्रतिस्पर्धा से भी शिक्षण की गति बढ़ जाती है इस स्थिति में सीखने वाला यह सोचता है कि जल्दी सीख जाने से वह समाज में सम्मानित किया जायेगा/जायेगी। हम यह कह सकते हैं कि प्रतिस्पर्धा और सम्मान की सोच आन्तरिक अभिप्रेरणा के प्रकार्यता को बढ़ाती है।

2) शारीरिक कारकों का शिक्षण प्रक्रिया में अत्यन्त विशिष्ट स्थान होता है। सीखने वाले की शारीरिक दशा का उसके सीखने की प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ता है पूर्ण रूप से

विकसित शारीरिक अंग, स्वस्थ शरीर और मानसिक परिपक्वता शिक्षण प्रक्रिया को बढ़ाती है।

3) पर्यावरणीय कारकों का सीखने को बढ़ावा देने में विशिष्ट योगदान होता है। शिक्षण प्रक्रिया को बढ़ाने में मौसम, तापक्रम, प्रकाश, ध्वनि और हवा का अत्यधिक योगदान होता है।

शिक्षण में बाधक कारक

उदासीनता, कुंठा, अवसाद, सामाजिक निष्कासन, पुरस्कार से वंचित, कठोर दण्ड, परिणाम से अनभिज्ञ, अस्वस्था/प्रतिस्पर्धा, अक्षमता, और ग्रन्थियों की निष्क्रियता, वयोवृति थकान, मादक द्रव्य व्यसन, विखण्डित परिवार, अपराधी सामाजिक समूह, अत्यधिक गरीबी, अनुचित पालन, उपयुक्त शैक्षगिण एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण की सुविधाओं का अभाव, स्वस्थ मनोरंजनात्मक अवसरों की सुविधाओं की अनुपलब्धता, असहनीय एवं पारिस्थतिक वातावरण जैसे तापक्रम, वायुसंचारण, तीव्र ध्वनि, पेयजल एवं अपर्याप्त या अल्प–भोजन इत्यादि व्यक्ति के शिक्षण में अवरोधक कारण है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी : क) अपने उत्तर उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) शिक्षण के प्रमुख प्रकारों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 स्मृति

जो कुछ पूर्व में सीखा गया उसे याद रखने का कार्य स्मृति करती है। मानसिक प्रक्रिया यथासंवेग, अनुभूति, चिन्तन और कल्पना इस प्रक्रिया में अच्छी तरह सन्निहित हैं। किसी विषय या घटना को सीखने या अनुभव करने के बाद स्मृति की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। आवश्यकतानुसार हम अपने चेतन में इस प्रक्रिया को लाते हैं, स्वीकार प्रारम्भ होती है। आवश्यकतानुसार हम अपने चेतन में इस प्रक्रिया को लाते हैं, स्वीकार करत हैं और अपने प्रतिउत्तरों में व्यक्त करते हैं। ये सभी मानसिक अवस्थाएँ स्मृति प्रदर्शित करती हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक यह स्वीकार करते हैं कि स्मृति मनोवैज्ञानिक की अपेक्षा शारीरिक घटना है। इन मनोवैज्ञानिक का कहना है कि स्मृति पुनर्जनन प्रक्रिया है। वे लोग जो स्मृति को मानव व्यवहार की मूल मनोवैज्ञानिक घटना के रूप में लेते हैं। उनका मानना है कि स्मृति की कुछ निश्चित घटनाएँ आसान और अन्य दुरूह होती हैं।

स्मृति के लिए मूल आवश्यक गुण तथ्य एवं घटनाओं को एकत्र करना होता है जो शिक्षण प्रक्रिया के प्रारम्भ में ही सिखाई जाती हैं। सीखने की प्रक्रिया स्मृति की प्रथम आवश्यक प्रक्रिया है। दूसरा तत्व उन तथ्यों एवं घटनाओं को अधिकार में रखना है जो सीखी जा चुकी हैं। यह सीखे गए विषयों का सगठन है, तीसरा तत्व उन तथ्यों एवं घटनाओं का

पुनः स्मरण प्रक्रिया के अन्तर्गत लाना जो सीखन के बाद मस्तिष्क में बनी हुई हैं। चौथा तत्व उन तथ्यों एवं घटनाओं को पहचानना जो हमारे मस्तिष्क में सीखने के बाद बनी हैं और सच्चे रूप में उन्हें पुनः स्मरण कर याद रखते हैं।

प्रकार मनोवैज्ञानिकों ने स्मृति के कई प्रकारों का वर्णन किया है। स्मृति के दो प्रचलित प्रकारों को निम्नलिखित रूप में दिया जा रहा हैः

1) पहली श्रेणी में चार प्रकार की स्मृति आती हैं यथा (i) संवेदी पटल (ii) अल्पावधिक स्मृति (एस टी एम) (iii) पुनरावृत्ति (iv) दीर्घावधि स्मृति (एल टी एम)।

संवेदी मार्गों का संग्रहकार्य संवेदी पटल कहलाता है। अधिकांश सूचनाएँ जो संवेदी पटल पर कुछ क्षण के लिए अंकित होती हैं वे विलुप्त हो जाती हैं। जो कुछ संक्षिप्त पटल से संग्रहित होती हैं वे भी सामान्यतः संवेदी पटल से नष्ट हो जाती हैं। हम संवेदी पटल पर सूचनाओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए अपना ध्यान आकर्षित करते हैं। जब हम ऐसा करते हैं तो मौजूद सूचना को अग्रिम उपयोग के लिए क्षणिक स्मृति को भेज देते हैं। प्रयोगों द्वारा यह दिखाया गया है कि दृष्टिगत संवेदी पटल एक सेकेण्ड तक सूचनाओं को रोकते है। जबकि श्रवण पटल सूचनाओं को लम्बी अवधि तक लगभग 4–5 सेकेण्ड तक रोके रखता है।

अल्वावधि स्मृति वह है जो संवेदी पटल से सूचनाओं को ग्रहण करके लगभग 30 सेकेण्ड तक रोके रहती है। रोकने की अवधि कई कारकों पर निर्भर करती है। चूंकि अल्पावधि स्तर की स्मृति की क्षमता बहुत छोटी होती है,और अधिकांश सूचनाएँ जो यहाँ एकत्रित होती हैं वे नष्ट हो जाती हैं। अंतः अन्य प्रकार की सूचनाएँ इनका स्थान ग्रहण कर लेती हैं। इनके नष्ट होने से पूर्व हुछ सूचनाएँ प्रनः प्राप्त हो जाती है और उनका उपयोग हो जाता है। जब हम सूचनाओं के बावत खोज करत हैं तो अल्पावधि स्मृति के माध्यम से शीघ्रता से सूक्ष्म परीक्षण करते हैं। जब पुनः इससे किसी प्रकरण को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं जब हम पुनः इससे किसी प्रकरण को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं तो प्रत्येक प्रकरण को अल्पावधि स्मृति में परीक्षण करते हैं। सूक्ष्म परीक्षण की प्रक्रिया जारी रहती है जब अल्पावधि स्मृति के सभी प्रकरणों का परीक्षण नहीं हो जाता। अल्पावधि स्मृति की कुछ सूचनाएँ न तो समाप्त होती हैं और न ही पुनः प्राप्त होती है, बल्कि दूसरे स्मृति स्तर दीर्घवधि स्मृति या उससे पुनरावृत्ति स्मृति में चली जाती हैं।

पुनरावृत्ति की प्रक्रिया सूचना के प्रकरणों को एकाग्रता के केन्द्र में रखती है, चाहे उन्हें धीरे से दोहराया जाए या जोर से/जितना अधिक पुनरावृत्ति स्मृति की पूरी मात्रा कम महत्वपूर्ण हो सकती हैवनिस्पत जिस तरीके से सूचना की पुनरावृत्ति होती है। उसी तरह की प्रक्रिया के बार–बार होने से क्या याद रखना है, उसे दीर्घकालीन स्मृति के रूप में बदलने में सफल नहीं हो पाते हैं। विस्मृत पुनरावृत्ति स्मृति की सफलता अत्याधिक सम्भावी है। विस्तृत पुनरावृत्ति के अन्तर्गत तथ्य, संगठन और अर्थ आदि सन्निहित रहते हैं क्योंकि इनकी पुनरावृत्ति होती रहती है।

दीर्घकालिक स्मृति कई दिनों, महीनों, वर्षों या जिन्दगी भर बनी रहती है। इसके भण्डारण क्षमता का कोई ज्ञात समय नहीं है। एक बार दीर्घकालिक स्मति में सूचना इकट्ठा हो गई तो उसके लिए यह अच्छा है।

हमें ऐसा प्रतीत होता है कि हम भूल रहे हैं, क्योंकि जो स्मृति में संचय है अथवा अतिरिक्त सूचनायें पुनः प्राप्त होती हैं उन्हें याद रखने में कठिनाई महसूस होती है। कई चीजों की जानकारी हो जाने से हम उन्हें भूल जाते हैं क्योंकि ये भ्रम और बाधा उत्पन्न करती हैं और उन्हें दीर्घकालिक स्मृति में छोड़ देती हैं। दीर्घकालिक स्मृति में छोड़ देती हैं। दीर्घकालिक

स्मृति के शब्दों, वाक्यों,विचारों, अवधारणाओं और जीवन के अनुभवों का भण्डारण होता है।

स्मृति की दूसरी श्रेणी भी चार प्रकार की होती हैं यथा (i) स्वभाव स्मृति (ii) सत्य स्मृति (iii) तात्कालिक स्मृति (iv) दीर्घावधि स्मृति।

स्वभाव स्मृति – बिना सोचे समझे किसी विषय पर टिप्पणी करने पर निर्भर रहती है। इस स्मृति में हम सोचने या तर्क करने के आधार पर याद करने की प्रक्रिया का प्रयोग नहीं करते हैं। इस प्रकार की स्मृति मानसिक स्मृति की अपेक्षा शारीरिक स्मृति मानी जाती है, जिसके लिए वृद्धि और वास्तविकता का कोई स्थान नहीं होता है।

सत्य स्मृति – स्वभाव स्मृति से ठीक विपरीत होती है। इस स्मृति के अन्तर्गत हम विषय की बात को अच्छी तरह समझकर ही अपनी स्मृति में लाते हैं। सत्य स्मृति में याद रखने की प्रक्रिया सोच एवं तर्क पर आधारित होती है। यह सही मायने में बुद्धि और वास्तविकता के लिए मानसिक स्मृति है। कुछ मनौवैज्ञानिक स्मृति के शारीरिक एवं मानसिक आधार पर वर्गीकरण से सहमत नहीं हैं और उनके सम्बन्धों के पक्ष में वकालत करते हैं।

जब किसी के बारे में तत्काल देख और सुनकर दोहराते हैं, तो उसे तात्कालिक स्मृति कहते हैं। तात्कालिक स्मृति, दीर्घकालिक स्मृति से भिन्न होती है। तात्कालिक स्मृति अस्थाई होती है। अध्ययन यह बतलाते हैं कि तात्कालिक स्मृति अवस्था के साथ–साथ विकसित होती है। यह किशोरावस्था में तेजी से विकसित होती है।

तात्कालिक स्मृति के परिणाम को शब्दों और अत्यधिक संख्याओं के आधार पर जाना जा सकता है। तात्कालिक स्मृति, स्मृति विस्तार का संकेत करती है और संख्याओं को दिखाया जाता है तब तात्कालिक स्मृति को तात्कालिक श्रवण विस्तार स्मृति कहते हैं।

दीर्घावधि स्मृति के विपरीत होती है और इसकी प्रकृति वहनीय होती है। दीर्घावधि स्मृति में हम सीखी हुई बातों को पुनः एक विश्चित अंतराल के बाद उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करते हैं। परीक्षा से पूर्व पाठ याद करना और परीक्षा के समय उन्हें समझने के बाद उत्तरपुस्तिका में लिखना दीर्घवधि स्मृति का रूप है।

2.6 अवबोधन

अवबोधन वह संगठित प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम वस्तुओं को उनके सही नामों से पहचानते हैं जैसे, वृक्षों, व्यक्तियों, इमारतों, मशीनों आदि। अवबोधन को जोड़ने वाली मशीन के रूप में संचालिक नही किया सकता है। प्रभाव को संचित नहीं किया जा सकता है; वस्तुतः मस्तिष्क उसी की व्याख्या और आकलन करता है जो वह ग्रहण करता है। किसी भी तस्वीर में हम वही चीज हुबहू नहीं देखते; और एक ही घटना को आयु, यौन एवं बुद्धि और अनुभव आदि के आधार पर हम भिन्न–भिन्न तरीके से वर्णन करते हैं। इस आधार पर प्रायः संवेदना और सहानुभूति के बीच अन्तर किया जाता है कि संवेदना ज्ञानेन्द्रियों का प्रथम प्रतिउत्तर है जबकि अवबोधन उद्दीपन वस्तु की अर्थपूर्ण जानकारी है। यह भिन्नता सैद्धान्तिक मूल्य के साथ व्यावहारिक मूल्य में बहुत कत है। संवेदना और अवबोधना की प्रक्रिया को अनुभव से अलग नहीं किया जा सकता है। हम शुद्ध रूप से रंग की संवेदना या ध्वनि के स्वरूप को वस्तुओं एवं अन्य अनुभवों के संयोजन से अलग नहीं कर सकते हैं। यदि कोई आगरा के ताजगहल का वर्णन करता है तो उस इमारत की दृष्टिगत कल्पना के साथ संभवतः वहीं की देखती हुई वस्तुओं की यादें जुड़ी होंगी। दवा की गंध अस्पताल के वार्ड की याद दिलाती है तथा मिठाई का स्वाद किसी स्वादिष्ट रात्रि भोज के रोचक अनुभव की याद मस्तिष्क में आ सकती है कि वेगेंद फेंक रहे हैं या बल्लेबाजी कर रहे हैं। ऐसे मामलों में अवबोधन कल्पना से कुछ भिन्न होता है। वास्तव में कल्पना सही रूप

में अवबोधन है, जिसमें बहु काम संवेदी नियंत्रण होता है। अवबोधन पूर्वकल्पित अन्तिम प्रतिउत्तर की मध्यस्थ प्रक्रिया है। जो कुछ हम देखते हैं वह आंशिक रूप से प्रति उद्दीपन एवं अधिकांश मात्रा में अपने आप पर निर्भर करता है, ताकि अवबोधन पूर्वकाल के अनुभव के आलोक में वर्तमान परिस्थितियों का आंकलन शक्ति बन सके।

अवबोधन की प्रमुख विशेषताएँ

भावना एवं संवेग की एकता तथा संगठनय ध्यान और चयनय दृढता एवं स्थिरीकरणय शिक्षण एवं पूर्व अनुभव आदि है। ध्यान अवबोधन से अधिक महत्वपूर्ण है और उसके चरित्र को निर्धारित करता है। ध्यान पर्यावरण से आदान प्रदान की प्रक्रिया है। यह एक सक्रिय व्यवहार है। जब हमारे ज्ञानेन्द्रियों की सक्रियता कुछ निर्धारित उद्दीपन द्वारा केन्द्रित की जाती है तो यह माना जाता है कि हम सतर्क हैं। उदाहरण स्वरूप गलियों में आवाजों को होना, मौसम में परिवर्तन, क्रिकेट मैच, व्याख्यान आदि।

अवबोधन आन्तरिक वैयक्तिक दशाओं और बाह्य सामाजिक स्थितियों द्वारा निर्धारित होता है। प्रेरणाएँ, संवेग, धनिष्ठता, मनोवृत्ति, मूल्य समायोजन आदि प्रमुख आन्तरक कारक हैं जो अवबोधन को प्रभावित करते हैं। कई बाहरी या उद्दीपन की विभिन्न विशेषताएँ अवबोधन से अलग होती हैं। उद्दीपन का संगठन में समानांताएँय उद्दीपन में निकटता, तत्वों के आँकड़े एवं संदर्भ अवबोधनों को प्रभावित करते हैं। किसी अन्य अथवा समूह की उपस्थिति उसके निर्देशानुसार अवबोधन को प्रभावित करता है।

प्रकार

अवबोधन के दो मुख्य प्रकार हैं : – **(i) गहरा अवबेधन (ii) गति अवबोधन**

गहरा अवबोधन रैखिक विचार, स्पष्टता, अन्तःप्रवेशन, प्रतिबिम्ब की बनावट में उतार–चढ़ाव और वस्तुओं की गतिशीलता से सम्बन्धित स्थिर बिन्दु के पास या उससे दूर होता है। गति अवबोधन गति के प्रकार से जुड़ा होता है (i) प्रत्यक्ष गति और (ii) वास्तवक गति। प्रत्यक्ष गति स्वगति मूलक या परिप्रेरित हो सकता है।

सामाजिक अवबोधन

सामाजिक संज्ञान का एक विषयात्मक मामला है। दूसरों के विषय में हमारा सामाजिक अवबोधन मूलतः उसे विषय में प्राप्त सूचनाओं तथा गुणों पर आधारित होता है तथा हम उनके व्यवहार के कारणों की व्याख्या करते हैं। हमारे सामाजिक अवबोधन की जड़ दूसरों के विषय में हमारे अवलोकन में होता हैय विशेष स्थितियों में उनके शारीरिक विशेषताओं एवं व्यवहारों के अवलोकन में होता है। हमारा अवलोकन वे सूचनाएँ–प्रदान करता है जो अर्थपूर्ण विशेषताओं में हमारे संज्ञानात्मक ढाँचे द्वारा आन्तरित होता है। सबसे निचले स्तर पर इस प्रक्रिया में सूचनाओं को हमारे संज्ञानात्मक श्रेणियाँ जो अन्य श्रेणियों से सम्बन्धित हैं यही स्थान देने का कार्य होता है। हम न्यूनतम आँकड़ों से सरल गुण बना सकते हैं हम अन्य व्यक्तियों के साथ–साथ अपने स्वयं के व्यवहार के कारणों के बारे में अनुमान लगा सकते हैं इस प्रक्रिया के कार्य की सरलता के बावजूद इसकी दूसरे अन्य अवलोकनों से तुलना या यथार्थता की गारन्टी नहीं होती है। सामाजिक अवबोधन की प्रक्रियाएँ निर्धारित करता है कि हम दूसरों के साथ किस प्रकार की प्रतिक्रिया करते हैं। तथा हम किस प्रकार अपे आप को देखते है। अन्य लोगों की धारणा निर्माण की प्रक्रिया को संज्ञानात्मक ढाँचा और सरल बना देता है। आत्म गुण निर्माण की प्रक्रिया में बहुत से ऐसे कारक है जो दूसरों के गुणों के निर्माण में महत्वपूर्ण होते हैं, भी अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं। सामाजिक सहस्ता शक्तिशाली प्रत्युत्तर की स्थिति में सबसे जल्दी घटित होती है अब दूसरों की उपस्थिति ही प्रेरणादायक होती हैं। अनरूपता का दबाव ऐसी स्थिति

निर्मित कर सकता है जब व्यक्तिगत माध्यम से प्राप्त सूचना तथा सामाजिक माध्यम से प्राप्त सूचना में संघर्ष हो सकता है।

2.7 रूढिबद्ध

रूढिबद्ध अति सरलित विचारों या विश्वासों का एक निश्चित सेट है जो सामान्यता लोगों या समूह के सदस्यों द्वारा रखा जाता है। हमारे विभिन्न धार्मिक, आध्यात्मिक या लैंगिक समूहों के विषय में रूढिबद्धताएँ होती हैं कुछ लोगों के रूढ़िगत विचार कुछ निश्चित शारीरिक पक्षों को इंगित करता है जैसे लम्बी और सुराहीदार गर्दन वाली महिला को एक सुन्दर महिला के रूप में देखा जाता है या एक लम्बे काले तथा चौड़े कन्धे वाले व्यक्ति को एक क्रूर व्यक्ति माना जाता है। रूढ़िगत विचार एक समूह के सदस्यों का अत्यधिक विश्वास होता है। ये विचार कुछ उद्देश्यों या कुछ अवलोकित घटनाओं पर आधारित होते हैं। इसे ऐसी अवधारणा जो गलत श्रेणीकरण का कारण होती है। रूढिबद्ध एक प्रकार का वर्गीकरण है जिसमें तीन गुण होते हैं (i) लोग कुछ विशेष धर्म के अनुसार व्यक्तियों ङ्केकी एक श्रेणी की पहचान करते हैं, (ii) लोग व्यक्तियों के श्रेणी के अनुसार गुणों की निश्चित विशेषताओं या लक्षणों पर एकमत होते हैं, (iii) उस श्रेणी के किसी व्यक्ति के गुण को स्वीकार करते हैं।

रूढ़ियों की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

i) रूढिबद्धताएँ एक मानसिक आकृति या छाप होती है। रूढिबद्धताएँ एक वर्ग या समूह का मानसिक चित्र होता है जिसके आधार पर हम उस समूह के सदस्यों की विशेषताओं को स्वीकार करते हैं।

ii) रूढ़िवादिता व्यक्तियों के एक समूह के विषय में बड़े स्तर पर सहमत विश्वास भी होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का एक विश्वास होता है कि शिक्षक आदर्शवादी होते हैं, राजनीतिज्ञ अवसरवादी होते हैं।

iii) रूढ़िवादिता में शोक एवं अतिरंजित सामान्यीकरण होता है। इसका विकास किसी समूह के कुछ लोगों के साथ अनुभव के आधार पर होता है। का

iv) सामान्यता रूढिबद्धताओं में किसी प्रकार का परिवर्तन नही होता है। इनमें नवीन सूचनाओं या विरोधाभाषी सूचनाओं के बावजूद भी परिवर्तन नहीं होता।

v) रूढ़ियाँ या जो सकारात्मक या नकारात्मक हो सकती हैं। यह पूर्वाग्रह से सम्बन्धित होती हैं।

रूढिबद्धताएँ स्वाभाविक न होकर प्राप्त की हुई होती है। रूढ़ियों के निर्माण के लिए उत्तरदायी कारक हैं (i) आंशिका अनुभव एवं ज्ञान (ii) समाजीकरण (iii) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक (iv) अनुकरण तथा (i) परम्परा एवं लोकोक्तियाँ। रूढ़ियाँ सामाजिक जीवन में एक महत्वनूर्ण भूमिका निभाती हैं। वैसे वे हमारे सामाजिक अन्तक्रियाओं को प्रभावित करती हैं। इसके आधार पर हम अन्य लोगों का मूल्यांकन करते हैं तथा अपने सामाजिक अतक्रियाओं का निर्माण करते हैं। रूढिबद्धताओं का प्रमुख कार्य (i) सामाजिक व्यवहारों को अर्थपूर्ण बनाना (ii) सामाजिक व्यवहारों को नियन्त्रित करना (iii) सामाजिक व्यवहारों का पूर्वकथन तथा (iv) वाणिज्यिक सूचना में हमारी सहायता करना। रूढिबद्धताएँ हमारे सामाजिक अन्तक्रियाओं को प्रभावित करने के साथ ही हमारे कार्यों में हस्तक्षेप भी करती है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) स्मृति के प्रकारों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) अवबोधन की अवधारणा का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.8 अभिप्रेरणा

अभिप्रेरणा से तात्पर्य प्रेरक एवं आगे बढ़ाने वाली शक्तियों से हैं जिसके परिणामस्वरूप लक्ष्य निर्देशित व्यवहार होता है। व्यवहार के अवलोकन द्वारा प्रेरकों का अनुमान लग जाता है। प्रेरक व्यवहार के व्याख्या के लिए शक्तिशाली उपकरण है तथा ये हमें भविष्य के व्यवहार के विषय में पूर्वकथन करने के अनुमति प्रदान करते हैं।

मानव की शारीरिक आवश्यकताएँ जैसे – भूख, प्यास, काम, आराम आदि मूल आवश्यकताएँ हैं तथा ये आनुवांशिक होती हैं। मानव द्वारा जनित आन्तरिक उर्जा जो शारीरिक्त आवश्यकताओं की संतुष्टि की विभिन्न क्रियाओं के रूप में होती हैं तथा व्यक्ति को अपने लक्ष्यों की पूर्ति में सहायता करती हैय को अभिप्रेरित करते हैं!

अभिप्रेरणा के सिद्धान्तों में अभिप्रेरित सिद्धान्त, प्रतिद्वन्द्विता सिद्धान्त तथा पर्याप्तता सिद्धान्त सम्मिलित हैं। अभिप्रेरित सिद्धान्तों में कहा गया है कि व्यवहार को लक्ष्य की ओर व्यक्ति के अन्तर की आन्तरिक स्थिति द्वारा ही ढकेला जाता है प्रोत्साहन सिद्धान्तों में व्यवहार को अपनी ओर प्रभावित कर लक्ष्य की क्षमता पर जोर दिया गया है। प्रतिद्वन्द्विता प्रक्रिया सिद्धान्त में कहा गया है कि हमें उन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रेरित होते हैं। जो हमें सुखद संवेगात्मक भावनाएँ देती है तथा उन लक्ष्यों से बचने का प्रयास करते हैं जो हमें दुख पहुँचाती हैं। इस सिद्धान्त में यह भी कहा गया है कि कई संवेगात्मक प्रेरक स्थितियों के बाद विरोधी स्थितियों या विरोध प्रकट होते हैं। पर्याप्त स्तर सिद्धान्तों में कहा जाता है कि व्यवहार आन्तरिक दैहिक प्रतिभाओं मे एक संतुलन की स्थिति उत्पन्न करने का पर्याप्त स्तर की प्राप्ति की ओर निर्देशित होता है। जैविकीय प्रेरक जैसे – भूख, प्यास तथा काम की उत्पत्ति शरीर के मनोवैज्ञानिक स्तरों से होती है। ये प्रेरक शरीरिक प्रक्रियाओं के संतुलित स्तर में बाधा आने से या संवेदी उद्दीपकों से उत्पन्न हो सकते हैं। भूख प्रेरक का आरत्भ

तब हो सकता है रक्त का स्तर या पोषक तत्वों का स्तर एक निश्चित आवश्यकता के स्तर से नीचे आ जाता है।

काम (यौनक्रिया) प्रेरणा एक बृहत स्तर में काम हारमोनों पर निर्भर करती है। ये हारमोन विकासात्मक अवस्थाओं में मस्तिष्क एवं शरीर को संगठित करते हैं ताकि उनमें पुरुष एवं स्त्रीत्व के गुण आ सकें। मानव में काम प्रेरणा की सक्रियता पर नियन्त्रण काम हारमोनों की तुलना में बाह्य उद्दीपन एवं शिक्षण द्वारा अधिक किया जा सकता है। नींद तापमान के साथ तथा पर्यावरणीय स्थितियों के साथ समायोजन दर्द या कष्टदायक तथा बाह्य दबावों से स्वतंत्रता दैहिक प्रेरणा के अन्य स्वरूप हैं।

सामाजिक प्रेरक या अर्जित प्रेरक जैसे उपलब्धि की आवश्यकता, शक्ति की आवश्यकता तथा अत्यधिक मानवीय आवश्यकता आदि अर्जित किए हुए प्रेरक होते हैं। उपलब्धि की आवश्यकता ऐसा प्रेरक है जो किसी लक्ष्य की सफलतापूर्वक पूर्ति के लिए होती है। जिन लोगों की उच्च उपलब्धि की आकांक्षा होती है वे कुछ ऐसे कार्य जो चुनौती पूर्ण एवं खतरा उठाने वाले हों, जिनमें सफलता प्राप्ति की संभावना होती है तथा ऐसे कार्य जिसमें उनके प्रदर्शन का अन्य लोगों के साथ तुलना की जाती है, करते हैं। वह अपने कार्य के प्रति बहुत लगनशील होते हैं। जब वे सफल होते हैं तो और अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य करते हैं और ऐसी परिस्थितियों में कार्य करना पसन्द करते हैं जिसमें परिणाम पर उनका कुछ नियन्त्रण हो। कुछ महिलाएँ जो उच्च उपलब्धि की आकांक्षा रखती हैं वे उपर्युक्त व्यवहार की विशेषताओं को प्रदर्शित नहीं करती हैं। किसी समाज में उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर कभी–कभी उसके विकास से भी सम्बन्धित होता है।

शक्ति अभिप्रेरणा एक सामाजिक प्रेरक है जिसका लक्ष्य अपनी प्रतिष्ठा या स्थिति बढ़ाना, दूसरों को प्रभावित करना, नियत्रित करना, नेतृत्व करना होता है। शक्ति अभिप्रेरणा का व्यावहारिक प्रकटन विभिन्न स्वरूपों में होता है। इनमें आक्रमण एवं उत्तेजक क्रिया, प्रतिस्पर्धात्मक खेलों में भाग लेना, संगठनों का सदस्य होना, विशिष्ट स्थनों की प्राप्ति तथा ऐसे व्यवसाय का चयन करना जिसका दूसरों पर गहरा प्रभाव हो, आदि लोकप्रिय हैं। पुरूषों में यह मद्यपान तथा महिलाओं पर लैंगिक प्रभाव के रूप में भी होता है। शक्ति अभिप्रेरणा का एक विशिष्टस्वरूप होता है। कुछ व्यक्तियों में ऐसी विशेषताएँ होती हैं कि वह उसका उपयोग दूसरों का विविध प्रकार से शोषित करने में करता है। वहशी आक्रामकता वह व्यवहार होता है जिसमें व्यक्ति का उद्देश्य दूसरे व्यक्ति को नुकसान पहुचाना ही होता है। वहशी आक्रामकता के पर्यावरणीय एवं सामाजिक कारणों में कुण्ठा, सामाजिक दशाओं के कारण समस्याएँ तथा दुखदायी पर्यावरणीय स्थितियाँ जैसे उच्च तापमान, शोर, भीड़ आदि हैं। सामाजिक शिक्षण, नैमित्तक एवं उपकरणात्मक अनुबन्धन के द्वारा ही दूसरों के विरूद्ध आक्रामकता की प्रवृत्ति को सीखा जा सकता है। कुछ परिस्थितियों में दण्ड गैर आक्रामक माडलों की उपस्थिति या आक्रामकता के साथ प्रतिद्वन्द्विता न कर पाने वाले प्रत्युत्तरों द्वारा भी आक्रामक व्यवहार सीखे जाते हैं।

अभिप्रेरणा का प्रक्रम बहुत सरल ढंग से नहीं चलता है। बहुत सी ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं। जो हमें उन लक्ष्यों की प्राप्ति से रोकती है जिसकी ओर हमारी इच्छा होती है। कुण्ठा शब्द से तात्पर्य व्यवहार पर रोक से है जो लक्ष्य प्राप्ति की ओर निर्देशित है। बहुत से ऐसे तरीके हैं जिसमें प्रेरक कुण्ठित कर सकते हैं। एक साथ उत्पन्न प्रेरकों में संघर्ष सबसे महत्वपूर्ण कारण है जिससे लक्ष्य प्राप्ति नहीं होता है। यदि प्रेरकों को रोक दिया जाए तो सांवेगिक भावनाएँ एवं व्यवहार प्रभावित होते हैं।

वह व्यक्ति जो अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाता है, वह भयाक्रान्त, चिन्तित, क्रोधी या अपराध भाव वाला या अवसादी हो जाता है। वह जीवन से प्रसन्नता ढूँढ पाने में

असमर्थ हो जाता है। कुण्ठा के बहुत से स्रोत हैं। इनमें प्रेरकों की पूर्ति को बांधित करने वाले पर्यावरणीय शक्तियाँ व्यक्तिगत अपर्याप्तता जो लक्ष्य की पूर्ति को असम्भव बना देती हैं तथा प्रेरकों में संघर्ष आदि । यहाँ जिक्र करने योग्य हैं पर्यावरणीय कुण्ठा शारीरिक बाधा या अवरोध जैसे धन का अभाव, बन्द दरवाजे या लोग (माता–पिता, शिक्षक, पुलिस, अधिकारी आदि) जो लक्ष्य प्राप्ति से रोकते हैं।

वे ग्राहक जो एक व्यक्ति के मानसिक एवं सामाजिक वृद्धि या विकास को प्रभावित करते हैं उसके अभिप्रेरणा को भी प्रभावित करते हैं। उचित आनुवांशिक विशेषताएँ, भोजन, वातावरणीय स्थितियों, सहयोगपूर्ण पर्यावरण आदि स्वास्थ्य अभिप्रेरणा विकसित करने में सहायक होते हैं। अपर्याप्त आनुवांशिक तत्व, कुपोषण साम्प्रदायिक/आपराधिक या असंगठित सामाजिक समूह स्वस्थ प्रेरणा में बाधक कारण होते हैं।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) अभिप्रेरक की प्रवृति का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) मानव के जैविक अभिप्रेरणा को संक्षेप में वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.9 सारांश

इस इकाई में हमने मानव व्यवहार के कुछ मूल मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की यथा–अभिवृत्ति, मूल्य पूर्वाग्रह, शिक्षण स्मृति, अवबोधक, रूढ़ियों। अभिवृत्ति एक काल्पनिक रचना है जो मनुष्य के व्यवहार से प्रभावित होती है जब वह अभिवृत्ति से सम्बन्धित वस्तुओं और स्थितियों को नियंत्रित करती है। अभिवृत्ति के तीन भाग होते हैं। (i) भावात्मक घटक (अभिवृत्ति उद्देश्य को व्यक्ति कितना अधिक पसन्द अथवा नापसन्द करता है) (ii) संज्ञानात्मक (चिन्तन, स्मृति अधिगम और निर्णय) घटक (अभिवृत्ति उद्देश्य के बारे में व्यक्ति क्या विश्वास करता है) (iii) व्यवहार वादी घटक (अभिवृत्ति उद्देश्य के प्रति व्यक्ति कैसे कार्य सम्पादित करता है)।

किसी भी चीज का मूल्य व्यक्ति के लिए वांछनीय हो सकता है। व्यक्ति के निश्चित मूल्य उसे पूर्वानुमान की तरफ निर्देशित करता है जिसमें वह जीवित रहता है। मूल्यों का अभिप्रेरणात्मक स्वरूप होता हैय क्योंकि यह आवश्यकता के अभाव के अनुरूप होता है। मूल्यों के दो स्वरूप समूह के लिए सार्वभौम तथा व्यक्ति के लिए विशिष्ट होते हैं।

पूर्वाग्रह एक अभिवृत्ति है जो व्यक्ति को समूह या उसके सदस्यों के संदर्भ में उपयुक्त अनुप्रयुक्त तरीके से सोचने, देखने, महसूस करने तथा कार्य सम्पादन करने की तरफ उन्मुख करती है।

शिक्षण वह प्रक्रिया है जो शारीरिक एवं मानसिक क्रिया के निर्देशन के परिणामस्वरूप नए या परिवर्तित प्रत्युत्तरों की तरफ ले जाती है। शिक्षण के लिए पूर्ववर्ती सामान्य दशा आवश्यकता की स्थिति या उच्च अभिप्ररेणा है।

उचित प्रतिउत्तर के अन्तिम चुनाव के लिए, शिक्षण परीक्षण और भूल के सिद्धान्त की ओर अग्रसर होता है। शिक्षण अक्सर चिन्तन की वह प्रक्रिया है जो प्रशिक्षण और अनुभव के परिणामस्वरूप नये परिवर्तित प्रतिउत्तर की तरफ ले जाती है। स्मृति पूर्व सीखी गयी बातों को याद रखती है। स्मृति से किसी घटना या तथ्यों की जानकारी होती है जिससे उस बीच जो पूर्व के विचार या अनुभव थे, उसके बार में हमें सोचने के लिए अतिरिक्त चेतना की आवश्यकता नही पड़ती।

अनुभूति वह संगठित प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम वस्तुओं की सही पहचान करते हैं जैसे वृक्षों, व्यक्तियों, मकानों, मशीनों या इसी तरह की अन्य वस्तुओं की। सामाजिक अनुभूति सामाजिक ज्ञान की विषय वस्तु है। दूसरों के बारे में हमारी सामाजिक अनुभूति मूलरूप से उन सूचनाओं पर आधारित होती है जो हम उनसे निष्कर्ष के रूप में प्राप्त करते हैं और उनके व्यवहार को उन कारणों के लिए उत्तरदायी मानते हैं। सामाजिक अनुभूति दूसरों के अवलोकन पर आधारित होती है।

रूढ़िगतविचार एक निश्चित विश्वास या भाव है जो समूह के सदस्यों एवं लोगों में होती है। प्रेरणा चालन एवं आकर्षण वाली शक्तियों की तरफ आकर्षित होती है जिसके परिणामस्वरूप स्थायी व्यक्ति को निश्चत लक्ष्य की ओर निर्देशित करता है। प्रेरणाओं व्यवहार के निरीक्षण का परिणाम हैं।

2.10 शब्दावली

फुसलाना : चापलूसी करना, झांसा ठगना।

अवसान : विराम, ठहराव।

प्रेरक : अभ्रिप्रेरणा का स्रोत, प्रबल प्रेरणा।

भोगी : सुखवादी, आनन्दवादी शारीरिक स्थिति।

समान शारीरिक स्थिति : साम्यशारीरिक दशा।

गति संवेदन : गतिबोधक स्थिति

मूक अभिनय : मूक शारीरिक अभिनय करना।

अभिग्राहक : ज्ञानेन्द्रिय

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

वैरोन आर. ए. एवं वैर्न डी. बी. (1987), *सोसलसाइकोलाजी, संस्करण,* प्रेन्टिसहाल (भारत) नई दिल्ली।

क्लिफोर्ड टी. मोर्गन रिचर्ड ए. किंग, जोह्न आर. विज, जोन स्कॉपल *इन्ट्रोडक्सन टू साइकोलॉजी* 11 वां पुनः मद्रण, 1999 टाटा मैकग्रा हिल पब्लिशिंग क. लि. नई दिल्ली।

हेनरी ई. गारनेट – *जनरल साइकोलाजी,* द्वितीय संस्करण प्रतिवेदन (1998) इउरेसिया पल्बिशिंग हाऊस प्रा. लि. रामनगर, नई दिल्ली।

सुप्रीत वालीवाल – *सोसालसाइकोलाजी,* प्रथमवार छपी 2002 आर वी. एस. ए. पब्लिशिंग, एसराम एस राजमार्ग, जयपुर।

जिम्वारडो पी. जी. एवं वेवर,ए, एल, (1997) *मनोविज्ञान,* हार्पर कोलिन्स कालेज पब्लिशिंग न्यूयार्क।

2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) बहुप्रतिउत्तर मानव शिक्षण के तीन मुख्य प्रकार होते हैं:

   (i) संवेदी चालक शिक्षण (ii) मौखिक शिक्षण (iii) प्रत्यय शिक्षण

   संवेदी चालक शिक्षण किसी वस्तु को प्राप्त करने में मुख्य रूप से प्रतिविम्बित चित्रांकन एवं अनुशरण शिक्षण को सहायता प्रदान करता है। इस विशिक्षण में पेशागत क्रियाओं में प्रभावपूर्ण होती है। ये पेशागत क्रियाएं ज्ञानेन्द्रियों द्वारा नियंत्रित हैं।

   मानव व्यवहार का अधिकांश भाग मौखिक शिक्षण के अंतर्गत आता है। मौखिक शक्षण की संख्या पैशीय दक्षता की अपेक्षाकृति काफी अधिक होती है।

   प्रत्यय शिक्षण, मानव शिक्षण का जटिल पहलू है। यह ऐसी मौखिक प्रतिक्रियाओं से सम्बन्धित है जिसमें एक श्रेणी की चीजों का सामान्य जाति नामों से जाना जाता है। चिन्तन के लए प्रत्यय शिक्षण अत्यधिक महत्वपूर्ण है। प्रत्यय निर्माण के बाद कोई उत्तेजक या उद्दीपक समूह किसी एक नाम से जाना जाता है। प्रत्यय शिक्षण उद्दीपन, वैयक्तिक विशेषताओं एवं प्रायोगिक प्रक्रिया पर आश्रित है।

बोध प्रश्न II

1) स्मृति के प्रमुख चार प्रकार होते हैं (i) संवदी पंजिका (ii) अल्पावधिक स्मृति (iii) पुनरावृत्ति एवं (iv) दीर्घावधि स्मृति।

   संवेदी वाहिका के संग्रह का कार्य संवेदी पंजिका के नाम से जाना जाता है। अधिकांश सूचनाएँ जो संक्षिप्त रूप में संवेदी पंजिका में रहती हैं। वे सामान्यतया पंजिका से नष्ट हो जाती हैं। हमें ध्यान देना पड़ता है और संवेदी पृष्ठ से कुछ सूचनाओं को पहचानना पड़ता है। जब हम ऐसा करते हैं तो प्राप्त की गई सूचनाएँ अग्रिम प्रक्रिया हेतु अल्पकालिक स्मृति में चली जाती हैं। अल्पवधि स्मृति वह स्मृति

है जो संवेदी पंजिका से सूचनाओं को प्राप्त कर 30 सेकेण्ड तक उन्हे रोकती है। सूचनाओं को रोकने की अवध कई कारकों पर निर्भर करती है। चूंकि अल्पावधि स्मृति की क्षमता इतनी कम होती है कि बहुत सी सूचनाएँ जो यहाँ इकट्ठी रहती हैं, नष्ट हो जाती हैं नष्ट होने से पूर्व उनमें से कुछ सूचनाएँ पुनः स्मरण हो सकती हैं और पुनः स्मरण होती हैं वरन उसी के समान दूसरी स्मृति अवस्था, दीर्घकालिक स्मृति में पुनरावृत्ति स्मृति के द्वारा चली जाती है। पुनरावृत्ति स्मृति की प्रक्रिया सूचनाओं के प्रकरण को संभवतः धीरे अथवा तेज आवृत्ति होती ही रहती है इसलिए विस्तृत पुनरावृत्ति अधिक सफलता प्राप्त करती है। चूंकि यह पुनरावृत्ति होती रहती है इसलिए विस्तृत पुनरावृत्ति में प्रचुर सामग्री और अर्थ सन्निहित रहता है। दीर्घाकालीन स्मृति की संग्रह क्षमता के समय का सही ज्ञान नहीं है। एक बार दीर्घकालीन स्मृति में सूचनाएँ एकत्र हो जाएँ तो यह उसके लिए अच्छा है।

2) अवबोधन वह संगठित प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम वरूतुओं को उनके सही नामों से पहचानते हैं। जैसे वृक्षों, व्यक्यिों, मकानों, मशीनों आदि को। प्रभाव को संचित नहीं किया जा सकता हैय वस्तृतः मस्तिष्क उसी की व्याख्या और आंकलन करता है जो वह ग्रहण करता है। किसी भी तस्वीर में हम वहीं चीज हूबहू नहीं देखते, और एक ही घटना को आयु, यौन, बुद्धि और अनुभव आदि के आधार पर हम भिन्न–भिन्न तरीके से वर्णन करते हैं। इस आधार पर प्रायः संवेदना और अनुभूति के बीच अन्तर किया जाता है कि संवेदना ज्ञानेन्द्रियों का प्राथमिक प्रतिउत्तर है जबकि अनुभूति उद्दीप्त वस्तु की अर्थपूर्ण जानकारी है। अनुभवों द्वारा संवेदना और अनुभूति की प्रक्रिया को अलग नहीं किया जा सकता है। अनुभूति कल्पना से कुछ भिन्न होती है। जो कुछ हम देखते हैं वह आंशिक रूप से प्रकृति के उद्दीपन एवं अधिकांश मात्रा में अपने आप पर निर्भर करता है। अनुभूति भूकाल के अनुभव के आलोक में वर्तमान परिस्थितियों की आकंलन शक्ति बन सकती है।

बोध प्रश्न III

1) प्रेरणा चालन एवं आकर्षण वाली शक्तियों की तरफ आकर्षित होती है जिसके परिणाम स्वरूप स्थाई व्यवहार व्यक्ति को निश्चित लक्ष्य की ओर निर्देशित करता है। प्रेरक व्यवहार के द्योतक हैं और ये हमें भविष्य के बारे में व्यवहार की भविष्यवाणी की अनुभूति प्रदान करते हैं।

2) जैविकीय प्रेरकों जैसे भूख, यौन और शेष प्रेरकों की उत्पति शारीरिक दशा के आधार पर होती है। ये प्रेरक शारीरिक समायोजन के असंतुलित होने से या शारीरिक दशाओं व दबाव के असमायोजन से कुछ निश्चित हार्मोन के कारण या संवेदी उद्दीपनों से पैदा होते हैं। भूख की प्रेरणा तक पैदा होती है जब शरीर में खून का स्तर एवं पोषकतत्वों का स्तर एक निश्चित बिन्दु से घट जाता है।

इकाई 3 प्रतिरक्षा तन्त्र

रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 प्रतिरक्षा तन्त्र के प्रकार

3.3 विभिन्न प्रतिरक्षा तन्त्र तथा उनके स्वरूप

3.4 सारांश

3.5 शब्दावली

3.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

यह इकाई प्रतिरक्षा तन्त्र के बारे में सामान्य परिचय तथा इनके स्वरूप आपके सम्मुख प्रस्तुत करेगी। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपः

- प्रतिरक्षा तन्त्र की प्रकृत को समझ सकेंगे;
- प्रतिरक्षा तन्त्र के प्रकारों को जान सकेंगे; और
- विभिन्न प्रतिरक्षा तन्त्रों के स्वरूपों का विश्लेषण कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

हम लोग प्रायः पर्यावरणीय या व्यक्तिगत अवरोधों का जीवन में सामना करते रहते है जिसके कारण दुश्चिंता होती है और उससे हम पर दबाव पड़ता है। मनोवैज्ञानिकों ने का विभिन्न दबावों को कुण्ठा, संघर्ष, तथा तनाव आदि नामों से इंगित किया है। हमको दुश्चिन्ता तथा दबाव से सुरक्षित रखने के लिए हमारा अहं एक युक्ति सुनिश्चित करता है जिसे प्रतिरक्षा तन्त्र के रूप में जाना जाता है। प्रतिरक्षा तन्त्र तथ्यात्मक नहीं होता तथा अचेतन स्तर पर कार्य करता हैं। जब कोई इसका उपयोग करता है तो इसके प्रति । जागरुक नहीं होता। प्रतिरक्षा तन्त्र द्वारा दुश्चिंता एवं दबाव के विरूद्ध लड़ने की स्वस्थ तीर विधि नहीं है क्योंकि समस्याओं के प्रति यह अतथ्यात्मक दृष्टिकोण है। अगर प्रतिरक्षा तन्त्र जल्दी जल्दी उपयोग किया जाता है तो इससे गम्भीर मनोवैज्ञानिक विकास हो जाता है। दबाव की गम्भीरता व्यक्ति के व्यक्तित्व, परिस्थितियाँ, सन्दर्भ, अवधि, महत्व, आवश्यकता के नानात्व, शक्ति तथा संघर्षरत शक्तियों की मात्रा, भावी दबाव की विद्यमानता, समस्या की अज्ञानता एवं आकस्मिकता, सतस्या का प्रत्यक्षीकरण, व्यक्ति की दबाव के प्रति सहनशीलता तथा वाह्य संसाधनों तथा समथर्न इत्यादि पर निर्भर करता है। हमारे जीवन में बदलाव तब स्वरूप धारण करता है तब हम पति/पत्नी या किसी सम्बन्धी या निकट मैत्री, वैवाहिक पृथक्कता, व्यक्तिगत जख्म, रोग, विवाह, सेवानवृति, व्यवसाय में परिवर्तन, गिरवी रखना या उधार लेना, पति/पत्नी या परिवार के मुखिया के साथ मतभेद या भिन्नता, प्रेमिका का घर से जाना, सास ससुर के साथ कठिनाई, उच्चस्तरीय व्यक्तिगत प्राप्तियाँ व्यवसाय या पत्नी से सम्बद्धता या विलगाव, विद्यालय में भर्ती होना या छोड़ना, मनोविज्ञान के मूलतत्व रहन सहन की स्थिति में परिवर्तन या आवास अथवा विद्यालय में परिवर्तन, व्यक्तिगत आदतों में

परिवर्तन, उच्च अधिकारी के साथ कठिनाई, धर्म में परिवर्तन, मनोरंजनात्मक या सामाजिक क्रियाकलाप, अवकांश, या सामाजिक समाकलन इत्यादि द्वारा समझी जा सकती है।

3.2 प्रतिरक्षा तन्त्रों

के प्रकार मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रतिरक्षा तन्त्र को विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया है। उनमें से कद मनोवैज्ञानिक प्रतिरक्षा तन्त्र को 5 या 6 मुख्य वर्गों में रखते है जबकि कछ दूसरे इन्हे 17–18 वर्गों में विस्तृत करते हैं। प्रतिरक्षा तन्त्र को आत्म–निःमूयांकन, दृचिन्ता, कष्ट तथा आदतों के स्तर पर स्वचालन के लिए समझा और आयोजित किया जाता है। प्रायः प्रतिरक्षा तन्त्र अकेले के बजाय समेकित एवं विरूपण के प्रभाव से समबद्ध होता है प्रायः प्रतिरक्षा तन्त्र अकेले के बजाय समेकित रूप में प्रयोग किया जाता है। अधिकतर कार्य अनुस्थपित व्यवहार के साथ जुड़े होते हैं। बहुत अधिक सीमा तक वे हार के प्रभाव को कम करने, दुश्चिन्ता दूर करने महत्वपूर्ण उपयुक्तता व योग्यता की भावनाओं को हल करने और सुरक्षित रखने के लिए अनिवार्य होता है। सामान्यतः ये समायोजन की प्रतिक्रियाएँ होती हैं लेकिन कभी–कभी वे गम्भीर रूप से दबाव के प्रभावशाली प्रस्ताव के साथ हस्तक्षेप करती हैं। प्रतिरक्षा तन्त्र नकारात्मक या सकारात्मक रूप में प्रदर्शित हो सकता है।

मुख्य प्रकारों की प्रतिरक्षा तन्त्रों की सूची निम्न प्रकार हैं :

i) प्रक्षेपण

ii) प्रतिक्रया निर्धारण

iii) प्रत्यावर्तन

iv) दमन

v) युक्ति सम्मतकरण

vi) वास्तविकता अस्वीकरण

vii) काल्पनिकता

viii) स्थानापन्न

ix) सांवेगिक रोधन

x) एकांतीकरण बौद्धिकीकरण बद्ध

xi) अकर्मण

xii) तादात्मीकरण

xiii) अन्तःक्षेपण

xiv) क्षतिपूर्ति

xv) अभिनय

xvi) चयनित विस्मरण

xvii) नकारात्मकता तथा

xviii) उदात्तीकरण

3.3 विभिन्न प्रतिरक्षा तन्त्र तथा उनके स्वरूप

अब हम विभिन्न प्रकार की प्रतिरक्षा तन्त्र पर उनके स्वरूप सहित प्रकाश डालेंगे।

i) प्रक्षेपण

प्रक्षेपण मानव व्यवहार में महसूस की जाने वाली एक सामान्य प्रवृत्ति हैं जिसका इरादा अहं संरक्षण है। प्रेक्षपण के अन्तर्गत कोई व्यक्ति अपनी कमियों, त्रुटियों, कुकर्मों, अमान्य संवेगों, विचारधराओं और इच्छाओं का उत्तरदायी दूसरों को मानता है। बहम् की रक्षा के लिए मानव व्यवहारों में अधिकतर प्रवृत्ति प्रक्षेपण की पाई जाती है। यदि एक छात्र परीक्षा में अनुत्तीर्ण होता है तो वह अध्यापकों की निम्नस्तरीय अध्यापन क्षमता तथा उनके अनुचित व्यवहार को दोषी ठहराता है। विद्यालय से भागने वाले बच्चे तथा बाल अपराधी अपनी उपेक्षा, अस्वीकरण या अपनी समस्याओं के निम्न आंकलन का दोषी अपने मानता–पिता को मानते हैं। प्रायः जीवन–रहित वस्तुओं को दोष दिया जाता है। यदि कोई छोटा बच्चा साइकिल से गिर जाता है तो वह साइकिल को ठोकर मारता है। यदि कोई खिलाड़ी फिसलकर गिर जाता है जो वह लौटकर फिसलने के स्थान को देखता है और यह प्रदर्शित करता है कि उसके फिसलने का कारण वह स्थान था।

इसके अति–आधिक्य की स्थिति में एक व्यक्ति अपने आपमें यह विश्वास कर सकता है कि अन्य लोग उसके विरूद्ध षड़यन्त्र रच रहे हैं जिससे उत्पीड़न की भ्रांति विकसित हो सकती है। प्रक्षेपण सम्बन्धी प्रतिरक्षा तन्त्र की अन्य प्रतिक्रियाओं में उसकी अस्वीकरण योग्य इच्छाओं की गुणात्मकता तथा उनके लिए विकल्प पर विचार करने की प्रतिक्रिया हो सकती है। यह प्रवृत्ति उनमे सामान्य रूप से पाई जाती हैं जो कट्टर नैतिक मूल्यों तथा सचेत विकास के प्रति कठोर होते हैं। उदाहरणार्थ यदि कोई व्यक्ति किसी लड़की के आकर्षण का पात्र है तो वह जोर देकर कह सकता है कि लड़की का व्यवहार उसके प्रति शामक प्रकृति का है। परिणामस्वरूप लड़की अक्रामक हो सकती है जबकि व्यक्ति अपनी अस्वीकरण योग्य भावनाओं के प्रति पूर्णतः अजागरूकता के लिए आश्वस्त हो जाता है।

ii) प्रतिक्रिया निर्धारण

जब कोई व्यक्ति दमन के विरूद्ध सचेत मनोवृत्ति तथा व्यवहार प्रतिमानों के विकास के माध्यम से अपने आप की खतरनाक इच्छाओं से रक्षा करता है, तो वह प्रतिक्रिया निर्धारण का उपयोग करता है। इन परिस्थितियों में वह प्यार के प्रति अपनी घृणा, सहृदयता के प्रति क्रूरता, नैतिकतापूर्ण यौन सम्बन्धी मनोवृत्ति के प्रति यौन स्वैरता को छुपाता है। इस प्रकार वह अवरोध और बाधाएँ उत्पन्न करता है जो उसके प्रत्यावर्तन को बल देते हैं उसकी वास्तविक इच्छाएँ एवं भवनाएँ सचेत जागरूकता से रखी जाती हैं। प्रतिक्रिया निर्धारण सामाजिक रूप से स्वीकृत व्यवहार के साथ समायोजन बनाए रखने तथ आत्म अवमूल्यन की इच्छा के भय के प्रति जागरूकता को दूर से सहायता करता है। इस युक्ति में सचेत नियन्त्रण नहीं होता जिसके कारण व्यक्ति में अत्यन्त अधिक तथ विश्वास संबंधी भय विकसित हो जाता है। प्रतिक्रिया गठन व्यक्ति को सामाजिक रूप से स्वीकृत आचरणों एवं आत्म अतमूल्यन इच्छाओं में डर के बारे में जागरूकता में मदद करता है। उदाहरण के लिए एक औरत जिसका अवांछित' बच्चा है, सार्वजनिक रूप से बच्चे के प्रति अत्यधिक स्नेह का प्रदर्शन करती है।

iii) प्रत्यावर्तन

प्रत्यावर्तन एक प्रतिरक्षा तन्त्र है जो प्रत्यावर्तित व्यवहारको उत्पन्न करता है। परिवार में नए बच्चे के जन्म से, बड़े बच्चे के प्रति माता/पिता की चेतना कम हो जाती है परिणामस्वरूप

बड़े बच्चे के प्रत्यावर्तन के रूप में बिस्तर भिगोना तथा अन्य शैशवकालीन व्यवहार करना प्रारम्भ हो जाता है ताकि माता/पता का आकर्षण प्राप्त कर सके। जीवन में निर्भर से आत्म निर्भर होना बहुत सरल नहीं है, इसी कारण अधिक दबाव या कठिन चुनौतियों के दौरान व्यक्ति किसी प्रकार का अपरिपक्व स्तर का समायोजन करता है प्रत्यावर्तन में व्यक्ति वास्तविकता से दूर हो जाता है और ऐसा व्यवहार प्रदर्शित कर सकता है जो सामान्यतः ऐसे व्यक्ति से अपेक्षित नहीं होता। गंभीर तनाव या कठिन चुनौतियों के दौरान व्यक्तियों में समायोजन की कुछ हद तक अपरिपक्व स्तर को पीछे हटाना। उदाहरण के लिए मालिक द्वारा डाटे जाने पर रोकना एवं चिल्लाना।

iv) दमन

जब कोई व्यक्ति अपने चेतन से कष्टदायक विचार निकाल देता है, तो वह दमन का उपयोग करता है। प्रायः यह चयनित विस्मरण के रूप में माना जाता है। व्यक्ति जिस बात का दमन करता है। प्रायः सचेत जागरूकता में सम्मिलित करने से अस्वीकार करता है, यह वास्तव में विस्मरित नहीं होता। यदि कोई व्यक्ति अपने प्रिए मित्र या किसी परिजन को किसी दुर्घटना को परिणामस्वरूप आकरिमक मृत्यु देखता है, यह कष्टकारी अनुभव चेतना में सम्मिलित नहीं किया जाता तो यह अनुभव उसे विस्मृति से ग्रस्त कर देता है। दमन व्यक्ति के सचेत अभिप्राय या जागरूकता के बिना घटित होता है। निरोध में व्यक्ति अपने चौतन्य से निर्णय लेता है कि वह अपी भावना को व्यक्त न करे तथा कष्टदायक घटना पर विचार अनुभवों से अहम् की तब तक सुरक्षा की जाती है जब तक वह आघात पहुँचाने के सन्दर्भ में निष्क्रिय न हो जाए। यह प्रतिरक्षा तन्त्र आघात–पीड़ित व्यक्ति को ऐसी इच्छाओं पर नियंत्रण रखने में सहायता प्रदान करती है जो उसे स्वीकार नहीं है अथवा उसकी शक्ति के लिए खतरनाक है। कभी–कभी यह ऐसी दुश्चिंता को निष्क्रिय करती है जो उसे स्वीकार नहीं होती अथवा खतरनाक होती है। दमन भिन्न–भिन्न अंशों में अन्य रक्षा युक्तियों के साथ सम्मिलित पाया जा सकता है। जब दमन रक्षा युक्ति असफल हो जाती है, अहम् अधिक कुअनुकूलित रक्षणों का प्रयोग करता है।

v) युक्ति सम्मतकरण

जब कोई व्यक्ति असत्य तर्क द्वारा अपने कुअनुकूलित व्यवहार को न्यायोचित सिद्ध करता है अथवा अच्छे अभिप्रेरकों के लिए अर्जित करता है, जो इसे प्रोत्साहित नहीं करते, तो इसे युक्ति सम्मतकरण कहते हैं। सम्मकरण प्रतिरक्षा तन्त्र में दो मुख्य त्रुटिपूर्ण मूल्य होते हैं, वे हैं –

क) यह निश्चित विशिष्ट व्यवहार को न्यायोचित सिद्ध करने में सहायता करते हैं, तथा

ख) अप्राप्त उद्देश्यों से सम्बन्धित निराशा के प्रभाव को कम करने में योगदान देती है।

जब सम्मतकरण प्रतिरक्षा तन्त्र का उपयोग किया जाता है व्यक्ति ऐसे तार्किक एवं सामाजिक रूप से अनुमोदित कारणों पर विचार करता है जो उसके व्यवहार को न्यायोचित सिद्ध करने के पक्षधर हों। यद्यपि जानता है कि उसकी क्रियाएँ अनैतिक एवं अकारण है, फिर भी वह अपने सम्मतकरण को अपने आपके लिए तथा दूसरों के लिए सिद्ध करना चाहता है कि उसकी क्रिया तार्किक, सामान्यतः स्वीकृत तथा इच्छाओं के पूर्ण न होने की स्थिति में अपनी निराशा को कम करने के लिए कर सकता है। सम्मतकरण प्रतिरक्षा तन्त्र का एक सर्वमान्य सउदाहरण 'सोर ग्रेप्स'' (Sour Grapes) प्रतिक्रिया है। एक लोमड़ी जो अंगूर के गुच्छे तक पहुँचने में असफल थी, निर्णय लिया कि वह उन्हें नहीं खाना चाहती क्योंकि सम्भवतः वे खट्टे हैं। इसी प्रकार अनेक बार छात्र अपने निम्न स्तरीय कृत को इस प्रकार न्यायोचित सिद्ध करते हैं कि वे समाज की प्रतिस्पर्धात्मक चूहा दौड़ में अपने आप

सम्मिलित नहीं होते। कभी–कभी निश्चित उद्देश्य प्राप्त करने में असफलता इस बात का वर्णन करके समाप्त की जाती है कि उद्देश्य अपने आप में उपयोगी नहीं था। यह कहना कठिन है कि कहाँ उद्देश्य पर विचार करना या वास्तविक का अन्त होता है और सम्मतकरण प्रारम्भ होता है। निम्नलिखित व्यवहार सम्मर्तकरण को इंगित करते है–

क) व्यवहार को न्यायोचित सिद्ध करने के लिए कारणों की खोज,

ख) असंगति या विरोधाभास को मान्यता देने के प्रति अयोग्यता, तथा

ग) जब व्यक्ति का तर्क स्वीकार नहीं किया जाता या उस पर प्रश्न किए जाते हैं तो विक्षिप्त होना।

कुछ समय के लिए यहाँ रूकिए जो अब तक आपने अध्ययन किया है उसके साथ अपनी संबद्धता का आँकलन कीजिए।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) प्रतिरक्षा तन्त्र क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रतिरक्षा तन्त्र के प्रकार क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) किसी एक प्रकार के प्रतिरक्षा तन्त्र का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

अब हम अन्य रक्षातन्त्र के बारे में ज्ञानार्जन के लिए तैयार हैं।

iv) वास्तविकता अस्वीकरण

वास्तविकता अस्वीकरण अथवा तथ्यों से इनकार करना अत्यन्त प्राचीन प्रतिरक्षा तन्त्र है तथा सम्भवतः सबसे सरल भी है। इसके अन्तर्गत, व्यक्ति उन वास्वविकता तथ्यों को दृष्टि में नहीं लेता या उसे स्वीकार करने से इनकार करता है जो उसे स्वीकार नहीं होता या मनोविज्ञान के मूलतत्व जिससे वह सहमत नहीं होता। यदि व्यक्ति कष्टदायक विषय के दबाव का आभास करता है वह उससे दूर हट जाता है। इस प्रतिरक्षा तन्त्र के अन्य स्वरूप पीड़ा की स्थिति से लड़ते समय अर्द्धमूर्छित हो जाना, आलोचना को स्वीकार न करने के लिए यह प्रदर्शित करना कि वह अन्य कार्यों में व्यस्त है, वैवाहिक जीवन, बच्चों के लालन पालन व कार्य की परिस्थितियों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान हेतु समय न निकालना। इस प्रकार की रक्षात्मक प्रतिक्रिया पीड़ा की स्थिति के पूरी तरह से प्रभावशाली होने में अस्थाई शमन (सहायता) प्रदान करती है।

vii) काल्पनिकता

जब कोई व्यक्ति कुण्ठा की स्थिति पर अधिपत्य जमाने के लिए केवल कल्पना में अपनी आवश्यकता की पूर्ति करता है या कोई उद्देश्य प्राप्त करता है तो उसका अहम् काल्पनिकता की प्रतिरक्षा तन्त्र का व्यवहार करता है। एक अवास्तविक इच्छा को बड़ा अगुआ माना जा सकेगा या एक प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी या एक शारीरिक खिलाड़ी या अत्यन्त प्रशंसनीय प्रदर्शन की फिल्म काल्पनिकता के कुछ स्वरूप हैं। इसका उपयोग करके कोई व्यक्ति अपने को विजेता, सक्षम, शक्तिशाली तथा आदरणीय होने का आभास कराता है। कल्पनाएँ, व्यक्ति और कार्य को निवारक के मार्ग के रूप में कुछ क्षमिपूरक सहायता प्रदान करती है।

viii) स्थानापन्न

के स्थानापन्न के अन्तर्गत कोई व्यक्ति अपनी आक्रोश व चिन्ता की भावनाओं को उस वास्तविक व्यक्ति से स्थांनान्तरित करता है जिस व्यक्ति के कारण ऐसा हुआ है। प्रायः स्थानापन्न कठिन सांवेगिक परिस्थितियों में प्रयोग किया जाता है। कार्यस्थल पर हुए कष्टदायक अनुभव के फलस्वरूप घर में पति/पत्नि के साथ चिड़चिड़ापन एवं झगड़ होना स्थानापन्न का उदाहरण है। कभी–कभी व्यक्ति अपने आपको अत्यधिक आत्म अपेक्षाओं में व्यस्त रखता है तथा अत्यधिक पाप की भावना और आत्म–निम्न–मूल्यांकन करता है। ऐसी प्रतिक्रिया व्यक्ति को खतरनाक आक्रोश को व्यस्त करने तथा उदासीन होने या आत्मघात करने से सुरक्षित रखती हैं।

जब स्थानापन्न लक्षणात्मक सम्बद्धता की प्रक्रिया से गुजरता है तब अत्यधिक जटिल एवं विचलित हो जाता है। जटिल भावनाओं को निकलने के लिए सामान्यतः पसीना निकलने का उपयोग होता है। आक्रोश व्यक्त करने की एक छुपी हुई विधि विघटनकारी आलोचना एवं बातचीत करना है।

ix) सांवेगिक रोधन

लोग अनेक निराशा और कुण्ठाओं का जीवन में सामना करते हैं तथा उनके माध्यम से अपने पूर्वाभास को प्रतिबन्धित करके सक्षमता विकसित करते हैं। वे किसी घटना के लिए बहुत अधिक आशावादी नहीं हो जाते तथा अपरिपक्व जश्न मनाने के सम्बन्ध में सावधानीपूर्वक दूरी रखते हैं। यह सांवेगिक रोधन है। जो व्यक्ति आदरणीय स्तर के लिए आगे देखता है अपने आपको बहुत उत्तेजित नहीं करता या इस भय से प्रोत्साहित नहीं होने देता कि कहीं वह बात उससे दूर न हो जाए। अति की स्थिति में जहाँ कुण्ठा भली–भाँति दीर्घाकालीन हो जाती है व्यक्ति आशा छोड़ सकता है तथा एक प्रतिबन्धित जीवन का मार्ग अपनाता है। इस प्रकार का व्यक्तित्व अपने आपमें आशावादी अभिवृत्ति विकसित करके तथा अपने लिए स्वास्थयवर्धक वस्तुओं को अत्यन्त कम प्राप्त करके विद्यमान कुण्ठा के

कडुएपन से अपनी सुरक्षा करता है। किसी सीमा तक सांवेगिक रोधन अनावश्यक निराशा के विरूद्ध सुरक्षा का महत्वपूर्ण साधन है। हम प्रायः जीवन में अवसर लेते हैं तथा पूर्व में अनुभूत कष्ट के दोबारा होने के विरूद्ध सुरक्षात्मक तथा निवारक विधि के रूप में सांवेगिक रोधन प्रतिरक्षा तन्त्र का उपयोग करके कुछ खतरनाक क्रियाओं में सक्रिय भागीदारी करते हैं। इस रक्षा युक्ति का प्रयोग करके व्यक्ति जीवन में कठोर तथा स्वस्थ्यवर्धक भागीदारी को कम करता है।

x) प्राज्ञीकरण

यह प्रतिरक्षा तन्त्र दोनों सांवेगिक रोधन तथा युक्ति सम्मतकरण से सम्बन्धित होता है। कोई व्यक्ति दबावपूर्ण सांवेगिक प्रक्रिया को दूर करने के लिए तार्किक प्राज्ञीकरण द्वारा आरामदायक भावना से दबाव को कम कर सकता हैं कि उसने भरा–पूरा जीवन व्यतीत किया या अन्तिम दिनों में बिना कष्ट झेले तर गया । अपनी पाप की भावना को कम करने की दिशा में वह दसरों की कमियों को देखता है। प्राज्ञीकरण अत्यधिक दबाव की स्थिति साथ ही साथ जीवन में नाममात्र दबाव की स्थिति का सामना करने में उपयोग किया जा सकता है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) वास्तविकता–अस्वीकरण की प्रकृति का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) काल्पनिकता एवं स्थानापन्न के बीच तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) प्राज्ञीकरण (बौद्धिकरण) का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

अब अन्य प्रकारों की की ओर अग्रसर हों।

xi) अकर्मण

अकर्मण यन्त्र का उपयोग, सामाजिक रूप से अस्वीकृत क्रियाओं, भावनाओं, व्यक्तीकरण तथा विचारों को प्रभावहीन बनाने के लिए किया जाता है। अपनी गलतियों की क्षमा याचना, दण्ड को सहन करना, पूर्व में किसी अमान्यकृत को स्वीकार करना या दुःख व्यक्त करना अकर्मण के विभिन्न प्रकार हैं। अकर्मण व्यक्ति के प्रारम्भिक जीवन में तब विकसित होता है तब वे सामाजिक प्राणी बनने का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। प्रारम्भिक जीवन में इसे असामाजिक व्यवहार तथा गलत कार्य कानते हैं, जिसे नजरअन्दाज या भुला दिया जाता है, इसे क्षमा याचना करने या दण्डित किए जाने से सीखते हैं। जीवन की इस प्रारम्भिक अवस्था में अपने गलत कार्यों के लिए प्रायश्चित करने, अपन व्यक्तितत्व में सुधार करने या उन्हें दूर करने की विधियाँ सीखता है।

ऐसी विधियाँ सामयिक रूप से अहम् को अस्वस्थ्य सुरक्षा प्रदान करती हैं। किसी अविश्वसनीय पति द्वारा पत्नी को मूल्यवान परितोषक देना या किसी अनैतिक व्यक्ति द्वारा धार्मिक कारणों के लिए एक बड़ी राशि दान स्वरूप देना, प्रायश्चित के उदाहरण हैं। स्वीकारोक्ति का प्रावधान तथा विभिन्न धर्मों के क्षमा करने में विश्वास व्यक्ति को पाप करने की भावना तथा कुछ नया प्रारम्भ करने में सहायता करता है। अकर्मण प्रतिरक्षा तन्त्र के बिना ही अपनी क्रियाओं में सुधार के द्वारा अपनी पाप करने की भावना को कम करता है।

xii) तादात्मीकरणावन

तादात्मीकरण योग्यता की भावना तथा आत्म अवमूल्यांकन की सुरक्षा के लिए एक प्रतिरक्षा तन्त्र के रूप में उपयोग किया जा सकता है। यह प्रक्रिया बाल्यावस्था के दौरान, जब बच्चा अपने बड़ों को आदर्श के रूप में मानता है, निर्मित होती है। विकसित हो रहा बच्चा अपने बाल्काल के दौरान यह जानता है कि वह दूसरों द्वारा जिस किसी भी तरीके से मूल्यांकित किया जाए इसका आधार उसका परिवार और प्राथमिक समूह निर्भर होता है। जब एक बच्चा किशोरावस्था या प्रौढ़ावस्था में पहुँचता है उसकी तादात्मीकरण की क्षमता विकसित होती है तथा इसके अन्तर्गत व्यक्तित्व के विस्तृत क्षेत्र आते हैं। जहाँ एक तरफ समाज व्यक्ति को समूह सदस्यता के प्रकाश में मूल्यांकित करता है। प्रायः कर्मचारी कम्पनी की शक्ति एवं मर्यादा से तादात्म करता है जिसमें वे कार्यरत है तथा छात्र उस विद्यालय से जिसमें वे पढ़ते हैं। ऐसा करने से, किसी सीमा तक, वे जिस समूह से सम्बन्धित होते हैं उसकी शक्ति व मर्यादा के अंग होने की इच्छा की पूर्ति करते हैं। तादात्मीकरण उनके लिए महत्वपूर्ण है जो सहायता तथा सुरक्षा के लिए अपने को आधारभूत रूप से हेय महसूस करते हैं।

xiii) अन्तःक्षेपण

अन्तःक्षेपण एवं तादात्मीकरण अन्तर्सम्बन्धित होते हैं। एक प्रतिरक्षा तन्त्र के रूप में अन्य के मूल्यों एवं आदर्शों को अपने जैसा मानते हैं यहाँ तक कि जब वे उसकी पूर्व मान्यताओं के विरूद्ध होते हैं। सरकार के स्वरूप में कमी और परिवर्तन के पश्चात् लोग नई सरकार के मूल्यों एवं विश्वासों से इस रूप में अन्तःक्षेपण करते हैं जिससे उनकी सुरक्षा हो सके और ऐसा व्यवहार नहीं करते जो समाज में उनके अस्वीकरण एवं न्दिा का कारण बने । जब कोई व्यक्ति अपना धर्म परिवर्तन करता है वह नए धर्म के मूल्य एवं विश्वास को स्वीकार करता है। अन्तःक्षेपण कुअनुकूली व्यवहार की सीमा तक जा सकता है तथा आक्रामक के साथ तादात्मीकरण रुप में संदर्भित हो सकता है। यह एक सुरक्षा प्रतिक्रिया है जिसमें यह अवधारणा निहित होती है कि यदि कोई व्यक्ति अपने शत्रु पर विजय नहीं प्राप्त कर पाता तो प्रसन्नता से उसके साथ सम्मिलित हो जाये।

xiv) क्षतिपूर्ति

यदि कोई व्यक्ति वास्तविक या काल्पनिक व्यक्तिगत या क्षीणताओं या हीनता या अपर्याप्तता का आभास करता है तो रक्षा स्वरूप धारण कर सकती है और रचनात्मक कार्य अनुस्थगित या विमर्शरूपी हो सकती है। शरीरिक विकलांगता पर विजय पाने के लिए संघृत प्रयास तथा अभ्यास क्षतिपूर्ति का उदाहरण है। क्षतिपूरक प्रतिक्रिया या व्यवहार अप्रत्यक्ष होते हैं, लोग त्रुटि के लिए विकल्प का प्रयास करते हैं। प्रायः शारीरिक अनाकर्षक व्यक्ति सुखात्मक व्यक्तित्व विकसित कर सकता है या शारीरिक रूप से क्षीण व्यक्ति एक अच्छा विद्वान बन सकता है बजाय इसके कि एक शारीरिक खिलाड़ी। सभी क्षतिपूरक प्रतिक्रियाएँ वांछित नहीं होती। कभी–कभी कुण्ठित एवं अस्वीकृत व्यक्ति खाने के सम्बन्ध में गलत आदत विकसित कर लेता हैं। असुरक्षित इस प्रकार व्यवहार करते हैं कि वे माता–पिता एवं परिवार के सदस्यों का आकर्षण प्राप्त कर सकें। कभी–कभी लोग दूसरों को अपने से नीचा सिद्ध करने के लिए आलोचना करते हैं। अति आधिक्य की स्थिति में कोई व्यक्ति अपने आप को समाज विरोधी व्यवहार या अचेतन स्तर पर एक्सेन्ट्रीसिटी विकसित कर लेते हैं और दूसरों का आकर्षण एवं रुचि प्राप्त करने के लिए चेष्टा करते हैं।

xv) अभिनय

अभिनय द्वारा की गई प्रतिक्रिया के माध्यम से व्यक्ति एवं दुश्चिंता एवं तनाव को कम है। करता है जो उसकी घातक इच्छाओं के सम्बद्ध होती है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा आभास करता है कि उसके साथ अनुचित व्यवहार किया गया है या उसके साथ कुछ पक्षपात किया गया है तो वह जिस व्यक्ति को ऐसा करने का उत्तदायी समझता है उसके प्रति शारीरिक रूप से हिंसक हो जाता है। अभिनय करने की स्थिति ऐसे मामलों में देखी जा सकती है जहाँ सम्पत्ति को क्षति या विघटन का मामला होता है। हममें से अधिकांश अपने जीवन के अनुभव में देखते हैं कि सक्रिय दबाव या संघर्ष के कारण इस स्तर पर तनाव एवं दुश्चिंता हो जाती है कि उसको समाप्त करने के लिए किसी भी प्रकार के कार्य का स्वागत किया जाता है। कई बार अभिनय कुछ ही क्षणों के लिए तनाव एवं दुश्चिंता को कम करता है जिससे अभिनय का पूर्ण उद्देश्य प्राप्त नहीं होता। कुछ परिस्थितियों में अभिनय सामाजिक रूप में अमान्य, व्यक्तिगत आहत, दण्ड या विपरीत परिणामों के अनुसार कार्य करते हैं।

xvi) चयनित विस्मरण

अवांछित एवं कष्टदायक विचारों को भुलाकर उनसे दूर भागना उनकी उपेक्षा करना मजाक चयनित विस्मरण प्रतिरक्षा तन्त्र है। इस रक्षायुक्ति में अरुचिकर तथ्य या अवधारणाएँ चेतना से से ओझल हो जाती है। इस प्रतिरक्षा तन्त्र का कोई विपरीत प्रभाव इसलिए नहीं पड़ता क्योंकि ऐसा सामान्य विस्मरण में भी पाया जाता है। कठिन परिस्थितियों के समाप्त हो जाने के उपरान्त चयनित विस्मरण प्रतिरक्षा तन्त्र समाप्त हो जाती है तथा व्यक्ति की स्मरणशक्ति सदृश्य रूप में वापस आ जाती है।

xvii) नकारात्मकता

किसी घटना को स्पष्ट रूप से न करना अहम् की इस प्रतिरक्षा तन्त्र के अन्तर्गत आता है यद्यपि यह स्वरूथ दिशा में नहीं माना जाता। जब व्यक्ति संघर्ष से प्रत्यक्ष निपटने में अक्षम हो जाता है तथी यह प्रक्रियात्मक स्थिति उत्पन्न होती है। सामान्यतः यह कार्यस्थल पर होता है। जो व्यक्ति इस रक्षायुक्ति का प्रयोग करता है वह किसी संघर्ष की स्थिति में सहायता करने से उस समय मना कर देता है जब संघर्ष के समय उसे बुलाया जाता है। ऐसा असफलता के भय के कारण होता है।

xviii) उदात्तीकरण

असफलता के मामले में, किसी संवेग के लिए प्रत्यक्ष संतुष्टि प्राप्त करने के लिए व्यक्ति सामाजिक रूप से स्वीकृत साधनों द्वारा संतुष्टि प्राप्त करने का प्रयास करता है। यह प्रक्रिया उदात्तीकरण के रूप में जानी जाती है। सामाजिक कारकों एवं अन्य सदंमनों के कारण प्रत्यक्ष एवं सरल रूप से यौन संतुष्टि संभव नहीं होती और इस दबा दिया जा सकता है। यदि संदमित भावनाओं की भली–भांति व्यवस्था नहीं की जाती या उन्हें निकाला नहीं जाता तो वे मानसिक विक्षिप्ति का कारण बन सकती है। संदभित भावनाओं को सामाजिक रूप से स्वीकृत साधनों द्वारा निकालना या समाप्त करना ही उदात्तीकरण है। शीघ्र आक्रोश में आने वाला व्यक्ति अपनी अवांछनीय प्रकृति को प्रवाहित करने के लिए अपने को भारी शारीरिक श्रम जैसे कृषि, बागवानी, लकड़ी का कार्य आदि में लगा सकता है। कभी–कभी उदात्तीकरण प्रतिरक्षा तन्त्र द्वारा व्यक्ति सकारातमक प्रक्रिया करता है तथा अपनी दमित भावनाओं को कला के प्रशासनिक कृतों द्वारा स्वरुप प्रदान करता है। उदात्तीकरण आत्म उत्पादकता प्रक्रिया है।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) क्षतिपूर्ति प्रतिरक्षा के निहित स्वरूप का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) तादात्मीकरण की परिचय से तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) उदात्तीकरण का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 सारांश

दुश्चिन्ता एवं दबाव के प्रभाव से हमारी सुरक्षा के लिए हमारा अहम् युक्तियों को सुनिश्चित करता है जो प्रतिरक्षा तन्त्र कहा जाता है। ये तथ्यात्मक नहीं होता तथा अचेतन स्तर पर कार्य करता है। सामान्यतः ये कई प्रतिरक्षा तन्त्र एक साथ कार्यरत होता हैं। ये असफलता के प्रभाव को हलका, दुश्चिन्ता एवं हीनता को घटाता है तथा अपर्याप्तता की भावना से रक्षा करता है। सामान्यत ये समायोजनात्मक प्रतिक्रियाएँ हैं तथा सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है।

हमने इस प्रकार के कई प्रतिरक्षा तन्त्रों का अध्ययन किया है। इस प्रकार के प्रतिरक्षा तन्त्र की जानकारी समाजकार्य व्यवहार में विशेषकर समस्या समाधान एवं उपबोधन के क्षत्र में सहायक हो सकता है। इन प्रतिरक्षा तन्त्र पर पुनः दृष्टिपात करना उपयुक्त प्रतीत होता है।

दूसरों पर आरोप लगाना या कठिनाई उत्पन्न करना प्रक्षेपण है। हानिकारक इच्छाओं को प्रतिरोधी मनोवृत्ति एवं व्यवहार द्वारा व्यक्त करने से रोकना तथा उन्हें अवरोध के रूप में उपयोग करना "प्रतिक्रिया निर्धारण है। कम परिपक्व अनुक्रियाएं तथा निम्नस्तरीय अपेक्षाओं को सन्निहित करते हुए पूर्व विकासात्मक स्तर को पुनर्स्थापित करना प्रतिगमन है। कष्टदायक विचारों को चेतना में आने से रोकना दमन'' है। किसी व्यवहार को न्यायोचित सिद्ध करने तथा आत्म और समाज के लिए उपयोगी होने का तर्क देने का प्रयास "युक्ति सम्मकरणश है। "वास्तविकता अस्वीकरण'' आत्म को असुखदायी तथ्यों से वा बचाने के लिए उनको ग्रहण करने या जूझने से इनकार करना ह। कुण्ठित इच्छाओं की काल्पनिक प्राप्तियाँ श्काल्पनिकताश है। आक्रोशपूर्ण भावनाएँ जैसे विरोध/शत्रुता को उनसे कम खतरनाक विषयों के प्रति व्यक्त किया जाना जिसने प्रारम्भ में संवेग उत्पन्न किया था, को 'स्थानापन्न' कहते हैं। अहम् की समबद्धता घटाने तथा निराशावादिता को निकालकर आत्म को आहत होने से बचाने को "सांवेगिक रोधन'' कहते हैं। तर्कपूर्ण परिस्थितियों तथा अवांछित मनोवृत्ति को विलग करना ''बौद्धिकीकरण'' है। अनैतिक इच्छाओं के प्रति प्रतिरोध या कार्य न करने की भावनाओं को समाप्त करने के लिए अपने आप की अन्य व्यक्तियों या संस्था के साथ तादात्म करने को तादात्मीकरण कहते हैं। अहम् संरचना के अन्तर्गत बाह्य मूल्यों एवं स्तर को सम्मिलित करना जिससे व्यक्ति उनकी कृपा का पात्र न हो अतःक्षेपण है। अपनी किसी कमी को छुपाने के लिए वांछित गुणों/लक्षणों को किसी विशिष्ट क्षेत्र में अधिक बल देकर प्रदर्शित करना क्षतिपूर्ति है। निहित, अदृश्य एवं खतरनाक इच्छाओं के संदर्भ में अपना वैयक्तिकरण करने के कारण उत्पन्न दुश्चिन्ता को कम करना श्अभिनयश है। अवांछित तथा कष्टदायक विचारों को भूला कर उनसे बचना या दूर होना "चयनित विस्मरणष है। किसी घटना या क्रिया से सीधा इनकार करना ''नकारात्मकता'' है। अपने संवेगों के लिए प्रत्यक्ष संतोष प्राप्त करने में असफलता को अन्य सामाजिक रूप से स्वीकृत प्राप्त नये माध्यमों से पूरा करना ''उदात्तीकरण'' है।

3.5 शब्दावली

स्मृतिलोपित : विस्मरण से पीड़ित या अन्तर्संबन्धी स्मृति के बड़े अंश का विस्मरण।

उदासीनता/औदासीन्य : 1) उन वस्तुओं में रुचि की कमी जिसे उत्तेजक मानते हैं।

: 2) संवेग का दमन।

गुणत्व : वे गुण जिसे अर्जित किया गया हो।

छुपाना	:	1) छुपाना, वापस लेना या अवलोकनके क्षेत्र से हटा लेना।
	:	2) गोपनीय रखना।
आक्रोशपूर्ण	:	किसी विचार की प्रगति या रक्षा के लिए कोई कठिन या आक्रोशपूर्ण आन्दोलन।
डाइवेस्टिंग	:	किसी चीज से वंचित रहना।
अद्वैतता	:	किसी व्यवहार/चरित्र की अद्वैतीयता या एकाकी गुण।
परिरोध	:	परिरोचित, सीमाबद्ध।
अभिरुचि	:	पसन्द या वरीयता।
अतिक्रमण	:	खण्डन, उल्लघंन।
उत्पीड़न	:	उत्पीड़न का मार्ग प्रशस्तीकरण या दमनात्मक उपचार।
पोर्नोग्रैफिक	:	अनुचित (साहित्य)
स्वैरिता	:	अमेदबोध सम्मिश्रण।
स्त्रीविलोम	:	दुराचरण की प्रवृत्ति।
पश्चगमित	:	औपचारिक आदत, व्यवहार, विश्वास, स्थिति तक वापस जाना।

3.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

नीरज आहुजा (1999), ए शार्ट टेस्ट बुक ऑफ साइकेट्री, जे.पी.एम. पब्लिशर, नई दिल्ली।

कोलमैन जे.सी. (1964), अबनार्मल साइकोलाजी एंड यार्डन लाइफ स्काट फोर्स मैन, सीकागो।

कागन जे. कॉम एंड जूलिअस सेगल (1988), साइकोलाजी, एम. इंट्रोडक्शन हारकोर्ट ब्रास जोवानोविक पब्लिशर, न्यूयार्क

भुन्न, एल. नार्मन इटएल (1967) इंट्रोडक्शन टु साइकोलॉजी ओक्सफोर्ड एंड आई बी. एच. पब्लिशिंग को. प्रा. लिमि. नई दिल्ली।

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) दुश्चिन्ता एवं दबाव से हमें सुरक्षित रखने के लिए हमारा अहम् युक्तियाँ सुनिश्चित करता है जो रक्षायुक्तियों के रूप में जानी जाती है। ये रक्षा प्रतिक्रिया या युक्तियाँ वास्तविक नहीं होती तथा अचेतन स्तर पर कार्य करती हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से हम विभिन्न दबावों जैसे कुण्ठा, संघर्ष एवं दबाव आदि से मुक्ति पाने का प्रयास करते है।

2) मुख्य प्रकार की रक्षायुक्तियाँ निम्न हैं

i)	प्रक्षेपण	ii)	प्रतिक्रिया निर्धारण।
iii)	प्रत्यावर्तन / प्रतिगमन	iv)	दमन
v)	युक्तिसम्मकरण	vi)	वास्तविकता अस्वीकरण
vii)	काल्पनिकता	viii)	स्थानापन्न
ix)	सांवेगिक रोधन	x)	एकांतीकरण (बौद्धिकीकरण)
xi)	अकर्मण	xii)	तादात्मीकरण
xiii)	अन्तक्षेप	xiv)	क्षतिपूर्ति
xv)	अभिनय	xvi)	चयनित विस्मरण
xvii)	नकारात्मकता	xviii)	उदात्तीकरण

3) प्रतिक्रिया–निर्धारण : जब कोई व्यक्ति दमन के विरूद्ध सचेत मनोवृत्ति एवं व्यवहार का तरीका विकसित करके अपने आपकों खतरनाक इच्छाओं से बचाता हे तो वह प्रतिक्रिया निर्धारण रक्षायुक्ति का प्रयोग करता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति प्यार के पीछे घृणा, करूणा के पीछे क्रूरता, नैतिक यौन मनोवृत्ति व व्यवहार के पीछे यौन दुराचार को छुपाता है। उसकी वास्तविकता, इच्छा तथा भावनाएँ चेतन जागरूकता सरेखी जाती है तथा स्पष्ट रूप से क्रियान्वित की जानी होती है। प्रतिक्रिया निध ार्रण सामाजिक रूप से अनुमादित व्यवहार के साथ समायोजन बनाए रखने के लिए व्यक्ति की सहायता करता है तथा आत्म अवूल्यांकन करने वाली इच्छा के भय या जागरूकता का परित्याग करता है।

बोध प्रश्न II

1) वास्तवकिता–अस्वीकरण समस्त आत्म प्रतिरक्षा तन्त्र में सर्वाधिक प्राचीन है और सम्भ्तः यह सबसे अधिक सरल है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति ऐसी वास्तविकताओं को दृष्टिगत नहीं करता या उसे प्राप्त करने से इनकार करता है जो उसे स्वीकार्य नहीं होती। यदि कोई व्यक्ति आनन्द दायक दृश्य या आनन्द दायक विषय न होने के कारण दबाव का आभास करता है तो उनसे दूर हो सकता है। इस रक्षायुक्ति का एक उदाहरण कष्टदायक परिस्थितियों से जूझने के दौरान अचेत हो जाना है। इस अहम् प्रतिरक्षा तन्त्र का उपयोग करके गम्भीर रोग से पीड़ित व्यक्ति रोग की प्रकृति इसकी गम्भीरता तथा सम्भावित परिणाम से इनकार कर सकता है।

2) काल्पनिकता प्रतिरक्षा तन्त्र में व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं अथवा उद्देश्यों की प्राप्ति कल्पना में करता है जिससे वह कुण्ठा पर नियंत्रण करता है जबकि स्थानापन्न में व्यक्ति अपन संवेगों या लक्षणात्मक अर्थ को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक स्थानान्तरित करता है।

3) प्रतिरक्षा तन्त्र जो सांवेगिकरोधन और युक्तिसम्मतकरण से सम्बन्धित होती है, दोनों को बौद्धिकीकरण कहा जाता है। तार्किक स्पष्टीकरण से कोई व्यक्ति दबावपूर्ण सामाजिक कार्यकर्ता के लिए मनोविज्ञान के मूलतत्व सांवेगिक प्रतिक्रिया को हटाता है जिससे वह किसी सीमा तक आराम का आभास करता है। हम अपने प्रिय व्यक्ति की मृत्यु के कारण होने वाले दुःख यह कहकर कम करते है कि पूर्ण जीवन को

प्राप्त हो गया था वह अन्तिम समय में बिना कष्ट मृत्यु को प्राप्त हुआ। हम अपनी असफलता व निराशा को यह कहकर कम करते हैं कि वे इससे भी बुरी हो सकती थी। पाप की भावना को कम करने के लिए एक व्यक्ति दूसरों की कमियाँ देखता है।

बोध प्रश्न III

1) रक्षा में हीनता या क्षीणता की भावनाएँ जो वास्तविकता या काल्पनिक व्यक्तिगत कमियों या कमजोरियों या पिछड़ेपन या जीवन में असफलता के प्रति प्रतिक्रियाएँ क्षतिपूर्ति का अदृश्य स्वरूप हैं। ये प्रतिक्रियाएँ कोई भी स्वरूप ग्रहण कर सकती है तथा रचनात्मक हो सकती हैं स्थाई प्रयास एवं अभ्यास द्वारा शारीरिक विकलांगता पर काबू पाना क्षतिपूर्ति का एक उदाहरण है।

2) आत्म अवमूल्यान से व्यक्ति की रक्षा होने की भवना विकसित करने हेतु तादात्मीकरण एक रक्षा युक्ति के रूप में कार्य करता है। यह बचपन में स्वरूप धारण करता है। अन्तःप्रक्षेपण के रूप में स्वीकार करता है जबकि वे उसकी अपनी पूर्व मान्याताओ के विरूद्ध होती है।

3) किसी संवेग के लिए प्रत्यक्ष सन्तुष्टि प्राप्त करने में असफलता के मामले में कोई व्यक्ति सामाजिक रूप से मान्य साधनों द्वारा संतुष्टि प्राप्त करनके का प्रयास करता है। यह प्रक्रिया उदात्तीकरण के रूप में मानी जाती है। सामाजिक कारकों एवं अन्य प्रदर्शों के कारण प्रत्यक्ष एण्वं सरल रूप से यौन संतोष प्राप्त करना सम्भव नहीं है और इसका दमन किया जा सकता है। यदि दमित भावनाएँ भली–भाति समाप्त नहीं की जाती या सन्हें निकाला नहीं जाता तो वे मानसिकविक्षिप्ति का कारण बन सकती है दमन की गई भावनाओं को सामाजिक रूप से मान्य साधनों से निकलने अथवा चक्रशील बनाना ही उदात्तीकरण है। एक शीघ्र उत्तेजित होने वाला व्यक्ति कृषि, बागवानी, लकड़ी का कार्य आदि जैसे भारी शारीरिक परिश्रम के कार्य करके अपने अवांछित आक्रोश को चक्रशील बना सकता है। कभी–कभी उदात्तीकरण युक्ति के द्वारा व्यक्ति सकारात्मक प्रतिक्रिया करता है और अपनी दमित भावनाओं को कला के प्रशंसनीय कार्य साहित्य या विज्ञान के रूप में रचना करता है। उदात्तीकरण व्यक्ति द्वारा स्वयं उत्पादित प्रक्रिया है।

इकाई 4 सामान्यता और असामान्यता

रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 असामान्य मनोविज्ञान क्या है?

4.3 असामान्यता व्यवहार के कारण

4.4 मनोवैज्ञानिक विकृतियों का निर्धारण

4.5 वयस्कों में मानसिक असन्तुलन

4.6 सारांश

4.7 शब्दावली

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

अब तक आप सामान्य मनोवैज्ञानिक अवधारणा को जान चुके होंगे। यह समझना बहुत कठिन नहीं है कि किस का व्यवहार असामान्य है, या विध्वसात्मक है। सामान्य से अलग व्यवहार तुरन्त समझ में आ जाता है, लेकिन कभी ऐसा होता है कि हम जानते हैं कि एक सामान्य दिखने वाला व्यक्ति किसी मानसिक रोग से गुजर रहा है। असामान्यता की व्याख्या करना सरल कार्य नहीं है। इस इकाई में आप सामान्यता और असामान्यता के बारे में पढ़ेगे। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- असामान्यता की व्याख्या कर सकेंगे;
- इसके लक्षणों को समझ सकेंगे;
- वयस्कों में मानसिक असामान्यता का विश्लेषण कर सकेंगे; और
- इन असामान्यताओं के क्या उपचार है उन्हें जान सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

हम सभी ने अपने जीवन में कभी न कभी किसी समस्या का सामना अवश्य किया है, लेकिन भिन्न–भिन्न तरीकों से सामंजस्य करते है। तीव्र गति से होने वाले औद्योगीकरण और भौगोलीकरण से कई लोग चिंता और तनाव की समस्या से गुजरते हैं। लेकिन हर कोई व्यक्ति जो इन समस्याओं को झेल रहे होते हैं, उनको व्यावसायिक चिकित्सकीय सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती है। हमने व्यावहारिक ढंग से सोचने और बात करने के कई रास्ते विकसित किए हैं, जो कि सामान्य हैं। लेकिन जो वैज्ञानिक अवधारणा हम मानव–व्यवहार के लिए आवश्यक समझते हैं, वो उसमे व्यक्तिनिष्ठ विषयों की संवेदनशीलता और उसके कार्यकलापों को शामिल किया जाता है।

आइये अब हम असामान्य व्यवहार से सम्बन्धित अवधारणा की समीक्षा करते हैं।

4.2 असामान्य मनोविज्ञान क्या है?

मनोविज्ञान और मनोरोग का एक लम्बा इतिहास है जो सामान्यता और असामान्यता के प्रतिवाद के क्षेत्र से जुडघ हुआ है। असामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की ही एक शाखा है। जिसके अन्तर्गत असामान्य व्यवहार को विवेचित करते हैं। असामान्यता का शब्दिक अर्थ समान्यता से विचलन है। आप आश्चर्यचकित होंगे कि इसे ही असामान्य व्यवहार कहते हैं। असामान्य व्यवहार कि व्याख्या मनुष्य के अन्दर एक अवयव के रूप में नहीं कर सकते है, यह विभिन्न जटिल विशेषताओं से आपस में समबद्ध होता है। आमतौर पर असामान्यता एक समय में विशिषताओं को परिभाषित किया जाता है, वो हैं, विरल घटना, आदर्श का उल्लंघन, व्यक्तिगत तनाव, विक्रिया और अप्रत्याशित व्यवहार। आइये इन अवधारणाओं को समझते है :

1) विरल घटना

लोगों का बहुमत औसतन उस व्यवहार को दशौता है जो कि उनके जीवन की किसी घटना से सम्बन्धित होता है। जो लोग औसत को दिर्शाते हैं वो बहुत प्रवृत्तिशील होते हैं। लेकिन आवृत्ति को सुविचारित नहीं किया जा सकता, जैसे एकमात्र मूलतत्व को असामान्य व्यवहार में निर्धारित नहीं किया जा सकता है।

2) आदर्श का उल्लंघन

यह दृष्टिकोण सामाजिक आदर्शी और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित है। जो विशिष्ट स्थितियों में व्यवहार का मार्ग–प्रदर्शक हो है। यदि एक विशिष्ट व्यक्ति सामाजिक आदर्शों को तोड़ता है, धमकाता है, या दूसरों को चिंतित करता है तो यह विचार असामान्य व्यवहार जैसा है। असामान्यता, स्वीकृत आदर्शों से उच्च स्तर पर विचलित करना अलग संस्कृतियों में अलग–अलग माना जाता है। लेकिन इसमें ध्यान देने योग्य बात ये है कि आदर्श मूल्य अलग–अलग होते हैं। एक जगह जो नैतिक होता है वो दूसरी जगह अनैतिक भी हो सकता है, यह अवधारणा अपने आप में बहुत व्यापक है जैसे अपाधी और वैश्याएँ सामाजिक मूल्य तोड़ते है परन्तु आवश्यक नहीं है कि उन्हें असाान्य मनो विज्ञान में पढ़ा जाए।

3) व्यक्तिगत तनाव

एक व्यवहार, यदि वो सुविचारित असामान्य है, तो यह तनाव उत्पन्न करता है किसी व्यक्ति में जो इसका आभास करता है। उदाहरण के लिए, निरन्तर और भारी मात्रा में मघ सेवन करने वाला व्यक्ति अपनी मद्यसार की आदत को पहचानता है, कि यह अस्वास्थ्यकार है, और इस आदत को रोकना चाहिए। यह व्यवहार असामान्य जैसा लक्षण प्रदर्शित करता है। व्यक्तिगत तनाव, आत्म–स्व का नमूना नहीं है, परन्तु जो लोग इससे पीड़ित होते हैं वो ही इसकी जानकारी दे सकते है और निर्णय करते है। विभिन्न लोगों में तनाव का स्तर भी बदलता रहता है।

4) अप्रक्रिया

अप्रक्रियाया अक्षमता को असामान्यता के रूप में लिया जाता है यदि व्यक्ति समाज में अपने मनोभावों, कार्यों या विचारों से बाधा डालता है।

उदाहरण के लिए मादक द्रव्यों के दुरूपयोग के कारण एक व्यक्ति के कार्य–निष्पादन में बाधा आती है।

5) अप्रत्याशिता

इन विशेषताओं को अप्रत्याशित व्यवहार की पुनरावृत्ति कोने को शामिल किया गया है।

उपर्युक्त की अंतरिम विशेषताओं का वर्णन क्या है? वह है,– कुसामायोजन दिन–प्रतिदिन के 340/जीवन की अपेक्षाओं से जूझने एवं उनकी पूर्ति के मार्ग में व्यक्ति का असामान्य व्यवहार कठिनाई उत्पन्न करता है। सामान्य और असामान्य के बीच कोई स्पष्ट विभक्तिकरण रेखा नहीं होती। यह एक मन की स्थिति होती है जिसका अनुभव प्रत्येक व्यक्ति करता है यह एक मानसिक विकृति का द्योतक है, यदि यह दोनों विद्यमान तथा गम्भीर स्तर तक होते हैं तो व्यक्ति की सामान्य सदस्य होता है, के विपरीत होता है। यह भी विचारणीय है कि असामान्यता की परिभाषा किसी सीमा तक संस्कृति पर आधारित होती है। उदाहरण ार्थ दृ अपने आप से बात करना ऐ असामान्य व्यवहार के रूप में माना जाता है परन्तु कुछ विश्चित पोलिनेशियन देशों तथा दक्षिण अमेरिकी समाजों में इसे देवियों द्वारा प्रदत्त विशिष्ट स्तरीय उपहार माना जाता है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) असामान्य व्यवहार के किन्ही दो निर्धारको को बताइये और उनमें से किसी एक की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4.3 असामान्य व्यवहार के कारण

अब आप यह जानने के लिए उत्युक होंगे कि ऊपर विवेचित कठिनाइयों के क्या कारण हैं। वर्तमान दृष्टिकोण से असामान्य व्यवहार के समाकलन के लिए अनेक स्वरूप हैं। ये स्वरूप मानी हुई बातों पर आधारित होते हैं जो एक साथ मिलकर अध्ययन और आँकड़ों की व्याख्या हैं, इन प्रारूपों के अन्तर्गत चुने हुए परिणाम होते हैं जिनके अन्तर्गत असामान्य व्यवहार की व्याख्या की गयी है। आइये इन स्वरूपों का अध्ययन करें

1) जैविकीय स्वरूप

इस स्वरूप के अन्तर्गत यह माना जाता है कि मानसिक विकृति जैविक या शारीरिक प्रक्रिया के कारण होती है। इस उदाहरण को चिकित्सीय स्वरूप भी कहा जाती है। इस प्रारूप में यह मान लिया जाता है कि आसाधारण व्यवहार का कारण शरीर के अन्दर ही पाया जाता है। आइए–एक उदाहरण लेते हैं दृ प्रयोग और सिद्धान्त के आधार पर यह कहा गया है कि विकृति के कारण नाड़ी तन्त्र में होने वाली किसी गड़बड़ी का पारम्भ दुश्चिन्ता होती है। जो किसी व्यक्ति में मनोविदलता को वंशानुगत बनाता है। पिछले कुछ सालों में जैविक प्रयोगों ने असामान्य मस्तिष्क के व्यवहार के समन्वयता के क्षेत्र में बहुत विकास किया है। लेकिन इतना पर्याप्त नहीं है कि जैविक उदाहरण सभी असामान्य मनोविज्ञान के प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं।

2) आत्मविश्लेषण स्वरूप

सबसे पहले सिगमण्ड फ्रायड द्वारा विकसित किया गया यह उदाहरण यह मानता है कि अचुतन विवाद असाधारण व्यवहार का कारण हो सकता है। फ्रायड ने व्यक्तिगत रूप से बल दिया है कि लैंगिक प्रेरणा को रोकने के कारण ज्यादातर चिंता होती है। फ्रायडियन सिद्धांत की दृष्टि से उन दोषों को भी महत्व दिया जाता है जो सिद्धांत जो कि इस प्रेरणाओं के बदले में होता है।

इदम् जब अहम् और पराहम् के बीच फँस जाता है और एक व्यक्ति पर सुरक्षा के लिए दबाव डालता है और जिसके कारण वह कठोर व्यवहार अपनाता है।

3) व्यावहारिक स्वरूप

व्यवहारिक उदाहरण कुसमायोजित व्यवहार समाहित करता है को जिसके कारण व्यक्ति समायोजित व्यवहार हो जाता है और यह अप्रभावित, सीखने की प्रवृत्ति असामान्य व्यवहार को जन्म देती है।

4) बोधात्मक स्वरूप

यह स्वरूप समाहित करता कि लोगों के द्वारा जो अर्थ असाधारण व्यवहार को समझने के लिए बनाया गया है। यह अर्थ लोगों द्वारा प्राप्त अनुभवों पर आधारित है।

ऊपर चर्चा किए गए उदाहरणों को ध्यान में रखते हुए हम असाधारण व्यवहार के कारण इस प्रकार से वर्गीकृत कए जा सकते हैं।

1) जैविक कारक

विभिन्न जैविक तत्व जैसे जनक/आनुवांशिक गड़बड़ी, एन्डोक्रिन तंत्र का सुचारू रूप से कार्य न करना, दिमाग का ठीक ढंग से काम न करना, असाधारण व्यवहार के कारण बन सकते हैं। खोजों द्वारा यह पाया गया है कि जैसे मनोविदिलता अधिकतर आनुवांशिकता में मिलती है इसके अतिरिक्त बहुत सारे शारीरिक और वातावरण के कारण भी असामान्य व्यवहार को जन्म दे सकते हैं।

2) मनोवैज्ञानिक कारक

असामान्य व्यवहारों में मनोवैज्ञानिक कारकों की भूमिका अप्रत्यक्ष है इसलिए इसको मापना बहुत कठिन है। लेकिन अनेक मनोवैज्ञानिक कारक जैसे–बचपन में माता–पिता के साथ सम्बन्ध, सामाजिकता की ओर उनका व्यवहार, समान व्यक्तियों का समूह आदि किसी कत व्यक्ति में त्रुटिपुर्ण पहचान, अधिक निराशावाद, अधिक आसक्ति, या अधिक संरक्षण विकसित करते हैं पर जिसको हम असामान्य व्यवहार का कारण मान सकते है।

3) सामाजिक–सांस्कतिक कारक

इन कारणों में अभी कुछ विशिष्ट नहीं पाया गया है इसलिए इसमें खोज जारी है लेकिन तीव्र नगरीकरण, सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक कार्यों में परिवर्तन इत्यादि । व्यक्ति में चिंता, प्रवृत्तियुक्त दबाव, तनाव आदि उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार ये कारक असामान्य व्यवहार के प्रबलता से सहायक होते हैं।

4.4 मनोवैज्ञानिक वितियों का निर्धारण

मनोवैज्ञानिकों द्वारा कई कारकों को किसी व्यक्ति की समस्या का सही ढंग से निर्धारण करने में प्रयोग किया जाता है। निर्धारण के दो मुख्य दृष्टिकोण है– मनोवैज्ञानिक और जैविकीय निर्धारक।

1) मनोवैज्ञानिक निर्धारण

मनोवैज्ञानिक निर्धारण के अन्तर्गत साक्षात्कार आता है जो संरचना और स्वभाव दोनों में खुला हो। मनोवैज्ञानिक परीक्षण जैसे–स्वलेख व्यक्तित्व खोज, बुद्धिमत्ता परीक्षण आदि रचनात्मक परीक्षण हैं जबकि (इनके अलापा निरीक्षण पद्धति भी किसी व्यक्ति को आँकने में एक उपयोगी तरीका है) विस्तार सम्बन्धी परीक्षण जैसे–रोसार्च इंक ब्लाट टेस्ट, प्रकरण सम्बन्धी परीक्षण खुले परीक्षण हैं। इन परीक्षणों के अतिरिक्त निरीक्षण पद्धति भी किसी व्यक्ति को आँकने में उपयोगी है।

जैविकीय निर्धारण

इस प्रकार के निर्धारण में नई तकनीकें जैसे सीटी स्कैन, पेट स्कैन पैसीट्रोन इमीसन टोमोग्राफी आदि। जो मस्तिष्क की विभिन्न संरचनाओं को देखने में मदद करता है। तन्त्रिका मनोविज्ञान परीक्षण भी मस्तिष्क परीक्षण के द्वारा स्पर्श ज्ञान सम्बन्धी परीक्षण, समय सम्बन्धी परीक्षण इत्यादि । जैविक निर्धारण में मनोशारीरिक प्रमाप भी सम्मिलित हैं जैसे–नाड़ी गति, हृदय गति, चर्म संचालन आदि।

असामान्य व्यवहारों का वर्गीकरण

अमेरिकन साइकेट्रिक एसोसिएशन के द्वारा तैयार किया गया डायग्नोस्टिक एण्ड स्टैटिस्टीकल मैनुअल ऑफ मेन्टल डिस्आर्डर में असामान्य व्यवहारों का वर्गीकरण उनके लक्षणों के आधार पर किया गया है, जो निम्नलिखित हैं

डी एस एग–IV का वर्गीकरण–बाल्यावस्था औरकिशोरों में असामान्य व्यवहार

मानसिक गन्दन या दुर्बलता

- मानसिक क्षमताओं का विकास जब किसी की आयु के अनुसार कम होता है।
- सीखने की विकृत्ति
- गत्यात्मकता सम्बन्धी विकृति–ऐसी विकृति जिसमें शारीरिक गतियों में परेशानी हो, जैसे–आँखों और हाथों का सही उपयोग नहीं और अन्य गत्यात्मक क्रिया में।
- संचार विकृति–यह विकृति सूचना अथवा संचार के आदान–प्रदान में होने वाली विकृति से है।
- ध्यानहीनता एवं विदाक विकृति–यह विकृति ध्ययान न केन्द्रित होने या करने को कहते है।
- बाल्यकाल में खाने और पीने सम्बन्धी विकृति –
- बाल्यकाल एवं किशोरावस्था की अन्य विकृत्तियाँ– इस श्रेणी में आने वाली विकृत्तियाँ संबधित हैं– कम मानसिक विकास होना, सीखने में अवरोध होना। जैसे– असामान्य मानसिक विकास और कम सीखना, आँखों और हाथों का गलत ढंग से समन्वय, बोलने की विकृति, खाने में विकृति आदि प्रमाद, चिन्तविक्षिप्त और उपेक्षा की विकृति और अन्य संज्ञानात्मक विकृति।
- प्रमाद का अर्थ है गलत ढंग से बोलना।
- चित्त विक्षिप्त या भूलना।
- उपेक्षा की विकृति या नींद की समस्या और अन्य संज्ञानात्मक विकृत्तियाँ।

- सामान्य मानसिक अवस्था के कारण, सामान्य मानसिक विकृत्ति जिसका वर्गीकरण कहीं और नहीं है।
- मद्यपान और औषधि सेवन सम्बन्धी विकृति–
- मद्यनिषेध और द्रव्य का दुरूपयोग – जैसे व्यक्ति मद्य का सेवन अपने दिमाग पर सुखद प्रभाव के लिए प्रयोग करते हैं जैसे –गांजा सम्बन्धी विकृत्ति, कोकीन सम्बन्धी का विकृति, श्रुतुश्रम से सम्बन्धी विकृत्ति, भाँग सम्बन्धित, अफीम सम्बन्धी आदि।

मनोविदलता और अन्य मनोविक्षिप्त विकृति

मनोविदलता से तात्पर्य जब कोई व्यक्ति को सोचने में परेशानी होती है या फिर उसके मन का विभाजन हो जाता है। इस विकृति में व्यक्ति किसी भी कार्य में पूर्ण रूप से ध्यान नहीं दे पाता और उससे उसके कार्य निष्पादन में कमी आती है।

भावात्मक विकृति

इस प्रकार की मनोविक्षिप्तता में अनुपयुक्त संवेगात्मक अनुक्रियाएँ पायी जाती है। ये संवेगात्मक क्रियाएँ या तो बढ़ी हुई अवस्था में पाई जाती है या फिर घटी हुयी अवस्था में होती है। इसमें तुरन्त उपचार की आवश्यकता होती है।

विषाद विकृत्ति

ये विषाद चित्त–विरक्ति से अलग होता है। इसके लक्षण निम्नलिखित होते हैं

1) नींद में कमी एवं गत्यात्मकता में बाधा
2) असन्तोष एवं चिंता।
3) अपने को दोषी समझना।
4) पूरी दुनिया मनोरंजक रहित लगना।
5) एकाग्रता में कमी आदि जिसके कारण कई रोग जैसे विचारदृप्रक्रिया में कमी, खालीपन एवं अपने को किसी योग्य न समझना, थकान आदि।

वृत्तिय प्रतिक्रियाओं की विकृत्ति

यह वह अवस्था है, जिसमें रोगी में उत्साह और विषाद के जिले–जुले लक्षण पाए जोते हैं। कभी–कभी इस अवस्था में रोगी में उत्साह और विषाद की अवस्थाएँ एक–दूसरे के बाद बदलती रहती हैं।

दुश्चिन्ता विकृति

कोई भी असामान्यता जिसमें अस्पष्ट, दिशाहीन चिंता का अनुभव होता है और उसके स्रोत का पता नहीं होता।

- असंगत विकृत्ति बिना, खुले स्थान से भय (एगोरेफोबिया)
- असंगत विकृति खुले स्थान से भय (एगोरेफोबिया)
- वह मनःस्ताप किसी वस्तु, परिस्थिति या प्राणी के प्रति असंगत भय है और किसी भी समय हो सकता है, जैसे विशेष चीज के प्रति भय या सामाजिक भय

- मनोग्रस्तता–ब्राह्मता विकृत्ति
- साधारण चिन्ता विकृत्ति
- **स्वास्थ्य अतिचिन्ता विकृत्ति**– इस बीमारी का रोगी अपने स्वास्थ्य के सम्बन्ध में तथा शरीर के विभिन्न अंगों के कथित रोगों और विकृयिों से सम्बन्धित विचार हर समय उसके मन में घिरे रहते है।
- **रूपान्तरण विकृत्ति**– जो रोगी इस रोग से पीड़ित होते है, उसमें दैहिक रोग निदान–शास्त्र के अभाव में कुछ शारीरिक लक्षण उत्पन्न होते हैं जैसे–गत्यात्मक लक्षण, संवेदनशून्यता, लकवा इत्यादि।
- **दैहिक विकृत्ति**– इसमें वह विकृति आती हैं जिसमें शारीरिक समस्याएँ होती हैं, परन्तु कोई दैहिक कारण नहीं होता।
- **मनोदैहिक विकृति**– इस विकृति में प्रमुख समस्याएँ होती है–सिरदर्द, थकावट मिचली, पेटू में दर्द और शरीर के विभिन्न भागों में दर्द । व्यक्ति सोचता है कि वह बीमार है और इसको समर्थन देने के लिए लम्बा इतिहास बताते हैं, और खूब दवाइयाँ खाते है।
- पश्यघाव दबाव विकृति
- तीव्र दबाव सम्बन्धी विकृति
- बॉडी डिस्मार्फिक डिसआर्डर

बनावटी या कृत्रिम विकृति

पृथक्करण की विकृत्ति, इसके अन्तर्गत अलग करने की भावना, स्मृति त्रुटि आदि आता है। कृत्रिम स्मृतिहीनता में बिना किसी इन्द्रिय सम्बन्धी परिवर्तन के स्मृति खत्म हो जाती है और पृथक्करण अस्थिरता में अप्रत्याशित घर से दूर यात्रा और अपनी नयी पहचान बनाना। इसमें रोगी कई बार सुबह जागने पर अपने को नयी जगह पाता है। बहुमुखी व्यक्तित्व विकृति–इसके अन्तर्गत एक ही व्यक्ति को भी ज्ञान नहीं होता। कामुक एवं लिंग पहचान सम्बन्धी विकृति– ये विकृति किसी व्यक्ति के असामान्य कामुक कार्यों से सम्बन्धित है, जिसके अन्तर्गत कामुक उद्दोलन इच्छा विकृति, कामुक पीड़ा विकृति।

लिंग पहचान सम्बन्धी विकृति

ये विकृति जो अक्सर रोगी के लिए बचपन के किसी कटु अनुभव के कारण हो जातेध्जाती हैं, व्यक्ति के सामान्य कामुक कार्य में बाधा बनती हैं।

खाने सम्बन्धी विकृति

ये विकृति अधिक या कम खाने से सम्बन्धित हैं। एनोरेक्सिया नर्वोसा जिसके अन्तर्गत व्यक्ति एक लम्बी अवधि तक कम मात्रा में खाना खाता है। बूलीमिया नर्वोसा जिसके अन्तर्गत व्यक्ति खाना खाने के बाद उल्टी कर देता है।

निद्रा–सम्बन्धी विकृति

प्रारम्भिक नींद में विकृति, डायसोमनियॉज, पारासोमनियॉज।

प्रवृत्ति नियंत्रण विकृति

जिसका कहीं वर्गीकरण नहीं किया गया है।

क्लिप्टोमानिया (अनजाने में चोरी करना), पैरोमानिया (आग से बिना कारण भय), पैथेलोजिक गैम्बलिंग, इरीमेटेड एक्सप्लोसिव डिसआर्डस (विस्फोटक सम्बन्धी विकृति आदि)

सामंजस्य असमानता

व्यक्तित्व असामानता

मानसिक उन्माद (व्यापक, भ्रमित विचार, अप्रत्यय, ईर्ष्या, जलन) मानसिक रोग सम्बन्धी, मनोविद्यसता, असामाजिक, मध्यवर्ती अभिनय कला, आत्मशक्ति सम्बन्धी (जो व्यक्ति अपने रूप से प्यार करता है) आश्रित को त्यागना, मनोग्रसितता बाध्यता (अनुलम्बन, अनचाहा और अविचलत विचार, अनिवार्य स्वाभाविक क्रिया को दोहराना)।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) क्या जैविकीय कारण असामान्य व्यवहार का कारण हो सकता है। व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) क्या हम व्यक्तित्व विकृति की जाँच कर सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 वयस्कों में मानसिक असन्तुलन

श्रीमान एक्स ऐसी फर्म में कार्य करते हैं, जिनमें उनका कार्य लोगों के साथ सम्पर्क करना है। वह शर्मीले व्यक्ति हैं और वे विशेषकर स्त्रियों से बात करते समय घबरा जाते हैं। जिस समय वह महिलाओं से वार्ता करते है, वह कई लक्षणों से ग्रसित होते हैं जैसे–हथेलियों में पसीना आना, पेट में सूजन। जब वह स्त्रियों को देखते हैं तो क्रमशः इन लक्षणों से ग्रसित होते हैं। अपनी दुश्चिन्ता से बचने के लिए वह अज्ञानतवश निम्नलिखित कठिनाइयों जैसे सिर में तेज दर्द या पेट से पीड़ित हो जाते हैं। उन्हें सलाह दी जाती है कि वह आराम करें और अपने मनोविकत्सक से विचार करता है कि उसे कोई मनोरोग नहीं है।

यह एक विशिष्ट चिन्ता का केस है। लेकिन चिन्ता को यदि पहचाना न जाए और सही इलाज न किया जाए तो यह गंभीर रूप धारण कर लेती है। इस पाठ के इस क्रम में हमने कुछ मनोवैज्ञानिक विक्रियाओं को पढ़ा जो विक्रियाओं के क्षेत्र में है। आपने इस वर्गीकरण को अवश्य पढ़ होगा जो डी एस एम–प्ट के अनुसार पिछले पृष्ठ की सूची में दिया गया। इन विवेचनाओं का अध्ययन करना आसान नहीं है, अतः हम इन पर प्रकाश डालेंगे।

दुश्चिन्ता असंतुलन

यक्तित्व असमान्तुलन

मनोविदलता

दुश्चिन्ता असंतुलन

दुश्चिन्ता की व्याख्या इस प्रकार कर सकते हैं कि व्यक्ति एक साधारण डर और मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को समझताय महसूस करता है जैसे हृदय गति का बढ़ना, भुजाओं 0 में तनाव आना आदि। चिन्ता की व्याख्या हम इस तरह कर सकते हैं कि यह भय और बी) चिन्ता की भावना होती है और रोगी में कुछ शारीरिक लक्षण पाए जाते हैं, जैसे दिल की धड़कन बढ़ना, मांसपेशियों में खिचाँव और पसीना आना आदि । भय और दुश्चिन्ता में यह अन्तर है कि भय का कोई कारण होता है और एक बार यह कारण पता चल जाए ता भय दूर होने लगता है जबकि दुश्चिन्ता किसी एक विशिष्ट कारण से जुड़ी नहीं होती और वातावरण में परिवर्तन से जल्दी दूर नहीं होती। दुश्चिन्ता विकृति लम्बे समय से ग्रसित दुश्चिन्ता के समय ही जाना पहचाना जा सकता है। डी एस एम–प्ट के अनुसार छरूप्रकार की चिन्ताएँ हैं जो दुर्भात, भय विकृति, अनुवांशिक चिन्ता विकृति, मनोग्रसिता बाध्यता विकृति। चिन्ता के विकृति के अन्तर्गत अनेक प्रकार के लक्षण आते हैं जैसे चिन्ता का कई बार अनुभव करना, चिन्ता, डर इत्यादि। कई बार बई लक्षण कई विकृतियों में पाए जाते हैं। सबसे पहले हम दुर्भीति को पढ़ते हैं।

1) दुर्भीति (Phobia)

दुर्भीति (Phobia) की व्याख्या इस प्रकार कर सकते हैं कि दुर्भीति किसी वस्तु या परिस्थिति के प्रति सतत् भय है। जो रोगी के लिए वास्तविक खतरा उपस्थित नहीं करता है। इस रोग में खतरा वास्तविक खतरा नहीं होता है। इस रोग में खतरा वास्तविक स्थिति से अत्यधिक बड़े–चढ़े अनुपात में अभिव्यक्त होता है। जैसे ऊँचाई से अत्यअधिक डर, बन्द स्थान से डर, जानवरों से डर इत्यादि । दुर्भीति को भी श्रेणीबद्ध किया गया है जैसे क्लस्ट्राफोबिया यानि सामान्य बन्द स्थानों से भय की कोटि में आता है। इसमें बन्द स्थानों से भय होता है। भय शब्द इस बात को दर्शाता है जिसमें एक व्यक्ति तनाव से गुजरता है, और उसकी सामाजिक/व्यावसायिक क्षति होती है।

2) भय–असंतुलन

आपने कभी महसूस किया हो, बिना किसी स्पष्ट कारण के आपको अचानक तीव्र भय का आभास हुआ हो, जिसके कारण आपका हृदय लगातार धड़कता और हथेलियों में पसीना, या काँपने की स्थिति हुई हो? यदि आपका उत्तर 'हाँ' है, तो आप प्रायः भय का अनुभव करते हैं। भय विकृति की विशेषताओं में बिना किसी न्यायिक स्थितियों के अत्याधिक भय और आतंक होता है इसमें व्यक्ति में कुछ शारीरिक लक्षण भी दिखाई देते हैं जैसे हृदय की धड़कन बढ़ना, आलस्य, कॉपना, साँस का फूलना आदि इसके अतिरिक्त कुछ अन्य मनोवैज्ञानिक लक्षण भी दिखाई पड़ते हैं जैसे मरने का डर, या पागलपन।

3) मनोग्रस्तता–बाध्यता असंतुलन

इसके अन्तर्गत किसी व्यक्ति में बाध्यता और मनोग्रस्तता होती है और जिसके कारण एक व्यक्ति के जीवन में तनाव और गम्भीर तनाव पैदा होता है। उदाहरणार्थ–बार–बार हाथों को धोना। इस प्रकार की विकृति में चिन्ता के भाव पैदा करती है जो कि अनापेक्षित आदतों की क्रिया की विकृति में चिन्ता के भाव पैदा करती है जो अनापेक्षित आदतों की क्रिया को बार–बार दोहराता है। मनोग्रस्तता सतत् विचार या उपाय है। बाध्यता इच्छित विचार या मानसिक क्रियाओं के निष्पादन में मनोग्रस्तता जिम्मेदार है। कुछ सामान्य मनोग्रस्त–बाध्यताएँ हैं, जैसे–हाथों को धोना, गिनना आदि ।

4) पश्य–घाव दबाव असंतुलन

जो लोग कष्टदायी घटनाओं या कष्ट देने वाले लक्षणों का अनुभव करते हैं जो बार–बार इस विकृति के अन्तर्गत दिखायी देते है या आते हैं इस विकृति में रोगी को उस कष्टदायी घटना का पुनरावलोकन होता है। इस विकृति के बहुत से लक्षण है, जैसे–रात्रि दुःस्वप्न, अपने विचारों से भागना, चीखना–चिल्लाना आदि। ये समस्याएँ जीवन–पर्यन्त भी रह सकती है।

5) सामान्य दुश्चिन्ता असंतुलन

दुश्चिन्ता, चिन्ता की बढ़ी हुई अवस्था है और इसमें व्यक्ति अस्पष्ट दिशाहीन चिन्ता का अनुभव करता है जिसका स्रोत वह नहीं बता पाता। इसके मनोसामाजिक लक्षण होते है, किसी खतरे के बारे में चिन्ता करना, ध्यान केन्द्रित न कर पाना, निर्णय न ले याना, हल्का तनाव अनुभव करना और थकावट महसूस करना आदि। वे लोग जो प्रतिदिन एक सा कार्य करते हैं या रात्रि में कार्य करते हैं जैसे – पुलिसकर्मी, सुरक्षाकर्मी, अकसर इस बीमारी से ग्रस्त रहते हैं

व्यक्तित्व असंतुलन

इसमें जब कोई व्यक्ति लगातार कुसमायोजित विचार में सोचता है, वैसा ही कार्य करता है और जिससे उसके सामान्य जीवन का कार्य प्रभावित होता है या खराब होता है। उदाहरणार्थ, कोई आश्रित व्यक्तित्व वाला व्यक्ति हमेशा आज्ञाकारी रहेगा, और अपना व्यवहार, असन्तुलित रखता है, ये व्यक्ति अपना निर्णय खुद नहीं ले सकता और उसको बहुत ध्यान की आवश्यकता होती है। जो नाटकीय व्यक्तित्व विकृति से ग्रसित है वो हमेशा बहुत संवेगात्मक व्यवहार दिखायेगा और हमेशा दूसरों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयत्न करेगा। एक और समाजविरोधी व्यक्तित्व विकृति–इस प्रकार के व्यक्ति लापरवाह होते है और उनका व्यवहार असंगठित होता है, ये सम्पत्ति को चुराने या नुकसान पहुँचान का कार्य करते हैं, और इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति कभी स्वयं के उपचार के लिए पहल नहीं करते हैं।

मनोविदिलता

यह भंयकर असाध्य रोग है। यह रोग समाजों में पाया जाता है यह एक अति गम्भीर रोग है जो व्यक्ति में प्रत्यक्षीकरण, संवेगों, विचारों और व्यवहार को अत्यधिक बाधित कर देता है। मनोविक्षिप्तता के अन्य रोग मनोविदलता के समान गम्भीर नहीं होते हैं। मनोविदलता के रोगी की विचारदृप्रक्रिया, व्यवहार आदि रोग की गंभीरता बढ़ने के साथ–साथ विघटित होते चले जाते हैं। सामान्य अवस्था में विघटन कम मात्रा में और तीव्र अवस्था में विचारों का विघटन अधिक मात्रा में होता है। इस अवस्था में मनुष्य अपने आप कोई निर्णय नहीं ले पाता है। उसकी विचार–प्रक्रिया कभी–कभी पूर्णतः अवरूद्ध सी हो जाती है। आत्मा व्यक्ति

का केन्द्र–बिन्दु है, जिसका कार्य व्यक्ति का समन्वय करना है। यह आत्म विश्रृंखलित, विसरित और अव्यवस्थित हो जाती है। इसमें व्यक्ति भ्रमित हो जाता है और गलत धारणा बना लेता है इसके अन्तर्गत व्यक्ति के सोचने की शक्ति खत्म हो जाती है। जैसे व्यक्ति अभी अपने करीबी रिश्तेदार व्यक्ति के सोचने की शक्ति खत्म दूसरी बात करने लगे इन बातों का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं होता है आदि व्यक्ति में आतंक विशेष रूप से उस समय उत्पन्न होता है, जब उसमें मनोविदलता के निम्न लक्षण होते हैं–

विचारों का विक्षोभ

ज्यादातर रोगी अपने विचार को एक नियम पूर्णता के रूप में दर्शाते हैं जैसे–भ्रमित होना, विचारों में असम्बद्धता।

अनुभव में रूकावट

विचारों का विक्षेपण– इसके अन्तर्गत व्यक्ति स्वयं को अपने शरीर से अलग महसूस करता है। (अव्यक्तिकरण)

संवेगात्मक भाव में रूकावट

मनोविदिलता के रोगी की संवेगात्मक अभिव्यक्ति में रूखापन और जब यह लक्षण। – सामान्य अवस्था में होता है, दिखाई देता है। इस संवेगात्मक भाव के अनेक परिणाम सामने हैं: मरे हुए पर हँसना, व्यक्ति के चेहरे पर कोई भाव नहीं होते, शुभ समाचार पर रोना।

बोलने में रूकावट

बोलचाल में असमानता और बात करने में हकलाना और कुछ दिनों अथवा घण्टों तक न बोलना।

सामाजिक वास्तविकता से पलायन

मनोविदिलता का रोगी वास्तविकता से पलायन करता है। वे अपने आप को प्रेरणात्मक परिवार से अलग कटा भावनात्मक रूप में महसूस करता है।

प्रेरणात्मक

मनोविदिलता से ग्रस्त व्यक्ति में प्रेरणा के लक्षण कम देखने को मिलते हैं। मनोविदलता के तीन प्रमुख प्रकार होते हैं– पैरानॉएड मनोविदलता, कैटेटोनिक मनोविदलता और डिस्ऑरगेनाइस्ड मनोविदलता। पैरानॉएड मनोविदलता के प्रमुख लक्षण हैं– व्यामोह और विभिन्न प्रकार के विभ्रम। यह रोगी मंदेह और टेन्स्ड रहते हैं। इन रोगियों को आशंका रहती है कि उसके रिश्तेदार और सम्बन्धी उस पर निगरानी रख रहे हैं, उसका पीछा कर रहे हैं या उसे मारना चाहते हैं आदि। कैटेटोनिक मनोविदलता और गत्यात्मकता से सम्बन्धित हैं– इस रोग की दो अवस्थाएँ होती हैं, मूर्च्छित अवस्था, उत्तेजित अवस्था जिसमें व्यक्ति घंटों तक एक ही वाक्य को रटता है या फिर कुछ क्रिया लगातार करता रहता है। इसके अलावा एक ही अवस्था में लगातार कई घण्टे बैठना।

असंघटित मनोविदिलता के प्रमुख लक्षण है– असंघठित बोलना, विचित्र व्यवहार करना और किसी भी चीज का प्रभाव न होना । वास्तविकता से कोई मतलब नहीं होना और गंदा या बिखरा हुआ रख–रखाव इसके अतिरिक्त गलत समय पर हँसना।

बोध प्रश्न III

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) दुश्चिन्ता असंतुलन की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) विभिन्न प्रकार की मनोविदिलता का वर्णन कीजिए। किसी एक को उदाकरण सहित समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

उपचार

मनोवैज्ञानिक असंतुलन के लिए कई प्रकार के उपचार उपलब्ध हैं। मनोवैज्ञानिक असंतुलन के लिए मनःचिकित्सा सबसे सफल और जानी मानी चिकित्सा है। इस चिकित्सा पद्ध ति के अन्तर्गत् रोगी और चिकित्सक के सम्बन्ध बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें मौखिक और अमौखिक दोनों प्रकार का सम्प्रेषण होता है। यह उपचार केवल ऐसे व्यक्ति द्वारा ही किया जाए जो व्यावसायिक होना चाहिए। जिसने इसमें प्रशिक्षण प्राप्त किया हो। उपचार रोगी और चिकित्सक के मध्य गोपनीय सम्बन्धों पर आधारित होना चाहिये। यह उपचार विधि रोगी के कुसमायोजित व्यवहारों को बदलने में उपयोगी होती है और रोगी को सामाजिक वातावरण में सामायोजित करने में मदद करती है। चिकित्सा के तीन रूप होते हैं वे हैं– प्रारंभिक चरण, मध्यचरण और अन्तिम चरण। प्रथम चरण में रोगी से साक्षात्कार और उससे विश्वसनीय सम्बन्ध बनाया जाता है। मध्य चरण उस स्वरूप का पालन करता है। जिसमें उपचारिक उपक्रम होता है। इसमें दुबारा, अनुभवों को सीखना, मनोविकित्सीय सम्बन्ध और प्रेरक था आशा को सम्मिलित किया जाता है। ये उपचार एक सफल और आगे चलने वाली मांग के अन्तराल पर समाप्त हो जाता है। अब हम विभिन्न प्रकार के चिकित्सा का अध्ययन करते हैं

1) जीवन–चिकित्सा उपचार

जिन लोगों को स्वास्थ्य प्रशिक्षण दिया जाता है वो मानसिक बीमारी को शारीरिक बीमारी से जोड़ते है। अतः वो उनका औषधि द्वारा उपचार करते है। जो औषधि मनोवैज्ञानिक असंतुलन के लिए प्रयोग की जाती है वो हैं : इन्यूलीन कोमा उपचार मनोविदिलता से ग्रसित व्यक्ति के लिए, विद्युत धारा को दौड़ाया जाता है जिससे कि उथल–पुथल की

स्थिति पैदा हो। मनोविकृति, तनाव और चिन्ता का इलाज दवाइयों से भी किया जाता है। इन औषधियों दवाओं को हम साइकोट्रोपिक या एन्टीसाइकोटिक औषधि भी कह सकते हैं

2) मनस् चिकित्सा मनस्

चिकित्सा मनोगाहनीय संदर्श पर आधारित है। इस संदर्श के पीछे मुख्य विचार ये है कि मनोवैज्ञानिक समस्याए बाह्यजीवन अनुभव का परिणाम होता हैं मनोचिकित्सक विभिन्न प्रक्रियाओं का इस्तेमाल करता है जो संस्था मुक्त होती है जहाँ रोगी को वो बाते बोलने को कहा जाता है जो उसके मन में होती है तथा संक्रमण विश्लेषण किया जाता है। उसके सपनों का विश्लेषण जिसका अर्थ है कि रोगी चिकित्सक से उसी तरह बरताव करता है जिस प्रकार का बरताव उसने अपने जीवन में अन्य लोगों से किया था।

3) व्यावहारिय चिकित्सा

ये चिकित्सा सीखने के सिद्धान्त पर आधारित है। व्यवहारिक चिकित्सा में जिन प्रक्रियाओं का इस्तेमाल किया जाता है वो हैः क्रमबद्ध तरीके से असम्वेदनशील बनाना, द्वेषचिकित्सा, घुणतीय चिकित्सा, आधुनिक प्रक्रिया तथा जैवकीय कारण।

4) संज्ञात्मक चिकित्सा

ये चिकित्सा मान्यता प्रदति, नकारात्मक विचार में बदलाव और मानवग्रहण विश्वास पर ज्यादा दबाव देती है। इनमें से पहली चिकित्सा है – बैक्स चिकित्सा वह चिकित्सा है जिसमें व्यक्ति को सहायता मिलती है कि वह अपने नकारात्मक विचार को मान्यता प्रदान करे तथा उसकी व्याख्या करे। दूसरी चिकित्सा है रेश्नल इमोटिभ उपचार जिसमें मानवग्रहण विचारों की पुनः संरचना, स्व–मूल्यांकन और विश्वास प्रणाली को बदलने का प्रयास किया जाता है।

4.6 सारांश

हमने इस अध्याय में असमान्य व्यवहार के अनेक प्रकार तथा अवधारणाओं का अध्ययन किया है। असामान्यता एक समय में उपस्थित अनेक विशेषताओं को निर्धारित करती है। न असामान्य व्यवहार में इन लेखों की विशेषताओं को विकट घटना, आदर्श का उल्लंघन व्यक्तिगत तनाव, और अप्रत्याशित व्यवहार कहा जाता है। हमने असामान्य व्यवहार के कारण और जो तरीके सामान्य व्यवहार को अपनाने के लिए दिये गये हैं उनका अनेक उदाहरणों सहित अध्ययन किया है। इस अध्याय के अन्त में हमने वयस्कों में उपस्थित अनेक असामान्य विकृतियों को पढ़ा जैसे–दुश्चिन्ता विकृत, व्यक्ति विकृति एवं मनोविदिलता। हमने मनोविदिलता के प्रारम्भिक लक्षणों को पढ़ा एवं मनोविदिलता के विभिन्न प्रकार भी जाने। मनोवैज्ञानिक चिकित्सा एक सफल और जानी मानी विधि है जिसमें रोगी और चिकित्सक के बीच का सम्बन्ध बहुत महत्वपूर्ण है। मनोचिकित्सा के प्रमुख पाँच प्रकार हैं दृ वह लोग जो औषधीय प्रकार से मानसिक रोग का इलाज शारीरिक बीमारी की तरह करते हैं। कुछ अन्य और उपचार पद्धतियाँ जो मनोवैज्ञानिक विकृतियों के लिए उपयोग की जाती हैं वे – इन्सुलिन आघात चिकित्सा, विद्युत आघात चिकित्सा मनोविक्षिप्त विरोधी औषधियाँ। मनोगत्यात्मकता उपचार – मनोविश्लेषण पर आधारित हैं विभिन्न तकनीकें जो मनोवैज्ञानिक उपचार में उपचार में प्रयोग होती है वह हैं – स्थानान्तरण, साहचर्य, स्वप्न विश्लेषण और व्यवहार उपचार पद्धति में व्यवथित विसुग्रहीकरण, धनात्मक पुनर्बलन क्रमबद्ध प्रयोग, विमुखी उपचार पद्धति का उपयोग किया जाता है।

संज्ञात्मक उपचार नकारात्मक विचारों और असमायोजन के कारण जानने में मदद करता है और दबाव देता है।

4.7 शब्दावली

असामान्यता : असामान्यता शब्द के सम्मिलित रूप से एक शब्द का बोध होने लगा, जिसका अर्थ मानक से दूर, अथवा वह जो मानक से विचलित रहता है।

मानसिक विकृत्ति : मस्तिष्क में गम्भीर चोट में भी व्यवहार असामान्यताएँ कम मात्रा में उत्पन्न होती है दूसरी ओर मस्तिष्क कि छोटी–छोटी चोंटें भी व्यक्ति के व्यवहार में महत्वपूर्ण परिवर्तन कर देती है उसे मानसिक विकृति कहते है।

कुसमायोजन : जब कोई व्यक्ति परिस्थिति के साथ अपने को समायोजित करने में किसी मनोसामाजिक कारणवश कठिनाई का अभास करता है।

जैविकीय : इस उपचार को मेडिकल चिकित्सा भी कह सकते है। मानसिक रोगियों का आपात कालीन उपचार भी इन्हीं उपचार पद्धतियों द्वारा प्रारम्भ किया जाता है।

संज्ञानात्मकता : इसके अन्तर्गत हमारा बौद्धिक विकास आता है। जैसे–स्मृति प्रत्यक्षीकरण, न्यायिक शक्ति आदि।

उपचार : उपचार पद्धति के द्वारा रोगी के कुसमायोजित व्यवहार का रूपान्तरण किया जाता है उपचार पद्धति का मुख्य लक्ष्य व्यक्ति या समूह की सहायता करना होता है जिससे वह आदर्श व्यवहार को प्राप्त कर सके।

मनोविश्लेषण : इस सिद्धान्त की विलक्षणता का मूल आधार तथा शक्तिशाली तर्क यह है कि इस सिद्धान्त के विभिन्न आधार भूत से प्रत्ययों तथा जीवन के व्यवहारिक तथ्यों का घनिष्ठ सम्बन्ध स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है।

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

जी. सी. स्टेन (1998) *एबनार्मल सोइकोलॉजी*।

राबर्ट एल. क्रुक्स एण्ड जीन स्टेन (1988) *साइकोलॉजी साइंस बिहेवियर एण्ड लाइफ इण्ट्रोडक्शन टू साइकोलॉजी* – II A – टेक्सटबुक फार क्लास XII एन.सी.ई.आर.टी.

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) **असतत वृत्तान्त** : व्यक्तियों का समूह एक सामान्य व्यवहार को प्रदर्शित करता है जो व्यक्ति अपने को सामान्य दर्शाते हैं उनमें उच्चतम गुण होते है। लेकिन गत्यात्मकता को आत्मा के रूप में नहीं समझा जा सकता है असमानता व्यवहार को पहचानने के रूप में।

2) **आदर्शों का उल्लंघन या नैतिक दृष्टिकोण** : इस दृष्टिकोण के अनुसार सामान्य व्यक्ति का व्यवहार उसकी संस्कृति, धर्म और नैतिक नियमों के अनुसार होता है और असमान्य व्यक्ति का व्यवहार उसकी संस्कृति, धर्म और नैतिक नियमों के अनुसार नहीं होता है। संक्षेप में अनैतिक व्यवहार ही असामान्य व्यवहार है। नैतिक एवं अनैतिक की परिभाषा करना कठिन होता है क्योंकि एक समाज में जो नैतिक है, वहीं दूसरे समाज में अनैतिक समझा जाता है। यह अवधारणा अपने आपमें बहुत व्यापक है जैसे अपराधी और वेश्याएँ भी समाज का नैतिक दृष्टिकोण तोड़ती है परन्तु असमान्य मनोविज्ञान में नहीं पढ़ी जाती है।

व्यक्तिगत समायोजन दृष्टिकोण तनाव : एक व्यवहार, जो सुविचारित असमान्य है यदि यह किसी व्यक्ति में तनाव उत्पन्न करता है जो इसे महसूस करता है। उदाहरण के लिए उपभोक्ता अपनी मद्यपान की आदत को समझता है, कि यह अस्वस्थ है और वह अपनी इच्छा से इस आदत को रोकना चाहता है, इस व्यवहार को असामान्य कहा जा सकता है। व्यक्तिगत तनाव आत्म–स्व का नमूना नहीं है क्योंकि विभिन्न लोग इस मद्यसेवन से पीड़ा महसूस करते है वही यह निर्णय ले सकते है कि यह असामान्य व्यवहार है या नहीं।

विक्रिया : विक्रिया या अयोग्यता रूप एक व्यक्ति को असामान्य समझता है जब हम तक कि उसके भाव क्रिया या सोच उसके लक्षण को नहीं दर्शाते है कि वो इस समाज में एक सामान्य जीवन व्यतीत कर रहे है। उदाहरण के लिए असमान तत्वों के उपयोग से किसी व्यक्ति के कार्य निष्पादन में बाधा आती है।

अनपेक्षितता : इस प्रारूप में अप्रत्याशित व्यवहार की पुनरावृत्ति होने को लिया जाता है।

बोध प्रश्न II

1) यह विचार बताते है कि मानसिक विकृति मनोवैज्ञानिक या शारीरिक प्रक्रिया के कारण होता है। इस प्रारूप को हम चिकित्सीय प्रारूप भी कह सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति जो इन नमूनों पर कार्य करते है वह यह सोचते है कि असामान्य व्यहवार के उत्तर शरीर के अन्दर ही छिपे होते है। सदाहरण के लिए प्रयोग और सिद्धान्त के आधार पर यह कहा गया है कि चिंता विकट पंत नाड़ी तन्त्र में होने वाली किसी गड़बड़ी को रोकता है और जो किसी व्यक्ति में आसानी से उभारने या वंशानुगत योग्य बनाने का कारण बनता है ताकि मनोविदलता उत्पन्न हो सके। पिछले कुछ वर्षों में जैवकीय प्रयोगों ने छली मन के व्यवहार के समन्वयता के क्षेत्र में बहुत विकास किया है। लेकिन इतना कहना पर्याप्त नहीं है कि जैविक उदाहरण सभी आधारण आत्मविश्वास के प्रश्नों का उत्तर दे सकता है।

2) जाँचने के दो प्रमुख उपागम होते है– मनोवैज्ञानिक और जैविकीय जाँच।

मनोवैज्ञानिक जाँच : मनोवैज्ञानिक जाँच के अन्दर साक्षात्कार का समावेश होता है जो कि संरचनात्मक तथा खुली प्रकृति का होता है। मनोवैज्ञानिक परीक्षण जैसे संयम् जाँच व्यक्तित्व खोजें, बुद्धिमत्ता परीक्षण रचनात्मक परीक्षण हैं और विस्तार समबन्धी परीक्षण जैसे रॉसाक इनब्लॉक टेस्ट, प्रर्कणन सम्बन्धी परीक्षण खुले परीक्ष्ण हैं

इन परीक्षणों के अतिरिक्त निरीक्षण पद्धति भी किसी व्यक्ति के आँकलन में उपयोगी है।

जैवकीय निर्धारण : जैवकीय निर्धारण अपने कलात्मक तरीकों का प्रयोग करता है जैसे– (T – स्केन, PET–स्केन (पसीट्रोन इमीसन थर्मोग्राफी) आदि। जैसे मस्तिष्क के विभिन्न संरचनाओं को देखा जाता है।

बोध प्रश्न III

1) दुश्चिन्ता की व्याख्या हम इस तरह कर सकते है कि वह यह भय और चिन्ता की भावना होती है और रोगी में कुछ शारीरिक लक्षण पाये जाते है, जैसे–दिल की धड़कन चढ़ना, मांसपेशियों में खिचाँव और पसीना आना आदि। भय और दुश्चिन्ता में यह अन्तर है कि भय का कोई कारण होता है, और एक बार यह कारण पता चल जाये तो भय दूर होने लगता है जबकि दुश्चिन्ता किसी एक विशिष्ट कारण से नहीं जुड़ी होती और वातावरण में परिवर्तन से जल्दी दूर नहीं होती। दुश्चिन्ता विकृति लम्बे समय से ग्रसित दुश्चिन्ता के समय ही पहचाना जा सकता है।

2) मनोविदिलता के तीन प्रमुख प्रकार होते है – कैटाटोनिक मनोविदिलता पैरानाइड एवं असंघठित मनोविदिलता। पैरानाइड मनोविदिलता के प्रमुख लक्षण हैं – व्यामोह और विभिन्न प्रकार के विभ्रम; जैसे कुछ सुनाई देना आदि। यह रोगी–आशंकित और चिन्तित रहते है एवं इन्हें शक रहता है कि कोई उनका पीछा कर रहा है या उन्हें नुकसान पहुचाना चाहता है। कैटाटोनिक मनोविदिलता गत्यात्मकता सम्बन्धी पार विकारों से है। इसमें रोगी की दो अवस्थाएँ होती है। मूर्च्छित अवस्था एवं उत्तेजित अवस्था। उत्तेजित अवस्था में रोगी लगातार एक ही वाक्य दोहराता है या एक ही या क्रिया करता है और मूर्च्छित अवस्था में लगातार एक ही प्रकार से कई घण्टों बैठा रहता है

bdkbl 5 lkekftd eukfoKku dh eyHkr vo/kkj.kk,¡

: ij[kk

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा, प्रकृति और क्षेत्र

5.3 समूह में नेता का नेतृत्व और भूमिका

5.4 भीड़ और इसकी विशेषताएँ

5.5 असंयत भीड़ और असंयत भीड़ का मनोविज्ञान

5.6 जनमत : प्रभाव और समाज में प्रासंगिकता

5.7 प्रचार : प्रणाली और निहितार्थ

5.8 सामाजिक कार्यकत्ताओं के लिए सामाजिक मनोविज्ञान की प्रासंगिकता और महत्व

5.9 सारांश

5.10 शब्दावली

5.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

5-0 mís';

इकाई 2 में मानव व्यवहार को समझने के लिए कुछ महत्वूपर्ण मूल अवधारणाओं का आपने अध्ययन किया। इस इकाई में हम सामाजिक मनोविज्ञान की मूल अवधारणाओं के बारे में आपके सम्मुख सामान्य परिचय प्रस्तुत करेंगे। इस इकाई के अध्ययन के बाद आपः

- सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति और विस्तार क्षेत्र जान सकेंगे;
- समूह में नेता का नेतृत्व और भूमिका का पता लगा सकेंगे;
- भीड़ एवं उसकी विशेषताओं को समझ सकेंगे;
- असंयत भीड़ एवं असंयत भीड़ का मनोविज्ञान का विश्लेषण कर सकेंगे;
- जनमत : जनमत का प्रभाव एवं समाज में प्रासंगिकता की पहचान कर सकेंगे;
- प्रचार : प्रणालियों और निहितार्थ को समझ सकेंगे; और
- सामाजिक कार्यकत्ताओं के लिए सामाजिक मनोविज्ञान का महत्व और प्रासंगिकता को जान सकेंगे।

5-1 çLrkouk

सामाजिक मनोविज्ञान वैज्ञानिक रूप से समाज के सन्दर्भ में यह अध्ययन करती है कि लोग कार्य करते हैं, सोचते हैं एवं अनुभव करते हैं। यह ये भी ध्यान देती है कि लोगों के व्यवहार, सोच, एवं भावनाएँ दूसरे लोगों के कारण कैसे परिवर्तित होती है।

सामाजिक मनोविज्ञान किसी व्यक्ति के व्यवहार एवं विचारों का अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तःक्रिया के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है।

सामाजिक मनोवैज्ञानिक उन कारकों पर प्रकाश डालते हैं जो व्यक्ति की क्रियाओं और विचारों को विभिन्न सामाजिक परिप्रेक्ष्य कुछ विशेष कारणों पर प्रकाश डालते हुए व्यक्ति के कार्य एवं विचार को दूसरों द्वारा समझने का प्रयास करते है। वे मुख्यतः विस्तृत क्षेत्र और परिस्थितियों को समझने का प्रयास करते हैं, जो व्यक्ति सामाजिक व्यवहार एवं विचार, उनकी क्रियाओं, भावनाओं, विश्वासों, स्मृतियों एवं प्रभावों को अन्य लोगों के संदर्भ, स्वरूप प्रदान करते हैं। यह कारण चाहे सामाजिक, भौगोलिक पारिस्थितिक और सांस्कृतिक लक्षण तथा उनके अन्य व्यक्तियों से संबंध पर आश्रित होते हैं। समाज मनोवैज्ञानिक इन सारी चीजों को ध्यान से देखते हुए विभिन्न प्रकार के आधुनिक वैज्ञानिक, शोध, प्रारूप, नए–नए सिद्धान्त निकलने की कोशिश में लगे रहते हैं।

5-2 lkekftd eukfoKku dh ifjHkk"kk ,o ç–fr {k=

सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए समाज मनोविज्ञान की प्रासंगिकता एवं महत्व समझने के क्रम में समाज मनोविज्ञान की प्रकृति एवं क्षेत्र को समझना आवश्यक है। सामाजिक मनोविज्ञान को विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा अपने–अपने शब्दों में पारिभाषित किया गया है जो कि उसके स्परूप एवं विस्तार क्षेत्र पर प्रकाश डालते हैं। आइए अब हम यहाँ सामाजिक मनोविज्ञान की कुछ परिभाषाओं को देखने का प्रयास करते हैं :

i) सामाजिक मनोविज्ञान को समाज में व्यक्ति के व्यवहार के विज्ञान के रूप में विस्तार से परिभाषित किया जा सकता हैं। (क्रेच डी और रिचर्ड क्रटुच फील्ड)

ii) समाजशास्त्री का (प्राथमिक) सम्बन्ध सामूहिक व्यवहार से है और समाज मनोविज्ञान को सामूहिक परिस्थितियों में व्यक्ति का व्यवहार है (ओटो क्लीनबर्ग)।

iii) सामाजिक मनोविज्ञान एक ऐसा वैज्ञानिक क्षेत्र है जो समूह की सामाजिक परिस्थिति में व्यक्ति के व्यवहार तथा विचारों के कारणों को और प्रकृति को समझने का प्रयास करता है (रोबर बारोन्स और डार्नबिर्ने)।

iv) समाज मनोविज्ञान प्रभावी प्रक्रिया का वैज्ञानिक अध्ययन है। यह समझने, स्पष्ट करने और भविष्यवाणी करने का प्रयास करता है कि अन्य व्यक्ति, लोगों के समूह और पर्यावरणीय कारकों की उपस्थिति किसी व्यक्ति के विचारों और व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं (जी.डब्ल्यू आलपोर्ट)।

सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों के एक दूसरे से अन्तः क्रिया और उसके बात–व्यवहार, संवेदनाएँ और आदत को परखने का एक विस्तृत अध्ययन है। इसमें यह बताने की कोशिश की जाती है किस प्रकार एक व्यक्ति का व्यवहार और उसके गुण अन्य व्यक्ति को प्रभावित करते हैं या प्रभावित हो जाते हैं। यह मनोविज्ञान की एक शाखा है जो कि एक दूसरे के विचारों को समझने का प्रयास करती है। यह उन कारणों पर भी प्रकाश डालती है जो विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में व्यक्ति के विचारों और क्रियाओं को बनाते तथा आकार देते हैं।

समाज मनोवैज्ञानिक स्थितियों को समझने से सम्बन्धित है, जो व्यक्तियों के विचारों, सामाजिक व्यवहार का निर्माण करते हैं और उनकी क्रियाएँ, संवेदनाएँ, आदतें, स्मरण–शक्ति तथा अन्य व्यक्तियों से सम्बन्धित हैं। इसके सम्बन्ध में अनेक कारक अपनी प्रमुख भूमिका निभाते हैं। सामाजिक क्रिया को प्रभावित करने वाले कारकों को पाँच श्रेणियों में बाँट सकते हैं।

i) अन्य लोगों की कार्य विशेषताएँ कि वह क्या कहते और करते हैं।

ii) मूल संज्ञानात्मक प्रक्रिया जैसे की तार्किकता, स्मरण, जो कि हमारे अन्य लोगों के विचारों, न्याय आदि को प्रभावित करती है।

iii) परिस्थिति, परिवर्तनशीलता – प्रत्यक्ष या अपत्यक्ष कारण जो भौतिक वातावरण हमारे ऊपर प्रभाव डालते हैं जैसे – तापमान, भीड़ उससे जुड़े तत्व, गोपनीयता आदि।

iv) सांस्कृतिक प्रसंग जिससे सामाजिक व्यवहार एवं विचार पनपते है।

v) जैविक कारक और उसके साथ जुड़े तथ्य जो हमारे व्यवहार के लिए आवश्यक हैं, इसमें अनुवांशिकता भी आती है।

आइए, अब हम यह स्पष्ट करने की कोशिश करेंगे कि कैसे उपर्युक्त कारक हमारे सामाजिक व्यवहार और विचारों में महत्वपूर्ण हैं। नीचे दी गई स्थिति को समझे :

- कल्पना कीजिए कि आप एक मित्र से बात कर रहे हैं और कोई अन्य व्यक्ति तुम दोनों से अचानक बात करने लगते हैं।
- मान लो कि तुम प्रवेश के लिए प्रार्थना पत्र खरीदने के लिए पंक्ति में खड़े हो उसी समय अचानक कोई दूसरा व्यक्ति तुम्हारे कतार को काटकर ठीक आपके आगे खड़ा हो जाए।
- तुम्हारे वक्तव्य के बाद दर्शकों में से कोई व्यक्ति टिप्पणी करे कि "यह शानदार वक्तव्य था।'' क्या ये दूसरों के व्यवहार एवं चिन्तन अपने कार्य को प्रभावित करेंगे?

आप देखेंगे कि दूसरे लोगों के ये कार्य आपके व्यवहार एवं चिन्तन पर प्रभाव डालेंगे। यह सच है कि दूसरे लोगों के इन कार्यों एवं व्यवहार से आप प्रभावित महसूस करेंगे। अक्सर हम दूसरे लोगों के दृश्य व्यवहारों और घटनाओं से प्रभावित होते हैं।

आइए, ऊपर उल्लेखित कारकों के प्रभाव का परीक्षण करते हैं :

संज्ञान प्रक्रिया जैसे कि स्मृति, हस्तक्षेप, न्याय आदि के सामाजिक व्यवहार को समझने के लिए ध्यानपूर्वक जानना चाहिए।

उदाहरणस्वरूप, हम उस समय अत्यधिक गुस्सा महसूस कर सकते हैं जब एक मित्र हमारे पास अत्यधिक देर से आए और इसके बदले केवल ''क्षमा करना" बोल दें। लेकिन यदि वह मित्र अपने देर से आने के कारणों को विश्लेषित कर दे तो हमारा गुस्सा कम हो जाएगा और हम धीरे–धीरे शान्त हो जाएँगे। यदि वह देर से आने का आदी हो तो हम उसके विश्लेषण पर विश्वास नही कर सकते है। परन्तु यदि मित्र पहली बार देर से आता है तो हम उसके तर्क को स्वीकार कर लेते हैं। इस स्थिति में हमारी प्रतिक्रिया हमारी स्मृति पर आधारित होती है, मित्र के पिछले व्यवहारों के आधार पर ही उसके तर्क को समझेंगे।

'पारिस्थितिकीय चर' हमारे विचारों एवं व्यवहार पर (पारिथितिकीय परिवर्तन) और भौतिक वातावरण भी प्रभाव डालते है। अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि चाँदनी रात में लोग, अन्य समय की उपेक्षा अधिक अधीर व अव्यवस्थित होते हैं। गर्म एवं उष्ण मौसम में ठण्ड एवं आरामदायक मौसम के अपेक्षाकृत अधिक उग्र एवं पसीना युक्त हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त ध्वनियुक्त प्रदूषणयुक्त तथा भीड़ भरे पर्यावरण का प्रभाव भी हमारे सामाजिक व्यवहार और कार्यों पर पड़ता है। भौतिक पर्यावरण हमारे भावनाओं, अनुभवों, विचारों एवं व्यवहारों को प्रभावित करता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक बन्धन भी हमारे व्यवहार वैवाहिक सम्बन्धों की स्थिति, अनुशासन एवं पैरेटिंग, लोगों को दहेज एवं वोटिंग केस दर्ज में राय और विचारों को व्यापक रूप से प्रभावित करते हैं। विवाह के लिए साथी का चुनाव तथा भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ भी सामाजिक सांस्कृतिक कारकों के सन्दर्भ में सामाकि सांस्कृतिक परिस्थितियों के ऊपर निर्भर होती हैं। सांस्कृतिक कारक वर्तमान के सामाजिक मनोवैज्ञानिको के लिए अधिक महत्वपूर्ण और चुनौती बन चुके हैं।

जैविकीय प्रक्रियाएँ तथा अनुवांशिक कारक भी हमारे सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं। अधिकतर मनो–सामाजिक चिन्तक यह विश्वास करते हैं कि हमारा निष्पादन, व्यवहार, भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ, मूल्य, मनोवृत्तियाँ इत्यादि भी हमारे जैविकीय कारकों द्वारा प्रभावित होते हैं। सामाजिक मनोवैज्ञानिक यह भी कल्पना करते हैं कि समाज व्यवहार का प्रत्येक सन्दर्भ गतिक परिवर्तन के लिए खुला है जैसा कि लाखों लोग दृश्यगत समस्याओं से घिरे हैं लेकिन इसको लेन्स (चयमें) के उपयोग से सही देख पाते हैं।

ck/k ç'u I

fVIi.kh % क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित कीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

5-3 leg e urk dk urRo vkj Hkfedk

नेतृत्व एक सामाजिक विषय जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक या अन्य रूप में देखा जा सकता है। नेतृत्व को विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है :

नेतृत्व को ''एक सामाजिक प्रभाव की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें एक व्यक्ति अपने सामान्य कार्य को पूरा करने में दूसरे व्यक्तियों की मदद एवं सहायता को सूचीबद्ध करता है।'' – चेम्मर्स एम. (1997)।

'नेतृत्व एक योग्यता है जो दूसरों की दिशा निर्णय में बिना दबाव के मार्गदर्शन देती है जो कि उनको सशक्त एवं सम्पूर्ण महसूस करती है" – लांजा केस, हेनसन, सी.ई.ओ. सुंग्गुवुग्ग।

''एक नेता वह है जिसका यह स्पष्ट है कि क्या सही चीजे करनी है एवं विश्वास कि वह गलत है तथा कठिन होने पर भी वह सही चीजें करें'' – डार्सी इकेनबर्ग, संस्थापक रेड केप रिवोलूसन.काम।

''नेता वह व्यक्ति है जो आपको वहाँ ले जाता है जहाँ आप अकेले नहीं जा सकते।'' सुसन अस्थर, सी.ई.ओ., संस्थापक एवं अध्यक्ष, सु सन अरूचर.काम।

नेतृत्व एक विशेष प्रकार की स्थिति है जो, कि पूरे विश्व में व्यापक रूप से फैली हुई है। यह जीवन के प्रत्येक भाग में किसी न किसी रूप में देखी जाती है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें कि एक समूह के क्रियाकलाप को प्रभावित कर उनके द्वारा संगठन के लक्ष्य की प्राप्ति की जाती है। एक समूह का सदस्य जो अन्य सदस्यों के ऊपर सकारात्मक प्रभाव डालने में सफल होता है वह नेता होता है। उसके द्वारा कोई भी व्यवहार एवं क्रियाकलाप अन्य सदस्यों को प्रभावित करने के लिए क्या किया जाए वह नेतृत्व का एक लक्षण होता है। समूह का सदस्य जो कि जोखित भरा कार्य करने से भी नहीं हिचकते वह ही नेतृत्व का कार्य करते हैं। ''नेता वह व्यक्ति है जो आपको वहाँ ले जाता है जहाँ आप अकेले नहीं जा सकते।" सुसन अस्थर, सी.ई.ओ., संस्थापक एवं अध्यक्ष, सुसनअस्थर कॉम। नेतृत्वकारी के मुख्यतः जीन आयाम होते हैं :

1) किसी स्थिति की एक विशेषता

2) एक व्यक्ति की विशेषताएँ

3) व्यवहार की श्रेणी

ये तीनों आयाम एक व्यक्ति में पाए जाएँ वह एक अच्छा नेता साबित होता है। इसके अलावा वह नेता अन्य समूहों से भी बात–चीत कर तालमेल स्थापित करने की कोशिश करता है एक व्यक्ति जो कि नेतृत्व की स्थिति में है, वह समूह को प्रभावित करता है तथा समूह स्वयं भी उस व्यक्ति से प्रभावित होता है। समूह के सदस्यों को प्रभावित करने के अलावा नेता अपने समूह की ओर से बातचीत करता है एवं एक संचार की कड़ी के रूप में कार्य करता है। नेतृत्व एक व्यवहार है जो अन्य लोगों के व्यवहार से प्रभावित होने के अपेक्षा अन्य के व्यवहार को अधिक प्रभावित करता हैं नेता की कुछ व्यावहारिक विशेषताएँ निम्न प्रकार से हैं –

i) ckf)d ;kX;rk % कोई भी नेता भले ही वह चुना जाय या नामित किया जाये उसमें साधारण समूहों के सदस्यों के अपेक्षा अधिक बौद्धिक क्षमता होती है।

ii) çHkkRo % एक नेता समूहों के अन्य व्यक्तियों और उनके व्यवहारों को प्रभावित करता है।

iii) lek;kstu % एक नेता के अन्दर दूसरों की अपेक्षा समूह में समायोजन की अधिक क्षमता होती है।

iv) vfuf'prrk % अधिक स्वतंत्र तथा समूह के दबाव में नहीं आता और बिना दूसरों लेने के ऊपर आश्रित हुए अपनी योग्यता के आधार पर निर्णय लेता है। वह समूह की। एकता के बारे में लोगों से ज्यादा लगाव रखता है। अपने अनिश्चित विचार और व्यवहारों को स्पष्ट करते हुए, नेता समूह की एकता को बनाये रखता है।

v) lkekftd njh % नेता समूह के सदस्यों के साथ अधिक घनिष्ठता और नजदीकी नहीं रखता। वह समूह के अन्य सदस्यों से सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक दूरी रखता है। यह सामान्यतः समूह कार्य की कार्य प्रणाली में होता है।

vi) nlj ds çfjr dju dh ;kX;rk % यह एक आन्तरिक गुण होता है, एक प्रकार का आन्तरिक करिश्मा न कि सीखा हुआ व्यवहार।

vii) leL;k lqy>ku dh {kerk % एक नेता के अन्दर इतना धैर्य और योग्यता होती है कि वह समस्या को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखें और उन्हें सुलझाए ।

viii) lo`xkRed o;Ldrk % एक प्रभावशाली नेतृत्व के लिए संवेगात्मक स्थिरता एवं वयस्कता बहुत महत्वूपर्ण है। यह तब प्रतिबिम्बित होता है, जब नेता जिन्दगी की परिस्थितियों का अच्छा करता है। एक नेता सफलता और असफलता दोनों को संतुलित तरीके से स्वीकारता हैं एक नेता स्वयं पर भरोसा रखता है, खुले दिमागवाला एवं नियंत्रित रहता है इसके अतिरिक्त–विरोध और असमानता में भी शान्तिपूर्वक कार्य करता हैं। वह विश्व और जीवन के प्रति संतुलित व्यवहार रखता है। एक नेता का व्यक्तित्व बिना किसी द्वेष के नर्म, दयालु एवं संवेदनशील होता है।

ekuo 0;ogkj dk le>u dh ;kX;rk % एक नेता अपने समूह के सदस्यों की जरूरतों, इच्छाओं और व्यवहार को समझता है और उन्हें एक व्यक्ति के समान इज्जत देता है। वह समूह के सदस्यों के संवेगों और इच्छाओं की समझता है एवं उनके अहम् को खतरा पहुँचाने वाली क्रियाओं को रोकता है।

ekf[kd ldkjkRedrk : नेता प्रभावशाली वक्ता, अपने विचार और दृष्टि के प्रति आत्मविश्वासी होता है। वह अपनी विचारों को ईमानदारी और सीधे तरीके से दूसरों तक पहुँचाता है।

[krjk mBku dh {kerk : एक अच्छा नेता नयी चुनौतियों को स्वीकारता है। वह असफलता की जिम्मेदारी स्वयं लेता है और दूसरों को दोषी नहीं ठहराता। वह हार और कुण्ठा को सहन करता है।

lxBukRed d y{; d çfr leil.k % नेता वह व्यक्ति होता है जो संस्था के उद्देश्यों के बारे में बताता है और अभिप्रेरित करता है कि वह संगठन के लक्ष्य के प्रति समर्पित हो।

le>krk % भिन्नता या असमानताओं का निवारण करना नेता का प्रमुख कार्य होता है। नेता इन भिन्नताओं का निवारण समझौते या सामूहिक राय से करता है।

urRo d çdkj % मनोवैज्ञानिकों ने नेतृत्व के विभिन्न वर्गीकरण किए हैं। बोगार्डस के अनुसार (1940) ने पाँच प्रकार के नेतृत्व बताए हैं :

(i) प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष नेता, (ii) सपक्षी एवं वैज्ञानिक, (iii) सामाजिक, अधिशासी एवं मानसिक नेतृत्व, (iv) निरंकुश, करिश्माई पैतृक एवं प्रजातांत्रिक नेतृत्व, (v) पैगम्बर, संत, विशेषज्ञ एवं मालक।

- çR;{k urk : प्रत्यक्ष नेता अपने अनुयायियों के साथ प्रत्यक्ष समपर्क रखता है अर्थात् उनके समस्याओं एवं आवश्यकताओं के समझता है , सुनता है। इसमें नेता समूह के सदस्यों से वार्तालाप और उनकी समस्याओं को आमने–सामने बैठकर सुलझाता है। vçR;{k urRo % अपने द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त, तथ्य से अपने अनुयायियों को प्रभावित करता है। इस श्रेणी के अन्तर्गत वैज्ञानिक, लेखक एवं दार्शनिक आते हैं।

- li{kh dk;l % सपक्षी नेतृत्व में नेता समूह का नेतृत्व करता है और अपने समूहों के सदस्यों की कमजोरी नहीं बताता। राजनीतिक एवं धार्मिक नेता इसके अन्तर्गत आते है। oKkfud urRo में नेता तार्किकता के द्वारा समूह के प्रदर्शन की समीक्षा करता है। वह समूह के प्रदर्शन का सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों पहलुओं की चर्चा करता है।

- lkekftd dk;l % इसके अन्तर्गत सामाजिक नेता अपने समूह के लिए सार्वजनिक रूप से कार्य करता है। मानसिक नेता अच्छे से अच्छा कार्य करने के लिए एकाकी और शान्तिपूर्ण वातावरण पंसद करता है, सामाजिक कार्यकर्त्ता, मानसिक नेता होते

हैं। vf/k'kklh नेता के अंदर सामाजिक एवं मानसिक नेताओं के गुणों का समावेश होता है। अधिशासी नेता में सामाजिक कार्यकर्ता के गुणों का समावेश होता है। इसके साथ ही वह समूह के विचारों को प्रभावित करने में सक्षम होता है।

- fujdq'k urk] अधिकतर सत्ता व प्रभुत्व अपने पास रखता है। अधिकतर कार्य स्वयं करता है , उसे सदस्यों को सजा तथा पुरस्कार के लिए किसी के निर्णय की आवश्यकता नहीं होती है। करिश्माई नेता को ईश्वर प्रदत्त व्यक्तित्व प्राप्त होता है। वह लोगों की संवेदनाओं को उनकी समस्याओं को हल करने में सहायता करता है। ir d urk सदस्यों के लिए पिता समान होता है। समूह के सदस्य उसे पिता की तरह आदर करते हैं। çtkrkf=d urk अपने समूह को अपने सुविधा, इच्छा, आवश्यकता से अपने समूह की आवश्यकताओं की पूर्ति की ओर विशेष ध्यान देता है और समूह की ताकत बैंटी हुई होती है।

- ixEcj urk % दैवीय शक्ति का आदेश वक्ता के रूप में लोगों तक पहुँचाता है और लोग उसकी इस प्रकार की प्राकृतिक शक्ति को देखकर प्रभावित होते हैं और उसके अनुयायी बन जाते हैं। संत पवित्र जीवन बिताने के कारण कुछ असाधारण एवं गुणात्मक विशेषताओं के कारण अन्य व्यक्तियों की वेदनाओं एवं इनके विचारों पर अपना अधिकार जमा लेता है। विशेषज्ञ नेता एक सलाहकार की तरह कार्य करते हैं। वह किसी संगठन में नीति बनाने और नियोजित करते समय एक आलोचक, संसाधन और वक्ता के रूप में कार्य करता है।

आइए, विभिन्न नेतृत्व के प्रकारों को देखते हैं एवं इनकी ऊपर उल्लेखित दृष्टिकोण के आधार पर चर्चा करते हैं

i) राजनीतिक नेता

ii) नौकरशाह नेता

iii) कूटनीतिज्ञ नेता

iv) सुधारक नेता

v) सिद्धान्तवादी (विचारक) नेता

i) jktuhfrd urk के अंदर अनेकों खूबियाँ होती है 'जिसमें' कुछ हैं – सत्ता के चाहत के लिए संघर्ष, दलबंदी कर सके, चुनाव जीत सके, राजनीति चाल नही चल सके, ये हमेशा व्यक्तिगत संबंध स्थापित करता है और सहानुभूति करता है। वह नीति निर्धारक, आदर्श निर्धारण, आदि का कार्य करता है।

ii) ukdj'kkgh urk वह होता है जो किसी संगठन में सबसे ऊँची स्थिति पर होता

iii) dVuhfrK एक देश सरकार या कम्पनी द्वारा निर्धारित नीति पर वार्ता करता है और उसका प्रतिनिधित्व करता है। वह अपने देश की नीति और कार्यक्रमों के अनुसार कार्य करता है।

iv) l/kkjd एक आदर्शवादी चिन्तक होता है जो समाज की बुराइयों का अवलोकन करके उन्हें दूर करने का प्रयास करता है।

v) fl)kUroknh urk तर्क संसार में वश्वास रखता है अपने विचारों को सदैव तर्क द्वारा समझाता है।

fyfiV ,o gkbV के अनुसार – नेतृत्व तीन प्रकार के होते है : (i) निरंकुश नेतृत्व, (ii) मनोविज्ञान के मूलतत्व नौकरशाह नेता, (iii) स्वतंत्र आर्थिक नेता

i) निरंकुशनेतृत्व अधिकतर सत्ता पर प्रभुत्व अपने पास रखता है। वह अकेला ही बड़ी–बड़ी योजना बनाता है और अंतिम मध्यस्थव एवं न्यायाधीश के रुप में व्यक्तिगत सदस्यों को पुरस्कार – दण्ड देने का कार्य करता है।

ii) प्रजातंत्रात्मक नेतत्व प्रत्येक सदस्य का समूह की क्रियाओ में अधिक से अधिक सहभागिता चाहता है। वह उत्तरदायित्व को केन्द्रित न करके सदस्यों में प्रसारित करता है। वह समूह के सदस्यों के बीच उत्पन्न तनाव एवं संघर्ष को कम करता है।

iii) अहस्तक्षेप नेतृत्व में नेता अपने कार्य कलापों को समूह के प्रत्येक सदस्य में विभाजित करता है। वह नियोजन प्रेरणा, नियंत्रण के लिए बाहरी शक्तियों एवं समूह के बीच संधि कराने के लिए प्रयास करता है। ऐसा व्यक्ति पर्याप्त मात्रा में सूचना और सामान उपलब्ध कराता है और असामान्य रूप से अन्य सदस्यों की तरह व्यवहार करता है। इस प्रकार का नेतृत्व शोध प्रयोगशाला में पाया जाता है, जहाँ शोधकर्ता अपना निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं। विश्विद्यालय में विभागाध्यक्ष केवल शिक्षकों को पढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम देता है और उनके पढ़ाने के तरीके में अड़चन नही पैदा करता है।

एक सफल नेता के लिए कुछ विशिष्ट गुण व लक्षण होने चाहिए जो कि निम्नलिखित हैं– स्नायु एवं दैहिक शक्ति, उद्देश्य एवं साधनों का पर्याप्त ज्ञान, मैत्री और अनुराग, विश्वास, निश्चय, उत्साह, बुद्धि, तकनीकी विद्वता एवं शिक्षा देने की कुशलता और खुले ह्रदय का विश्वसनीय व्यक्ति होना चाहिए। दूसरे लोगों पर लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रभावित करने की क्षमता, आत्मविश्वास, अपनी क्षमताओं पर विश्वास के गुण भी एक अच्छे नेता में होने चाहिए। एक अच्छे नेता में, क्रियाशीलता, वास्तविक सोच तथा परिवर्तित स्थितियों के साथ लचीलापन भी होना चाहिए। वह समूह की क्रियाओं का पर्याप्त जानकार ओर सम्बन्धित मामलों में तकनीकी का जानकारी होना चाहिए।

leg e urk dh Hkfedk

एक समूह में नेता की भूमिका जिन चीजों पर निर्भर करती है उनमें नेतृत्व की प्रकृति, समूह के उद्देश्य एवं गणात्मक योग्यता आवश्यक है। बॉस की तरह के नेता किसी संगठन में पदसोपान के आधार पर विभाजित संगठन में अच्छी तरह कार्य कर सकता है। करिश्माई नेता विश्वसनीय धार्मिक समूह में प्रभावपूर्ण तरीके से कार्य कर सकता है। एक प्रजातांत्रिक नेता समूह में शक्ति–विकेन्द्रीकरण के सम्बन्ध में बहुत प्रभावपूर्ण ढंग से अपनी भूमिका निभा सकता है। सुधारक सामाजिक बुराइयों जैसे– शराबबन्दी, 12 मानवाधिकार उल्लंघन, अस्पृश्यता में अपनी मुख्य भूमिका निभाता है। इन सबके अलावा एक कुशल एवं योग्य नेता निम्नलिखित कार्य करता है –

i) vf/k;ktd ,o uhfr fuekZrk d: i e & यह एक नेता का महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें वह योजना प्रक्रिया उपयुक्त नीति और उसका क्रियान्वयन अपने आप से तथा समूह के अन्य व्यक्तियों के परामर्श एवं सलाह–मशविरा से करता है। इनमें संगठन के नीति निर्देशक तत्व और मुख्य सलाहकार की भूमिका भी अहम होती है। वह समूह उद्देश्य की पूर्ति एवं सुचारू रूप से समूह का कार्य करें।

ii) vf/k'kkL=h d: i e & सामूहिक क्रियाओं के संचालन नेता के निर्देशन से किए जाते हैं। नेता ही नीतियों का निर्धारण करता है और प्रत्येक कार्य के लिए समूह के सदस्यों की नियुक्ति करता है।

iii) fo'k"kK d: :i e: & चूंकि एक नेता कुछ विशेष क्षेत्र का विशेषज्ञ होता है वह सामाजिक समूह को तकनीकी जानकारी और सलाह प्रदान करता है।

iv) ,d çfrfuf/k d: :i e: & नेता ही समूह के बाह्य संबंधों को स्थापित करता है। जहाँ पर समूह के अन्य व्यक्ति अन्य समूहों के व्यक्तियों से संबंध नहीं स्थापित कर पाते है वहाँ इसका कार्य प्रमुख होता है।

v) ij"dkj vkj n.M d: fu/kkjd d: :i e: & एक नेता अच्छे कार्यों के लिए पुरस्कार, जबकि गलत व्यवहार एवं कार्य के लिए समूह के सदस्यों को दण्ड देता है। इससे समूह में शासनात्मक एवं प्रेरणात्मक नियंत्रण स्थापित होता है।

vi) vUr%lcZ/kk d: fu;=d d: :i e: & समूह का नेता किन्ही अन्य सदस्यों की अपेक्षा समूह के विशिष्ट विवरण समूह के संगठन और समूह के स्वरूप के विषय में अधिक जानता है। इसलिए वह एक नियंत्रक के रूप में कार्य करता है। वह समूह की गतिविधियों को बढ़ावा भी दे सकता है और रोक भी सकता है।

vii) iap ,o e/;LFk d: :i e: & एक नेता से समूहों के आंतरिक संघर्ष अथवा तनाव के समय एक पंच और मध्यस्थ के कार्य की भी अपेक्षा की जाती है। आदर्श रूप में वह निष्पक्ष न्याय करता है। और समूह का वातावरण शान्तिमय बनाने का प्रयास करता है।

viii) ,d vkn'k d: :i e: & समूह का प्रतीक होने के नाते एक नेता से आदर्श व्यवहार की आशा की जाती है। वह सभी सदस्यों के लिए सर्वोच्च चरित्र और चाल–चलन से के आदर्श के रूप में अपने को प्रदर्शित करता है की समूह के अन्य सदस्य क्या करें और क्या न करें।

ix) leg d: çrhd d: :i e: & समूह के सदस्यों के कार्यों में ज्ञानात्मक स्पष्टता का होना आवश्यक होता है। इसमें समूह के ज्ञानात्मक प्रतीक के रूप में कार्य करता है जैसे– ब्रिटेन का शाही परिवार इसका ज्वलंत सदाहरण है।

x) 0;fDrxr mÙkjnkf;Ro d: fodYi d: :i e: & कभी–कभी नेता एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य अपने समूह के लिए करता है जिससे समूह के सदस्यों को अपने व्यक्तिगत उत्तरदायित्वों से छुटकारा मिल जाता है। नेता ही उनका प्रतिनिधित्व करता है और उन्हें उस पर पूर्ण विश्वास होता है।

xi) fopkjd d: :i e: & कुछ परिस्थितियों में नेता समूह के समक्ष नयी विचारधाराएँ प्रस्तुत करता है। इसके अलावा वह समूह के प्रत्येक सदस्य के साथ विचार, व्यवहार एवं विश्वास के स्रोत के रूप में कार्य करता है।

xii) firk d: :i e: & नेता समूह के सदस्यों के लिए पिता स्वरूप होता है। वह पहचान परिवर्तन एवं नम्रता की वेदनाओं का आदर्श प्रयोजन होता है।

xiii) cfy d: cdj d: :i e: & जिस प्रकार नेता समूह के प्रति भावनात्मक वेदनाएँ निर्मित करता है उसी प्रकार परिस्थिति के अनुसार वह अपने को असंतुष्ट समूह के कोप भाजन का शिकार बनाता है।

उपर्युक्त सभी गुणों को प्राथमिक एवं द्वितीयक गुणों में मान सकते हैं। प्राथमिक भूमिका में नेता एक अधिशासी, नीति–निर्माता, विशेषज्ञ, नियोजक, बाहरी समूह के प्रतिनिधि, नियंत्रक एवं आतरिक सम्बन्धों में मार्गदर्शक, पुरस्कार और दण्ड के निर्धारक के रूप में, मध्यस्थ तथा पंच आदि का कार्य करता है तथा उदाहरण देने वाले रूप में नेता एक आदर्श के

रूप में, बाहरी समूह के प्रतीक के रूप में, व्यक्ति की उत्तरदायित्व के विकल्प के रूप में, विचारक, पिता की भूमिका एवं बलि का बकरा बनने जैसे कार्य उसके हिस्से में आते हैं।

ck/k ç'u II

fVIi.kh % क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) नेता की आठ व्यावाहारिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

2) समूह में नेता की कुछ मुख्य भूमिकाओं का वर्णन करो?

.....

.....

.....

.....

.....

5-4 HkhM vkj bldh fo'k"krk,¡

प्रायः हम लोग किसी भी तरह से इकट्ठे हुए मनुष्यों के समूह के लिए भीड़ शब्द का प्रयोग करते हैं। सामान्यतः यह धारणा है कि सिनेमा का टिकट खरीदने के लए खिडकी पर इकट्ठे लोग या सिनेमा खत्म होने के बाद बाहर निकलते लोग, अपनी–अपनी कक्षाओं से बाहर आते स्कूली बच्चे या स्कूल के गेट पर खड़े बच्चे या किसी हाल में बैठे लोगों के लिए भीड़ शब्द का प्रयोग करते हैं। किन्तु ये परिस्थिति भीड़ कहने लायक नहीं है, परन्तु ये भीड़ में बदल सकती है। ये केवल इसलिए भीड़ कहा जा सकता हैं। क्योंकि एक असंगठित समूह है। सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र भीड़ का मनोविज्ञान दो दशकों के अन्त में उन्नीसवीं शताब्दी में आया जब फ्रांस के मनोवैज्ञानिकों ने इसके सम्बन्ध में अध्ययन किया। किसी कार्य के सम्बन्ध में सामान्य उद्देश्यों के खातिर अधिक संख्या में इकट्ठे लोग भीड़ हैं।

जब किसी सीमित क्षेत्र में अधिक संख्या में व्यक्ति एक सामान्य उद्देश्य के लिए प्रतिक्रिया करें तो उनकी उपस्थिति को भीड़ कहा जा सकता है। भीड़ एक क्षणिक, निकटवर्ती समूह है यह असंगठित होता है और किसी सामान्य उद्देश्य के लिए बनता है। भीड़ व्यक्तियों का एक समूह है जो अल्पकालिक समय के लिए भावनाओं और क्रियाओं में एकता प्रदर्शित करता है, यह एकता इस बात से उत्पन्न होती है कि उनके ध्यान का केन्द्र एक ही वस्तु, आदर्श या पदार्थ है। भीड़ की आधारभूत एवं अनिवार्य विशेषता मानसिक एकता है। भीड़, भीड़ में उपस्थित व्यक्ति जो कि उसका सदस्य होता है उससे भी प्राचीन है।

विभिन्न सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने भीड़ का विभिन्न प्रकार से वर्गीकरण किया है – सर्वप्रथम को दो समूहों में विभाजित किया गया है –

i) Jkrk : श्रोता एक निष्क्रिय भीड़ है जैसे धार्मिक स्थान में एकत्रित भीड़ (गुरूद्वारा, मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर)। किसी नेता का भाषण को सुनने के लिए, सिनेमा या सर्कस को देखने के लिए एकत्रित लोगों को निष्क्रिय भीड़ कहते हैं।

ii) lfØ; HkhM : सक्रिय भीड़ चार प्रकार की हो सकती हैं। क) संगठित या असंगठित भीड़ जो कि किसी आतंक से भाग रही हो। ख) अर्जित, ग) व्यक्त करना (प्रदर्शित भीड़), घ) आक्रामक जैसे कि दंगा–फसाद, आतंक और बीच सड़क में फाँसी देने जैसे कार्यों में प्रदर्शित होती है।

Hkkxrh gb HkhM में भावनाएँ महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। कोई भी सक्रिय भीड़ एक भागती हुई भीड़ के रूप में वाह्य बल द्वारा परिवर्तित की जा सकती है। तोड़–फोड़ एवं लूट में सक्रिय भीड़ पुलिस द्वारा मारे जाने, आँसू गैस छोड़ने या हवाई फायरिंग करने पर भागती हुई भीड़ में परिवर्तित हो सकती है। इस स्थिति में यह भीड़ भयग्रस्त भीड़ कहलाती है। यह दो तरह की हो सकती है। (1) संगठित (2) असंगठित। vlxfBr भयग्रस्त भीड़ में सदस्य फैल जाते हैं (या बिखर जाते हैं) एवं विभिन्न दशाओं में भागने लगते हैं। इस स्थिति में सदस्य किसी अन्य की परवाह किए बिना अपने जीवन को बचाने के लिए प्रयत्वशील रहते हैं। lxfBr भागती भीड़ में आतंक से बचकर भागते हुए भी संगठित रहती है। इस स्थिति में भीड़ कुछ देर तक वाह्य का सामना भी करती है एवं मजबूत प्रहार के कारण बिखर जाती है।

रेल टिकट खिड़की, राशन की दुकान, सिनेमा घरों की टिकट खिड़कियों में प्रायः टिकटों या राशन के कम होने का संदेश पर कर लोगों को एक दूसरों को धक्का देते हुए देखा जा सकता है। इस तरह की भीड़ को vftr भीड़ कहते हैं।

जब भीड़ के सदस्य अपनी भावनाओं को खुलकर प्रदर्शित करते हैं और उस अवसर को मनाते (या आनंद लेते है) हैं। इस तरह की भीड़ çnf'kr भीड़ कहलाती है। नर्तकों और गायकों के समूह में लड़कों एवं लडकियों को इस तरह की भीड़ में प्रायः झूमते हुए देखा जा सकता है।

vkØked भीड़ में सदस्य अत्यधिक भावनात्मक हो कर घृणा एवं चिढ़ से एक दूसरों को नुकसान पहुँचाने का कार्य करते हैं। इस तरह की भीड़ में आगजनी, लूट, हत्या, तोड़–फोड़, फाँसी देना, यौन उत्पीड़न एवं दंगे आदि में सम्मिलित रहते हैं। जब दो हिंसात्मक समूह एक दूसरे पर क्रूरता से आक्रमण करते हैं तो इस स्थिति को दंगा कहा जाता है। आतंकवादी भीड़ सरकारी एवं निजी सम्पत्तियों को आसानी से नुकसान पहुँचाती है तथा किसी रेल, बस या किसी भवन में आग लगा सकती है एवं बाजार एवं दुकानों को लूट सकती है हिंसक भीड़ एक प्रकार कि आक्रामक भीड़ है जो अपन उद्देश्य कि प्राप्ति के लिए किसी व्यक्ति को जान से मार देने की हद तक जा सकती है।

HkhM dh fo'ks"krk,¡

भीड़ की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ नीचे दी जा रही हैं :

1) ,d=hdj.k & भीड़ की यह सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। एक भीड़ में मनुष्यों का समूह किसी एक स्थान पर एकत्रित होता है तथा कुछ समय गुजरता है, यदि भीड़ के सदस्य निरन्तर यहाँ–वहाँ फिरते रहते हैं तो भीड़ नहीं बना सकते।

2) vfHkLiUnu & इसमें भीड़ के सदस्यों का ध्यान किसी घटना या उद्देश्य पर केन्द्रित रहता है। उदाहरण के लिए, किसी सड़क दुर्घटना में भीड़ दुर्घटना से चोटग्रस्त व्यक्ति के चारों ओर एकत्रित हो जाती है एवं चोटग्रस्त व्यक्ति पर ध्यान केन्द्रित करती है। सभी लोग यह जानने में रुचि लेते हैं कि यह घटना हुई और घटना कैसे घटित हुई।

3) vfLFkjrk & भीड़ की प्रकृति होती है। भीड़ तभी एक एकत्रित रहती है जब तक कि वह अभिस्पन्ददन है। जब अभिस्पन्दन खत्म होता है लोग छिन्न–भिन्न हो जाते हैं, और कोई भीड़ नहीं होती। यह खोजना कठिन है कि भीड़ का सदस्य कौन था क्योकि अत्यन्त अस्थिर प्रकृति की होती है। उदाहरण के लिए दृ तितर–बितर होने के बाद कई एकत्रित नहीं होता और वाहन चले जाते हैं तथा दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति सड़क पर ही रहता है। भीड़ कुछ घण्टे रह सकती है। लेकिन कुछ दिनों के लिए नहीं।

4) असंगठित – भीड़ के न तो पूर्व निश्चित उद्देश्य होते हैं ना ही पूर्व योजना होती है, न इसके कोई निश्चित साक्ष्य होते हैं और ना ही नेता होते हैं। भीड़ में कोई औपचारिकता नहीं होती है। इसका कोई संगठन नहीं होता। इसके निर्माण के कोई नियम एवं कानून नहीं होते। भीड़ का कोई प्रकार नहीं होता फिर भी इसको उकसाया जा सकता है।

5) समान उद्वेग – भीड़ के सदस्यों में एक सामान्य उद्वेग पाया जाता है। भीड़ के सभी सदस्य सामानय नारे में सक्रिय भाग लेते हैं।

6) पारस्परिक प्रभाव – भीड़ में व्यक्ति एक दूसरे के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। भीड़ का एक सदस्य दूसरे सदस्य को उत्तेजित देखकर उत्तेजित होता है। व्यक्ति एक दूसरे के व्यवहारों से प्रभावित होते हैं। इस पारस्परिक प्रभाव के कारण सुझाव ग्रहण करने की क्षमता अधिक होती है।

7) स्थानीय वितरण – कोई क्षेत्र जहाँ पर भीड़ फैली है, उसका निश्चित सीमा में तथा स्थानिक वितरण होना चाहिए। भीड़ एक निश्चित जगह तथा मैदान (क्षेत्र) में होती है। इसलिए हम लोगों को एक शहर में फैली हुई भीड़ नहीं कह सकते।

8) सामूहिक शक्ति – भीड़ के सदस्य अपने साथ बड़े स्तर पर लोग एकत्र देखकर सामूहिक शक्ति का अनुभव करते हैं क्योंकि भीड़ का एक सदस्य उत्तेजित अनुभव करता है जब दूसरे सदस्यों का उत्तेजित देखता है, और वह सदस्य सामूहिक शक्ति का अनुभव कर सकता है। भीड़ में व्यक्ति अपनी विशेष अस्तित्व का अनुभव नहीं करता और भीड़ के व्यवहार के अनुसार ही व्यवहार करता है। यह अक्सर पाया गया है कि भीड़ में शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति भी ताकतवर व्यक्ति को मारने के लिए आगे आ जाता है।

5-5 vl;r HkhM vkj vl;r HkhM dk eukfoKku

असंयत, भीड़ का एक उपचार है। जब एक भीड़ आक्रामक तथा हिंसक हो जाती है, उसे असंयत भीड़ कहते हैं। असंयत भीड़ ऐसे लोगों का समूह है जो आक्रामक प्रवृत्ति के हों, जो किसी असमानवीय व्यवहार नुकसान के कारण बनते हैं। असंयत भीड़ हत्या, आगजनी, बलात्कार, लूट, दंगों, तोड़फोड़, गाली–गलौज को करती है। असंयत भीड़ में अत्यधिक उत्तेजना का वातावरण होता है। असंयत भीड़ के सदस्य विवेकपूर्ण व्यवहार तथा तर्कशीलता खो बैठता है।

असंयत भीड़ में लोग सिर्फ उद्वेग के साथ व्यवहार करते हैं। उनमें उत्तेजना का आवेग अधिक हो सकता है। असंयत भीड़ में लोग तेज आवाज में चिल्लाते हैं, असंयत भीड़ में इसके सदस्य एक दूसरे की तरफ दौड़ते हैं तथा एक–दूसरे को गिराते हैं। वे असंयत कार्यवाहियाँ करने में तत्पर रहते हैं तथा दूसरों के व्यवहार की नकल करते हैं। कभी–कभी लोग अफवाहों के आधार पर एकत्रित हो जाते हैं। यदि एक दुकानदार एक छात्र को मारता है तो कुछ ही समय में बहुत से छात्र दुकान पर एकत्रित हो जाते हैं चाहे वह इस घटना से सम्बन्ध रखते (अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए) है या नहीं। असंयत भीड़ में इसके सदस्य तर्कशीलता का प्रयोग नहीं करते। असंयत भीड़ में सदस्य एक ही तरह का मार्ग अनुसार करते हैं। वे अन्य पार्टी के तर्कों को नहीं सुनते। वे तथ्यों तथा सत्य तक पहुँचने में रूचि नहीं दिखाते। कुछ लोग ही सूझ–बूझ विधि से असंयत भीड़ के सदस्यों को उनके क्रियाओं के कारणों से जागरूक कराने में सफल हो पाते हैं।

5-6 tuer % çHkko vkj lekt e çklfxdrk

जनमत समाज में लोगों का एक समान मत है, यद्यपि व्यक्ति विभिन्न मुद्दों तथा विषयों पर विभिन्न मत रखते हैं चाहे वह उनके साथ या समाज सम्बन्धित हों। इसमें वे एक बिन्दु पर समान समझौते करते हैं। वे समान तरह की भावना और अवधारणा का विकास विचारों, अन्तक्रियाओं, आलोचनाओं के लिए करते हैं। जनमत इस पूरी प्रक्रिया का परिणाम है।

जनमत समाज में व्यक्ति की आवश्यकता, उद्देश्य व सम्बन्धों का एक मित्र है। जनमत एक निश्चित समय में जनमत द्वारा रखा गया एक मत है। जनमत लोगों का विचार और न्याय जो कि समूदाय में क्रियान्वित किया जा रहा है। (वे एक निश्चित समय के लिए स्थिर और अच्छे निर्माण से किए जाते हैं)। जनमत लोगों द्वारा समाज के लिए क्रियाशील विभिन्नव्यक्तियों के मस्तिष्क का परिणाम है। जनमत लोगों द्वारा दिया गया एक विचार, जो कि एक निश्चित मुद्दे पर सामान्यतः प्रदर्शित किया जाता है। जनमत, मतों का रूप है जो किसी छोटे या बड़े समुदाय के लोगों द्वारा कोई निश्चित समय में किसी समस्या के लिए दिया जाता है। यह आवश्यक नहीं है कि जनमत समाज के सभी व्यक्तियों तथा बहुत से लोगों द्वारा बनाया मत हो, बल्कि बहुसंख्यक लोगों का मत होना चाहिए ।समुदाय तथा समूह के सदस्य इसे गम्भीरता से लेते हैं। जनमत समय तथा स्थिति के साथ परिवर्तित होता है, यह स्थिर नहीं है।

tuer dh fo'k"krk,¡

1) जनमत सदैव समाज के किसी सार्वजनिक विषय तथा मुद्दे से सम्बन्धित होता हे ना, कि व्यक्ति तथा समूह के अपने हित से होता है।

2) जनमत किसी विशेष समाज बहुसंख्यक लोगों द्वारा व्यापक रूप से स्वीकार किया हुआ मत है।

3) जनमत किसी व्यक्ति विशेष द्वारा निर्माण नहीं किया जाता। समाज के लोगों के द्वारा मिलकर कार्य करने का मत है।

4) जनमत सामाजिक प्रक्रिया की उपज होता है, और समाज में कई व्यक्तियों के अन्तःक्रिया वातालापों से उत्पन्न होता है।

5) यह आवश्यक नहीं कि जनमत तार्किकता पर आधारित हो। यह अतार्किक तथा तार्किक हो सकता है।

6) जनमत समाज के उन व्यक्तियों को भी प्रभावित करते हैं जो इससे सहमत नहीं है, क्योंकि ये बहुसंख्यक व्यक्तियों का मत है।

7) जनमत अक्सर सामाजिक संस्कृति का सूचक है। जनमत समाज में जनता के माम मान्य विश्वासों, आदर्शों मूल्यों, मान्यताओं, पूर्व धारणाओं पर आधारित होता है।

8) जनमत प्रायः समाज के प्रभुता सम्पन्न, साधन सम्पन्न, शक्ति सम्पन्न व्यक्तियों से प्रभावित होता है। इस प्रकार के व्यक्तियों के व्यक्तित्व समाज के लोगों के उद्देश्यों, हितो, समाज के लोगों के जीवन शैली को प्रभावित करते हैं।

9) कभी–कभी जनमत विशेष समय, स्थिति के मुद्दे तथा विशेष से सम्बन्धित होता है।

10) जनमत, जो किसी विशेष मुद्दे से सम्बन्धित होता है, लम्बे समय तक स्थिर नहीं रह सकता। इस प्रकार इसमें अस्थिरता की प्रवृत्ति पायी जाती है। वह समय तथा स्थिति के अनुसार परिवर्तित होता रहात है। वह समाज की आवश्यकताओं के अनुसार बदलता रहता है।

11) कभी–कभी जनमत व्यापक स्तर पर किसी मुद्दे तथा समस्या पर विचार–विमर्श द्वारा निर्मित होता है।

12) जनमत जो किसी समूदाय के रीति–रिवाजों, रूढ़िवादिता, मान्यताओं से सम्बन्धित होता है, अधिक स्थित होता है। प्रचार के तरीके, प्रक्षेपण प्रसार इसे गतिशील करते

lekt ij çHkko rFkk egRo

प्राचीन समय से ही जनमत समाज के लिए महत्वपूर्ण होते हैं इसका आधुनिक समाज में मुख्य स्थान है। जनमत छोटे समूह तथा समुदाय की तुलना में बड़े समाजों के लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान काल प्रजातंत्र का समय है और जनमत वर्तमान सामाजिक क्रम में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जनमत के अभाव में प्रजातंत्र प्रभावपूर्व कार्य नहीं कर सकता।

प्रजातंत्र तभी अर्थपूर्ण है जब वह जनमत को स्वीकार करें। जनमत की शक्ति इसकी स्वीकार्यता में ही निहित है। कोई भी कानून जो कि समाज के लिए बनाया जा रहा है, उसकी प्रभावशीलता लोगों की सहमति पर निर्भर कराती है। जनमत सरकार तथा लोगों की सहायता ही नहीं करता अपितु इसको नियंत्रित भी करता है। जनमत का महत्व शक्ति के नियंत्रण में निहित है। जनमत समाज के प्रतिष्ठित के व्यक्तियों की भावनाओं, संवेगों तथा क्रियाओं को भी नियंत्रित करता है। जनमत सरकार के लिए भी संबद्ध है क्यों कि जन एक जीवित सच्चाई है और इन जीवित सच्चाइयों को सरकार द्वारा ध्यान न देने की स्थिति में एक आपदा भी आ सकती है। सरकार को जनता के विभिन्न मददों पर सहमति के साथ कार्य करना चाहिए। किसी सरकार के लिए यह संकटमय हो सकता है, कि वे समाज के बड़े स्तर को अपने क्रियाओं से असम्बन्धित रखते हैं। किसी भी समाज में सरकार का प्रकार व्यक्तियों के जनमत पर निर्भर करता है।

जनमत सरकार की कार्यप्रणाली के मूल्यांकन तथा निष्पादन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सरकार द्वारा बनाए गए नियमों तथा कानूनों की कमियों को सिर्फ व्यक्तियों द्वारा जाँचा जा सकता है नकि सरकार द्वारा स्वयं । इस सम्बन्ध में, जनमत, समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। जनमत लोगों तथा सरकार के निर्णय तथा कार्य करने की प्रणाली को प्रभावित करता है और इसलिए इसका समाज में बहुत गहरा प्रभाव है।

जनमत व्यक्तियों तथा सरकार दोनों को शिक्षित करता है और समाज की समस्याओं को सुलझाने के लिए समान सहमति प्रदान करता है। जनमत व्यक्तियों के समाजीकरण तथा व्यवहार को प्रभावित करता है क्योंकि यह व्यवहार के व्यापक रूप से स्वीकृत प्रतिमानों को निर्मित करती है।

जनमत संस्थानों तथा व्यक्तियों को एक ऐसा अवसर प्रदान करता है कि वे समाज के अनुसार अपने कार्यप्रणाली को विकसित तथा निर्मित कर सकें। कोई भी व्यक्ति तथा संस्थान चाहे वह समाज में धार्मिक, शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से अस्तित्व में है, जनमत को उपेक्षित करके समान रूप से कार्य नहीं न कर सकते। जनमत की उपेक्षा किसी भी संस्थान तथा व्यक्ति उसके लक्ष्यों को प्राप्त । करने में असमर्थ बना सकता है तथा एक विशेष परिस्थिति में, ये आपदा या संकट काल का चरण भी बन सकता है, क्योंकि जनमत संस्थाओं, समूहों व्यक्तियों को उनकी सोच, कार्य करने के तरीके को आकार प्रदान करता है। इसका समाज के लिए महत्वपूर्ण स्थान है।

जनमत तानाशाह द्वारा समाज में शासन करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। जनता प्रजातंत्र में स्वतंत्रता का अधिक आनन्द उड़ाती है लेकिन तानाशाही में वे शासक के महत्वपूर्ण हस्तक्षेप के साथ अपनी कार्यप्रणाली में आदेशों का पालन करने के लिए बाध्य हैं।

5-7 çpkj% ç.kkyh vkj fufgrkFk

प्रचार शब्द प्रायः नकारात्मकता का बोध कराता हैः यह प्रायः राजनीतिज्ञों के लिए उल्लेखित किया जाता है जो झूठे वादे चुने जाने या अफवाह अपना खस्ता जाने के लिए करते हैं। वास्तव में कोई भी अभियान जो विश्वास जाने हेत अभियान जो विश्वास जाने हेत प्रयोग होता हैं ''प्रचार'' कहा जाता है। प्रचार साधारण रूप से एक कारण के सहयोग में सूचना को प्रसारित एवं संगठित करने से समझा जाता है। यह महत्वपूर्ण नहीं होता कि यह सूचना गलत है या सही, या कारण है या नहीं – यह सभी प्रचार है।

दिनों दिन आधनिक समाज में प्रचार का महत्व बढ़ता जा रहा है। यह दैनिक जीवन का अंग बन गया है। राजनेता, उद्योगपति, सरकारें, शिक्षाशास्त्री, आध्यात्मिक नेता, समाज सुधारक और विभिन्न व्यवसाय के विशेषतः सभी प्रचार को जनता तक पहुँचाने के लिए औजार की तरह प्रयोग करते हैं। प्रचार के माध्यम से वे व्यक्तियों को अपने पक्ष में करते हैं। प्रचार एक प्रणाली तथा प्रक्रिया हैं, जो कि समूहों तथा व्यक्तियों के विश्वासों, विचारों, अभिवृत्तियों में प्रेरित प्रणाली के द्वारा परिवर्तन लाते हैं। प्रचार पूर्व निश्चित कार्यों एवं विचारों को रोकने और परिवर्तित करने के लिए जानबूझ कर आयोजित एवं सुझावो द्वारा बदलाव लाना है। इसमें इससे सम्बन्धित मनोवैज्ञानिक प्रविधियाँ भी प्रयोग में लायी जाती है। व्यक्तियों अथवा समूहों द्वारा एक संगठित और व्यवस्थित प्रयत्न है कि जनमत की अभिवृत्ति सुझावों द्वारा यह किसी समूह के व्यक्ति की अभिवृत्ति को नियंत्रित करके उसके क्रियाओं में बदलाव लाया जाये। साधारणतः प्रचार व्यक्तियों के विचारों तथा अभिवृत्तियों को प्रभावित करने का प्रयास होता है। जिससे इच्छित दिशा में क्रिया कर सकें। प्रचार तर्क के तथ्यों नहीं होता है। प्रचार को निम्न भागों में बांट सकते हैं :

i) परिवर्तन प्रचार

ii) प्रभागीय प्रचार

iii) एकीकरण प्रचार

परिवर्तन प्रचार व्यक्तियों को समझाने का एक प्रयास है। इसमें उनके व्यवहार, अभिवृत्तियों, विचारों, मूल्यों में परिवर्तन प्रदान करना है। विज्ञापनों में इसका प्रयोग होता है। दूसरे प्रकार की प्रचार की नीति है "फूट डालो और राज करो'' इसका प्रयोग मनोविज्ञान के मूलतत्व अधिकतर राजनीतिक पार्टी एवं युद्ध के समय राष्ट्र द्वारा प्रयोग किया जाता है। तीसरे प्रकार के प्रचार में अभिवृत्तियों, मूल्यों के विचारों को एकीकरण तथा उनकी नैतिकता को

उठाने का प्रयास किया जाता है। इसका प्रयोग युद्ध के समय शान्ति तथा तारतम्यता लाने के लिए किया जाता है।

प्रचार हमेशा कुछ उद्देश्यों से प्रेरित होता है और ये उद्देश्य ऐसे व्यक्ति से सम्बन्धित होते हैं जिनके लिए प्रचार का प्रयोग किया जा रहा है। प्रचारकर्ता अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। विज्ञापन निर्माता और व्यवसायी प्रतीक शब्दों का प्रयोग अपने उत्पादन को प्रचारित करने के लिए करते हैं। राजनीतिक पार्टी या दल मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए प्रतीकों को रखते हैं। प्रचार में निर्देशन प्रमुख स्थान रचाता है। यह अनुभव किया गया है कि प्रचार यदि एक बार में महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है लेकिन लगातार प्रयोग करने पर और अधिक जानकारी होता है।

çpkj dh ç.kkfy;k

प्रचार में विभिन्न प्रणालियों को प्रयोग किया जाता है। प्रचारकर्ता प्रक्षेपण, प्रदर्शन, आख्या के द्वारा सुझावों को अपने समर्थन में कर सकते हैं। इन विधियों का प्रयोग विभिन्न तकनीकों तथा मीडिया द्वारा किया जाता है। प्रसिद्ध तकनीकें निम्न हैं :

1) नाम देने की तकनीक, 2) प्राण तकनीक, 3) चमकते हुये सामाजीकरण तकनीक, 4) हल विज्ञापन तकनीक, 5) आम जनता के नाम पर तकनीक, 6) स्थानान्तरण तकनीक 7) चौम्बर आफ हारर तकनीक, 8) बैण्डवैगन तकनीक।

नाम देना विधि में प्रचार करने के लिए प्रचारकर्ता प्रसिद्ध नामों का प्रयोग अपने समर्थकों तथा अनुयायियों के लिए करते हैं एवं अपने विरोधियों के लिये अप्रसिद्ध तथा कुख्यात नामों का प्रयोग करते है।

प्रमाणपत्र विधि में बड़ा आदमी का नाम और प्रचार सामग्री के साथ महान व्यक्तियों का नाम जोड़ते हैं। चमकते हुए सामाजीकरण प्रणाली में मैत्रीभाव एवं एकता आदि प्रयोग जनता की भावनाओं का अपने पक्ष में लेने के लिए किया जाता है। जनता के नाम पर विधि प्रचारकर्ता यह सबूत देने की कोशिश करते है कि वे भी समाज के अंग है। ऐसा व्यवहार करके लोगों को (दूसरों की तरह) आकर्षित करते हैं कि वे भी समाज के शुभचिंतक हैं। हर विज्ञापन विधि में प्रचारकर्ता सच्चाई को छुपा कर प्रचार करते हैं और जनता के सामने झूठे तथ्यों को उजागर करते हैं। इस विधि में धोखा तथा झूठ के तरीके का ज्यादात्तर प्रयोग किया जाता है। चुनावों के समय ज्यादात्तर राजनीतिक दन इस विधि का प्रयोग करते है। (chamber of hotors device) विधि में प्रचारकर्ता भय के संवेगों को उकसाने एवं लोगों को सुरक्षा की गारन्टी के लिए करते हैं। स्थानान्तरण योजना में प्रचारकर्ता अपने प्रचार को दैवीय ताकतों से जोड़ देता है ताकि उसे जनता का पक्ष मिले और Bnadwagom Device में प्रचारकर्ता यह जोर देता है कि जो वह कररहा है वही सब लोग कह रहे हैं।

इन तकनीकों का प्रयोग प्रसिद्ध मीडिया तथा साधन का प्रयोग निम्न प्रकार से करते हैं–

1) çl vkj çdk'ku

प्रचार का यह महत्वपूर्ण है। प्रकाशित सामग्री जैसे समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, इश्तहार, विज्ञापन पत्र पुस्तकें– पुस्तिकाएँ आदि का प्रयोग। प्रचारकर्ता जनता में अनुकूल प्रवृत्ति उत्पन्न करने के लिए करते हैं। अक्सर लोग अपनी पसन्द के अनुसार समाचार–पत्र को पढ़ते हैं। समाचार पत्र के विचारों के अनुसार अपनी अभिवृत्ति को विकसित कर लेते है। जनता प्रकाशित विषयों पर बोले गए विषयों से ज्यादा ध्यान केन्द्रित करती है।

2) cBdk vkj Hkk"k.k

बैठक में प्रचारकर्ता जनता के सामने अपने विचारों को प्रस्तुत करते है। यह प्रणाली और अधिक सफल होती है यदि घटक (बोलने वाले व्यक्ति) का व्यक्तित्व प्रभावशाली एवं आकर्षक हो। जनता वाचक के पूर्व विचारों को ध्यान में रखकर वार्ता के लिए एकत्रित होती है। प्रस्तुत करने की कला श्रोताओं के मस्तिष्क को प्रभावित करती है।

3) lkL—frd dk;Øe ukVd] fFk;Vj

नाटक, चलचित्र, सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा व्यक्ति किसी उत्पाद तथा विचार के बारे में अपना समर्थन प्रदर्शित करते हैं।

4) jsfM;k

आधुनिक समाज में रेडियों प्रचार का महत्वपूर्ण साधन है। यह कुछ सेकेण्ड में ही सूचनाओं को संसार भी में फैला देता है।

5) Vyhfotu

टेलीविजन आधुनिक समाज में प्रचार का प्रभावशाली साधन है। इसमें व्यक्ति एक ही समय पर देख तथा सुन सकता । यह अधिक मंहगा होने के कारण विकासशील देशों में इसका प्रयोग नहीं हो पाता और रेडियों का प्रयोग अधिक होता है।

6) fluek vkfM;k Hkh g

सिनेमा, दृश्य—श्रव्य, प्रचार का एक साधन है, यह प्रचार का सस्ता एवं शक्तिशाली साधन है। कम आय वर्ग के लोग इसका अधिक आनन्द लेते हैं।

7) ykmM Lihdkj

लाउड स्पीकर प्रत्यक्ष रूप से लोगों में प्रचार के लिए किया गया है जो कि अपने आवास में रह रहे हैं, अपने व्यवसाय में लगे या सड़क पर चल रहे हों।

8) çn'kZu ,oa tqyl

राजनीतिक दल अक्सर प्रदर्शन तथा जूलूस निकालते हैं ताकि जनता में अपने विचारों को प्रचारित किये जा सके।

9) vQokgs

अफवाहों के द्वारा लोग कुछ समय के लिए आसानी से प्रभावित किए जा सकते हैं। जनता के विचारों को संकट के समय परिवर्तन करना इसका मुख्य परिणाम है।

10) uR; vkj laxhr leg

समाज में प्रचार के साधन के लिए ,नृत्य, संगीत समूह, संगीत आयोजन, कठपुतली नाटक, दीवारों पर लिखना, होर्डिंग, पोस्टर, वाचक, पारम्परिक विश्वास या कहानियाँ, जादूई कार्यक्रम, सर्कस आदि का प्रयोग किया जाता है।

fufgrkFk

प्रचार एक प्रणाली है, इसका प्रयोग निश्चित राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक संस्थानों के समर्थन में लोगों के सुझावों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है या विचारों तथा उत्पादों के लिए भी प्रयोग होता है। प्रचार किसी व्यक्ति के विचारों के प्रति

लोगों को जागरूक बना सकता है एवं किसी प्रतिष्ठान के उत्पादों के बारे में लोगों को बताने के लिए भी प्रयोग किया जाता है। कभी–कभी प्रचार लोगों को हानिकारक सुझावों को ग्रहण करने में सहायता देता है। शक्तिशाली प्रचार लोगों के मन–मस्तिष्क को किसी निर्णय, प्रत्याक्षीकरण के लिए भ्रमित कर देता है। कभी–कभी लोग इसकी चकाचौंध से प्रभावित होते हैं एवं अस्वीकृत विचारों को ग्रहण कर लेते हैं।

ck/k ç'u III

fVIi.kh % क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) भीड़ की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) समाज में जनमत की प्रासंगिकता को कुछ पंक्तियों में व्यक्त कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) मीडिया में प्रचार के तीन प्रमुख साधनों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5-8 lkekftd dk;lrkvk d fy, lkekftd eukfoKku dh çklfxdrk vkj egRo

अब तक आप सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति एवं कार्यों को जान चुके होंगे। अब हम सामाजिक मनोविज्ञान का सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए महत्व तथा सम्बन्ध की चर्चा करेंगे। इसके लिए, इकाई 1 में दिए गए समाज कार्य और मनोविज्ञान के सम्बन्ध को पुनः याद कीजिए, जैसा कि जानते हैं – सामाजिक कार्यकर्ता व्यक्ति तथा समूह की मनोसामाजिक एवं मनोलैंगिक समस्याओं को सुलझाने के लिए समाज कार्य की विभिन्न

विधियों का प्रयोग व्यावहारिक रूप से या क्षेत्र में प्रयोग करके करते हैं। कभी–कभी समाज कार्य का उद्देश्य, व्यक्ति, समूह तथा समूदाय का सामाजिक आर्थिक विकास करना भी होता है। समाज कार्य व्यक्तियों, समूहों को उनके वातावरण के साथ सकारात्मक समायोजन करने में सहायता देता है। यहाँ वातावरण में मानवीय, सामाजिक वातावरण, भौतिक वातावरण, (मनोवैज्ञानिक) मनो–सामाजिक और पारिस्थिकीय वातावरण भी शामिल होता है।

समाज कार्यकर्ता ऐसे कारणों को खोजता है जो कि विशेष सामाजिक परिस्थितियों में मानव के व्यवहार को विशेष रूप से प्रभावित करते हैं। सामाजिक मनोवैज्ञानिक अपनी क्रियाओं, कार्यों सामाजिक स्थितियों में अपने सेवार्थी के व्यवहार के प्रतिमानों, विचारों तथा समस्या को अपने दिमाग में ध्यान से रखना चाहिए। जहाँ की समस्या का निदान और उपचार करता है। सेवार्थी के विचार और व्यवहार कई बार निदान और उपचार को प्रभावित करते हैं तक सामाजिक कार्यकर्ता को सेवार्थी के विचार, व्यवहार अक्सर निदान की प्रक्रिया तथा उपचार को प्रभावित करता है। और सामाजिक कार्यकर्त्ता अपने उपचार तथा निदान की प्रक्रिया में उसके अनुसार परिवर्तन करना पड़ता है।

- सेवार्थी के साक्षात्कार के समय, सामाजिक कार्यकर्ता को इस बात का ध्यान रखना चाहिए क उस समय कोई अन्य व्यक्ति यहाँ उपस्थित न हो अन्यथा सेवार्थी को सत्य तथा वास्तविकता बताने में संकोच हो सकता है। सामाजिक तथा भौतिक तथा सामाजिक वातावरण में निजीत्व ऐसा वातावरण बनाता है कि सेवार्थी धनिष्ठता एवं गहराई से अपनी बाते बता सकता है।

- समूह के क्रियाकलापों में, समूह सदस्य जब व्यस्त होते हैं एवं इस समय यदि कोई बाहरी व्यक्ति प्रवेश करता है तो समूह की क्रियाएँ कछ समय के लिए बाधित हो जाती हैं तब सामाजिक कार्यकर्ता के नए आगन्तुक को समूह में समायोजित करने के लिए प्रबन्ध करना पड़ता है।

- नेता का अत्यधिक बड़प्पन या अफसरी समूह के सौहार्द तथा स्नेहपूर्ण वातावरण को प्रभावित करता है। सामाजिक कार्यकर्ता को समूह की उचित कार्यप्रणाली के लिए इस प्रवृत्ति का, परिस्थिति में सावधानी बरतनी चाहिए। सामुदायिक कार्य के नियोजन और कार्य प्रणाली इससे प्रभावित हो सकती है। अतः इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

- स्कूल (विद्यालय) परिस्थिति क्षेत्र में भगोड़े छात्र को देखने के लिए सामाजिक कार्यकर्ता को उसके समूह के व्यवहार एवं प्रतिक्रियाओं को एवं विद्यालय के अध्यापकों और अधिकारियों का व्यवहार तथा प्रतिक्रियओं का भी ध्यान रखना चाहिए। छात्र की तरफ उनका व्यवहार उसके भगोडेपन का कारण हो सकता है। विद्यालय का वातवरण, जिससे छात्र असुविधाजनक अनुभव करता है, उसकी कक्षाओं में अनुपस्थिति का कारण हो सकता है।

- चिकित्सालय और चिकित्सक (डाक्टर) का व्यवहार भी औषधीय सलाह के प्रति रोगी की प्रतिक्रिया को प्रभावित करता है। उनका रोगी की बीमारी के कारणों को सुनने में अधीरता तथा रूखा व्यवहार भी रोगी की औषधीय सुझावों तथा सलाह को अनुसरण करने में उसकी अनिच्छा का कारण हो सकता है। सेवार्थी आवश्यक औषधीय निर्देशों को उपेक्षित या अनसुना कर सकता है। सामाजिक कार्यकर्ता को चिकित्सीय और अधि चिकित्सकीय स्टाफ के व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए कि वे रोगी एवं उसके परिवार के साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं ताकि वे लोग चिकित्सक कर्मियों के प्रति अधिक सहयोगात्मक व्यवहार रख सकें।

- औद्योगिक क्षेत्र में सामाजिक कार्यकर्ता को मजदूरों को उनके उच्च अधिकारियों एवं मालिकों के साथ समायोजन करने में सहायता करने के लिए, उनके व्यवहार एवं विचारों को ध्यान में रखना चाहिए।
- परिवार के क्षेत्र में, सामाजिक कार्यकर्ता को सेवार्थी के अभिभावक, उसके भाई–बहनों, अन्य सदस्यों के व्यवहारों तथा विचारों पर ध्यान केन्द्रित चाहिए क्योंकि वे सभी सेवार्थी के व्यवहारों तथा विचारों को प्रभावित करते हैं।
- आयु लिंग, जाति, वर्ग, धर्म, शिक्षा, व्यवसाय, आय मानसिक एवं शारीरिक योग्यता, परिस्थिति जन्य एवं भौतिक परिवर्तन सामाजिक–सांस्कृति मूल्यों और आदर्शों में विभिन्नता व्यक्ति के विचारों एवं व्यवहारों को प्रभावित करता है।
- इस प्रकार, इन सभी का सामाजिक कार्यकर्त्ता के सेवार्थी को उपचार, निदान व नियोजन के समय ध्यान में रखना चाहिए।
- प्रचार, जनमत, एवं भीड़ आदि भी व्यक्ति के व्यवहार के प्रतिमानों, विचारों को प्रभावित करते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान के इन सभी तत्वों को समाजकार्य के व्यवहार के समय ध्यान रखना चाहिए।

ck/k ç'u IV

fVIi.kh % क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समाज कार्यकर्ताओं के लिए समाज मनोविज्ञान की प्रासंगिकता और महत्व का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5-9 lkjka'k

सामाजिक मनोविज्ञान किसी उपस्थिति को समझने, व्याख्या करने एवं भविष्यवाणी करने का प्रयास है, कि व्यक्ति का एक समूह परिस्थितिजन्य कारक व्यक्ति के विचारों तथा व्यवहारों को कैसे प्रभावित करते हैं।

एक सामाजिक कार्यकर्ता को सेवार्थी के व्यवहारों तथा विचारों पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि ये उसके उपचार तथा निदान को प्रभावित करते हैं। इस इकाई में हमने सामाजिक मनोविज्ञान के कुछ महत्वपूर्ण आवश्यक अवधारणाओं का अध्ययन किया जो कि कार्य व्यवहार के लिए आवश्यक हैं इनको नीचे इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत है।

नेतृत्व, एक प्रक्रिया है जो किसी संगठन को उसके पूर्व निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में प्रभावित करती है। नेता की प्रमुख विशेषतएँ, प्रभावपूर्णता, अनिश्चितता, सामाजिक दूरी, कुशग्रता, मौखिक, कुशाग्रता एवं संगठन के लक्ष्य के प्रति समर्पित होना चाहिए।

भीड़ निश्चित व्यक्तियों को एक समाज निश्चित केन्द्र पर आकार एकत्रित होना या ध्यान केन्द्रित करना है। भीड़ को दो भागों में बाँटा गया है, 1) स्रोता भीड़, एकत्रीकरण, अभिस्पन्दन, अस्थिरता, समान संवेग एवं स्थानिक वितरण आदि भीड़ की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

असंयत भीड़, भीड़ का एक प्रकार है। जब भीड़ असंयत हो जाती है उसे असंयत भीड़ कहते हैं। असंयत भीड़ में लोग संवेगों के साथ व्यव्हार करते हैं, वे उत्तेजित तथा चिड़चिड़े हो जाते हैं।

जनमत समाज के लोगों का समान मत है, यह समाज के बहसंख्यक लोगों का मत है। जनमत में स्थिरता नहीं होती, यह समय तथा परिस्थिति के अनेसार बदलता रहता है। एक प्रजातांत्रिक समाज में जनमत का महत्वपूर्ण स्थान है। जनमत व्यक्तियों, समूहों तथा संस्थानों के विचारों तथा क्रियाओं को आकार प्रदान करने में प्रभावित करता है।

प्रक्रिया और विधि, जो व्यक्तियों, समूहों के अभिवृत्तियों, विश्वासों, विचारों में परिवर्तन करता है, जो प्रचार का माध्यम है, प्रचार को तीन प्रमुख समूहों में विभाजित किया गया है – 1) परिवर्तन करना विधि 2) प्रभागीयकरण विधि 3) एकीकरण विधि। आधुनिक संचार में प्रचार के अनेक माध्यम व साधन हैं, रेडिया, टेलीविजन, सिनेमा,समाचार, पत्र लाउड स्पीकर, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रदर्शन एवं जुलूस प्रचार के लोकप्रिय माध्यम हैं।

5-10 'kCnkoyh

ldkjkRedrk	:	अधिकार एवं दावे को व्यवस्थित करना।
vfHkofRr	:	व्यक्ति व वस्तु के प्रति तरीका।
lkrk	%	एकत्रित लोग जो सुने या जाँच करें।
0;ogkj	%	किसी व्यक्ति की क्रियाएँ व कार्य।
Kku	%	जानना, ग्रहण करना, सोचना, न्याय करना।
fuf'prrk	%	किसी समूह में अन्य के द्वारा सहमति का व्यवहार।
çtkrr=	%	सरकार का एक प्रकार, जिसमें जनता के हाथों सारी शक्ति होती है, जनता इसका प्रयोग स्वतंत्र चुनाव प्रणाली के अन्तर्गत चुने प्रत्याशी द्वारा करते हैं।
lk/ku ;k efDr	%	एक नियोजित व्यक्ति जो राज्यों एवं सम्बन्धों में समझौता कराने योग्य हो ।
ikfjfLFkfrdh	%	जीव विज्ञान की एक शाखा जो वातावरण एवं जन्तुओं के सम्बन्धों को बताती है।
lo|ox	%	जागृतता की एक अवस्था जिसमें व्यक्ति आनन्द दुःख, डर, घृणा आदि को महसूस करता है।
ufrdrk	%	सदाचार से सम्बन्धित
mRrstuk	%	संवेगों में तीव्रता
vkuqoa'kd	%	माता–पिता से प्राप्त आनुवंशिक गुण जो किसी एक व्यक्ति में आता है वह आनुवंशिक गुण में परिवर्तन।

in lkiku	%	किसी वस्तु व लोगों की क्रमबद्धता की प्रणाली।
cf)eRrk	%	समझने की क्षमता व अर्थों व तथ्यों को समझने की अभिरूचि।
rkuk'kkgh	%	एक व्यक्ति जो सारी शक्तियों को अपने पास रखता है तथा बिना किसी सरकारी नियंत्रण की व्यवस्था और जनता की सहमति के बिना शक्तियों को क्रियान्वित करता है
rdl	%	तार्किकता व कारणों को जानना।
jktrU=	%	एक सरकार और राज्य वास्तव में जिसके हाथ में उच्च शक्तियाँ होती हैं तथा एक व्यक्ति जो कि आनुवंशिकता के द्वारा जो राजा एवं रानी द्वारा प्राप्त सहायक स्थान ग्रहण किये हुए है।
rkfdldrk	%	तथ्यों व सूचनाओं से प्राप्त निष्कर्ष तथा उपसंहार करने की प्रक्रिया।
foyEcu	%	प्रक्रिया व क्रिया की प्रगति, सम्बन्धित व रहने वाली।
LFkkfud	%	अंतरिक्ष से स्थापित, सम्बन्धित वह रहने वाली।
lrr	%	व्यवस्थित करने योग्य।
:f<okfnrk	:	व्यक्तियों का एक समूह जो सरल, अनिश्चित, अत्यधिक मूल्यांकित, विचार रखते हैं।
ijorlu'khy	%	अस्थायी, गुजरा हुआ, रूके लेकिन कम समय
pj	%	बदलने, परिवर्तित करने योग्य
l>ko	%	प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति, संस्था किसी विशेष तरीके सीधे क्रिया करने के लिए प्रेरित होती है वह बिना किसी दबाव, अधिकार, निदेशन निर्देशन के बिना किसी तर्क के अभिप्रेरित होते हैं।
ç{ki.k	%	विचार करने की क्रिया व एक विचार व पसंद से सम्बन्धित किसी एक वास्तविक उद्देश्य के प्रति पसन्द।

5-11 dN mi;kxh iLrd

बैरोन रॉबर्ट ए. डॉ. बिरनि (2001), *सोशल साइकॉजी, प्रेटिश हॉल ऑफ इण्डिया,* प्रा. लि. 8वाँ संस्करण, नई दिल्ली।

गेलिना एनडरयिवा (1990), *सोशल साइकोलॉजी,* प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को।

क्रेचे, डेर्ड एंड आदर्स (1983), *इनडिविजल इन सोसाइटी* एक टेक्स्ट बुक ऑफ सोशल साइकॉलोजी एम पी एक हिल इंटरनेशनल बुक कम्पनी टोक्यो।

पालीवाल सुप्रीथी (2002), *सोशल साइकॉलोजी,* आर.बी.एस पब्लिशर्स, जयपुर।

5-12 ck/k ç'uk d mÙkj

ck/k ç'u I

1) सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों के उन व्यवहारों का अध्ययन है जो अन्य व्यक्तियों अथवा सामाजिक दशाओं के संदर्भ में होता है। मानव का व्यवहार सदैव अन्य व्यक्तियों या सामाजिक दशाओं में ही होता है क्योंकि व्यक्ति शून्य में कोई व्यवहार नहीं करता है। इस प्रकार सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति के हर व्यवहार का अध्ययन हैं

ck/k ç'u II

1) i) बौद्धिक योग्यता : नेता में साधारण समूह के सदस्यों की अपेक्षा अधिक बौद्धिक क्षमता होती है।

ii) प्रभावशीलता : नेता दूसरे व्यक्तियों तथा उनके व्यवहार को प्रभावित करता है।

iii) समायोजन : नेता दूसरों की अपेक्षा समूह में समायोजन की अधिक सक्षम है।

iv) सामाजिक दूरी : नेता समूह के सदस्यों के साथ घनिष्ठता व जनदीकी नहीं रखता है। वह समूह के साथ सामाजिक, मनोवैज्ञानिक दूरी रखता है।

v) संवेगात्मक वयस्कता : नेता संवेगात्मक स्थिरता व वयस्कता रखता है। वह संतुलित व्यवहार करता है, वह अधिक भावनात्मक व्यक्ति नहीं होता है।

vi) मौखिक सकारात्मकता : नेता में प्रभावशाली भाषण की क्षमता होती है। वह अपने विचारों तथा मतों के प्रति आत्मविश्वासी होता है।

vii) संगठन के लक्ष्य के प्रति तरह समर्पण से समर्पित होता है। : नेता संगठन अपने संगठन के लक्ष्यों के प्रति पूरी वह मेहनत करता है व उद्देश्यों व बलिदानों के प्रति समर्पित होता है।

2) i) fu;ktd rF; uhfr fuekZ.kdrkZ d :i e % नेता समूह के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उपयुक्त नीति तथा योजना बनाता है।

ii) ,d vf/k'kklh d :i e % नेता संगन के योजना व नीतियों की जिम्मेदारी अपने कंधों पर रखता है।

iii) ,d fo'k"kK d :i e % नेता समूह को विशेषज्ञ के रूप में नीतियों की जिम्मेदारी अपने कंधों पर रखता है।

iv) ,d mnkgj.kdrkZ d :i e % नेता अक्सर समूह के सदस्यों का व्यवहार का आदर्श बनता है। वह कार्य करने का मार्ग व प्रक्रिया बताता है।

v) cfy dk cdjk % नेता निराश व दिग्भ्रमित समूह को गुस्से का निशाना बनता बन है।

ck/k ç'u **III**

1) **i)** ,d=hdj.k % भीड़ में लोग बड़ी संख्या में एक जगह या स्थान पर एकत्रित होते हैं। वे वहाँ कुछ समय के लिए ठहरते हैं।

ii) vfHkLiUnu % भीड़ के सदस्य अपने आपको एक घटना व वस्तु के केन्द्र बिन्दु पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं।

iii) vfLFkjrk % अस्थिरता भीड़ की प्रकृति है। अभिस्पन्दन की प्रक्रिया तक ही भीड़ एकत्रित रहती है।

iv) leku m}sx % भीड़ में बहुसंख्यक सदस्य समान उद्वेग रखते है।

v) LFkkfud forj.k % क्षेत्र जिसमें भीड़ का विस्तार, प्रसार होता है वह स्थानिक वितरण में तथा सीमा में होता है।

2) जनमत, भावनाओं, संवेगों व क्रियाओं को प्रभावित करता है। प्रजातांत्रिक समाज में शासक की क्रियाओं के प्रति लोग सहमत होते हैं। शक्ति के नियंत्रण में जनमत का महत्व सरकार तथा लोगों को शिक्षित करता है कि वे विचारों तथा क्रियाओं के समान रूप से सहमत हो और कार्य करें। किसी समाज में सरकार के प्रकार जनमत पर निर्भर करते हैं। जनमत व्यक्तियों के सामाजीकरण, उसे सोचने की शक्ति तथा व्यवहार के तरीकों को प्रभावित करता है।

3) **i)** efæ ehfM;k % समाचार पत्रों के द्वारा जनता में विशेष प्रकार की प्रवृत्ति का निर्माण करते हैं। वे अपने को प्राप्त करने के लिए अपनी बनायी वस्तुओं पर लोगों का ध्यान व आकर्षण करते हैं। समाचार पत्र प्रकार का मुख माध्यम है क्योकि यह बड़ी संख्या में लोगों को प्रभावित करता है। लोगों द्वारा बोले गए विषयों की अपेक्षा प्रकाशित विषय पर लोग अधिक विश्वास करते हैं।

ii) jsfM;k % आधुनिक समाज में रेडियों प्रचार का शक्तिशाली माध्यम है। यह कुछ ही सेकेण्ड में विचारों तथा समाचारों को पूरी दुनिया में फैला देता है। लोग इसका प्रयोग मनोरंजन तथा सूचनाओं के लिए करते हैं।

iii) Vyhfotu % कार्यक्रम व प्रदर्शन जो कि टेलीविजन पर किये जाते हैं, प्रचार ऋऋऋ के बहुत आधुनिक व प्रभावशाली साधन हैं। टेलीविजन में व्यक्ति एक ही समय चित्र देख व सुन सकता है।

ck/k ç'u **IV**

1) सामाजिक कार्यकर्ता समाज कार्य व्यवसाय की विभिन्न विधियों का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्तियों की सामाजिक–आर्थिक, मनोदैहिक समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रयोग करता है।

समाज कार्य व्यवसाय व्यक्ति तथ्य समूह को उनके वातावरण के साथ सकारात्मक समायोजन करने में सहायता पहुँचाता है। सामाजिक मनोविज्ञान को प्रभावित करते हैं। सामाजिक कार्यकर्ता प्रभावित करने वाले कारकों को ध्यान में रखकर अपने कार्य की प्रक्रिया का निर्माण करता है। सामाजिक कार्यकर्ता सेवार्थी के निदान तथा उपचार के दौरान सेवार्थी की विशेष परिस्थितियाँ एवं व्यवहार व मानसिक विचारों को मस्तिष्क में रखता है। सेवार्थी के साक्षात्कार के समय सामाजिक कार्यकर्ता को उस

समय किसी अन्य व्यक्ति की अनावश्यक उपस्थिति को भी ध्यान में रखना चाहिए, इस प्रकार की स्थिति में अन्य की उपस्थिति में सेवार्थी को अपने विचारों, तथ्यों, सत्य बताने में संकोच का अनुभव हो सकता है, जिससे अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में विभिन्न समहों की प्रक्रिया और नेतत्व के तरीकों को भी समझना चाहिए ताकि वह कल्याण कार्यक्रमों को क्रियान्वित, सरलीकरण तथा शामिल कर सकें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY